

वेदशास्त्रमाला

वेदशास्त्रमुक्तमाला

पुरातनमाला
वेदशास्त्र

आशुभकरकाशि
1.692
ASHA ARCHIVES

३६
१

१ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ अथ गुह्यतन्त्रमालालिख्यते ॥ ॥ नमो हनिनकुल्यहिलकृष्णगुह्यः ॥
 ॥ यीशुवर्षिवनम्बुविष्टपपनर्थविंदविविचूतास्तथा हृदययादिवाकनेकनेरधुषीवदोषा
 यहा ॥ कालिदीववत्प्रसादजननीगैरगवशूलिप्रिया ॥ वक्रदीपिकनीयनाकृतिनिवदोषीः
 वनानावसाः ॥ हनस्युवक्षयाताहनिताचस्वरावनः ॥ हननसर्वनागार्थनशकाहनीनकीः ॥
 जीवन्तिकापूतनिकाचामृताविजयातया ॥ नोहिदीवतकीसफरुदरिनाहनीनकीः ॥ जीवन्तिजीव
 नायागत्यावनात्पूतनामता ॥ सुधावदमृताहृयाविजयाविजयप्रदाः ॥ नृणां सरयदायस्मादरया
 नत्पकीर्तिता ॥ नोहिदीगुगुह्यानाहावेननाचनकीमताः ॥ जीवन्तिस्वर्धुवर्धुतापूतनास्तिमरीमता ॥

माला
९

अमृतादिदलाशका विजया शुं व नू पि क्षी ॥ ये वी गी त्वर या ह या म मृ ता व रु गु ना हि क्षी ॥ अ गी तु
व र की रू या क र्म ता सा मि हा च न ॥ सर्व ग र ग षू जी व की प्र ल य पू त ना हि ता ॥ सू द्य र्थ म मृ ता प्रा का
वि ज या सर्व गी ग द न् ॥ अ द ग र ग र या ष क्ता ना हि क्षी वृ क्ष ना हि क्षी ॥ व र की वृ क्ष या र ग स्या त्स क धः
गु प्र की र्ति ताः ॥ ह री त की ये च न सा ले व क्ष त्व ना क्ता ॥ नू की सु दी य नी मे धा स्वा द्र या क न सो य नी ॥
स ना वृ द्धि प्र दा यू षा च रू ष्या वृ ह क्षी ल य ॥ स्वा ष का ष प्र मे हा र्श कृ ष र ष र था द न रु मी न् ॥ वे स र्प्यः
गृ ह क्षी दा ष वि व न्ध वि ष म द्वा ना न् ॥ गु ल्मा ध्या न् वृ क्ष कृ दि हि ध्या कं उ द दा म या न् ॥ का म लो ष ल सा
ना ह ली हा नी चो य क र्ष नि ॥ अ न्न स्वा दा न ष म नी यि रू प्री त्यो द नि क नः ॥ क टीः क षा या क र्ष द्वा रिः

गु० २
२

दास ग्रीह नील की ॥ मङ्गा शिरीशु मधु वस मङ्गा शिरीशु मङ्गा ॥ त्वगा शिरीशु कटुकै निकाई वं गा शिरीशु ॥
मङ्गा ॥ अस्या शिरीशु कषाय नु वस मङ्गा कर्म नीषिधः ॥ नवा सिग्धा यना दृष्टा गुर्वी दिका च यीरु सि ॥ नि
मङ्गा सा प्रशस्त्या कथिता लिगुष्ट प्रदा ॥ चर्विता वर्धयत्यग्निं यधिता मल सा धिनी ॥ स्विन्ना सै ग्रा हि
क्षी प्राका नृषु यथा शिदा घनू ॥ उन्मीलिनी वृद्धि वलं द्रिया क्षी निमीलिनी यिरुक कानि लानी ॥ वि
मृसिनी मृग सङ्ग न्मलानी हवीर की स्यात्स हरीरुनेन ॥ अन्ने यान कृती दायी न वा न यिरुक कानि हवान्
॥ हवीर की हरेत्या सूरु क स्या य निशो कितो ॥ ॥ ग्रीष्म गुल्फ गुज म सै न्ध व यूती मद्या वने श्वी व
॥ गुल्फ सूरु वया स न श म ह्या सूरु यी गुषा वा ग म ॥ यिष्यः ल्या सि शिरी व स न स मय को ड ह सै यो कितो ॥

माला
२

राजन्त्याप्यहनीतकीमिवनूतानः स्थितुर्ननशत्रुवः॥लवरक्षनकरुहकिपिरुहकिस्तुषार्कना॥द्युत
नवानजाननागमसर्वनागगुजान्वितान्॥अधितिस्विन्नःपतिहीनकजःवृद्धःकुर्याल्लघनकर्षितः
च॥पिरुधिकागर्हवनीचनानीविमूकनकस्त्वरुयीनसर्वेत्॥**॥अथविलीतकगुप्तः॥**
विलीतकीस्वादपाककषायकरुपिरुनूत्॥उद्वीर्यहिमस्यर्षिरुदनकाशनाशनै॥वृद्धेनग्रहिर्नकः
स्थितुर्वेद्यनाशनै॥विलीतमज्जुर्गुहिकरुवागहनीलघूः॥कषायामदरुघाथधात्रीमज्जाः
पित्तगुप्तः॥**॥अथल्लगुप्तः॥**हनीतकीसर्पेधात्रीरुलेकिरुविराषनः॥पिरुनकप्रमहघ्नी
पनेवृष्येनसायने॥हनिवार्तनदल्लत्वात्करुसाधूर्यरुष्यनः॥पिरुवृद्धकषायत्वादवैकिनविषय्य

गु० ३
३

यः॥ ध्यात्वा न्निदोषहन्ति नृन्नेवमर्कितं ॥ मर्गं स कुरु वना वसा इका नसा द नधि हनुना ॥ यस्य य
त्यरुलस्य हवीर्यं कवतिया दृष्टं ॥ तस्य नस्येव वीर्यं स कुरु नमपि निर्दिष्टं ॥ ॥ अथ श्रुतिः ॥
रुलाल दक्षगुणः ॥ अथ येका या जनीया द्वावेव तु विरीतको ॥ ध्यात्वा रुलानि चेत्यानि धिरुलस्यै प्रकी
र्तिताः ॥ धिरुला कुरु धिर्गुणी महकुरु हना सना ॥ चक्रव्यादीयनी चैव विषम दानना शिनी ॥ ॥
अथ शुद्धिगुणः ॥ शुद्धी नृन्वा सवान् घ्राया चनी कदूकालघ्नः ॥ त्रिरग्ना सधना पाक कुरु वात विवन्ध
नृन् ॥ दृष्यत्वर्थावमिस्वा ॥ पूलका शददा सया ॥ हन्ति श्लीपद रक्षा र्क्षार्क्षाना हा द नसा नृनान् ॥ अ
थ यगुण रयिष्टे मायीर्षे निरग्ना ध्ययन् ॥ सैगुक्राति सलै ननु ग्रहि शुद्धा दशो यथा ॥ विवन्ध रदि

माला
३

नीया तु सा कथं अहि क्षीर वेत् ॥ अकिर्विवन्ध रुद स्या यतानमल पाकने ॥ **॥ अथ इक गुहः ॥**
आ इक नागत्र गुहं रुदने दीपने गुहः ॥ आ इक कटु की कु सुत्र को वात क रुपाय हः ॥ आ इक स्यात्सल वः
क्षीर यैव क्रि प्र दीपने ॥ वात प्र काय मने पादने ॥ अथ हन्यने ॥ ला रुना रय सदा पथ्य ल वक्ष इक लोः
जने ॥ अग्नि से दीपने दृश्ये व चो रु दि क रुपाय हः ॥ अति दृष्य करु हने पक्व पिरु हने सने ॥ कृष्टे पाश्चा मय
रु कुत्र क पिरु वरु क्षा हने ॥ दाह नि दा घ न दाने व पूजित मा इक ॥ **॥ अथ पियली गुहः ॥** पिय
ली दीपनी वृष्या स्वा दु पा क न सा यनी ॥ अ तु सु कटु का तिग्धा करु वात हा वा लघुः ॥ पिरु ला नी चे ना हः
कि स्वा श कार ॥ अ द न क नान् ॥ कृष्ट प्र म ह गु ल्मा र्शः ॥ श्री ह ॥ नान् म सा नू नान् ॥ आ डी करु प्र दा तिग्धा शी त

गु० २०

४

लामधूनागुनः॥ पिरुप्रथमनीसानुशुकापिरुप्रकापिनी॥ पियलीमधूसैयूकामदःकरुविनासि
नी॥ **पुनः** सकाशकनीहानीदृष्यमध्वानिवर्धिनी॥ जीर्णुदनेमिसादवशस्यनगुहपियली॥ काशजी
र्णुनूचिपुनःसहत्यालुहमिनागनरु॥ **द्विगुह** पियलीचूर्णुशुशालिषजामनः॥ **॥ अथमः**
त्रिवस्यगुहः॥ मत्रिचैकदूकेलीहृदीयनेकरुवातजिनु॥ **उचै** पिरुहनेनूदीपुनःसकाशकनीजय
न॥ तदाद्रैमधूनेपाकनात्युहैकदूकेगुनः॥ किंचिनीरुगुहैरुप्रथमकस्यादपिरुली॥ **॥**
अथपुनःसगुहः॥ **॥** विष्वयकल्यामत्रिचैःत्युषर्षसमूदाहर्ण॥ त्युषर्षदीयनेहकिपुनःसका
शित्वगामयान्॥ गुल्लिहकरुहैत्यमदशीयदयीनसान्॥ **॥ अथपियलीनूलस्यगुहः॥**

माला

४

दीपनैपिष्यलीमूलैकद्वयं पाचनैलघुः ॥ नृदंयिरुक्कनैरुदिकरुवागोदनायहं ॥ आनाहलीहगुल्मघ्नं
कृमिश्वासदयायहं ॥ ॥ अथ चतुर्गुणप्रदलक्षगुणः ॥ ॥ अथ सर्वसकलमूलैर्मृदिनचतु

दूषर्षी॥ व्योषस्येव गुह्यप्रकाशिरासाश्चतुर्दूषरक्ष॥ ॥ अथ वक्ष्ये स्य गुह्यः॥ ॥ पिप्पलीमूलव

रुस्या विरहया कुञ्जवायहं ॥ चव्यपूष्यगनश्चासकाशकयविनाशनं ॥ धरुवृद्धिकनैवत्युत्तमशूलकः
मिप्रनूत ॥ ॥ अथ गऊपिप्यलिगुप्तः ॥ ॥ चव्यस्यैवरुलैलीकः रुतव्यागऊपिप्यली ॥ गऊक

साकदूर्वाकराभानू। दक्षिणवर्द्धनी ॥ २४ ॥ निहन्ति मीसा वध्वा सकलं मेय कृमीन् ॥ ॥ अथ चिकित्साः ॥
 लस्य गुहः ॥ ॥ चिकित्साः कटुकः पाकवक्षि कृत्वा च नीलघ्नः ॥ २५ ॥ दूरीकृत्य ग्रहणी कृत्वा रक्षा र्णः कृमिका

गु० ३
३

जिह्व ॥ रश्मिमानिलह नो ग्राही वा नाशः रश्मिपिरु नूत् ॥ ॥ अथ ये च काल गुण लक्षणः ॥ ॥
पिप्यलीपिप्यलामूलै च च विप्रक नागनेः ॥ एकप्रमिलिने वरिपे च कालक मूच्यते ॥ कालमाश्रयथा
गित्वा दंतद्वानामकथ्यते ॥ ये च कालनसपाक कटुके वृचिकृन्मते ॥ नीकृपावनरश्मिदीपने करुवात
नूत् ॥ गुल्मप्रीहीदना नाहृल्लघ्नेपिरुकापने ॥ ॥ अथ यमानी गुणः ॥ ॥ यमानीयावनी नः
यागीकुक्कु कटुकालघ्नः ॥ दीपनीतिकृदया च पिरुलाहृकृल्लहन् ॥ वाता रश्मिआदना नाहृगुल्मप्रीः
हृहृमिप्रहृत् ॥ ॥ अथ मूलासानीयवानी गुणः ॥ ॥ यावसीकयवानी संहृशी च यवानी सहृशी
गुरोः ॥ विरभाया च नीरुका ग्राहिणी सादिनी गुणः ॥ ॥ अथ कुचिला गुणः ॥ ॥ स्यात्काकरिर्मर्क

माला
३

निकै भी न ले वा न ले लघु ॥ पिपाक कदकै ग्रहिक रुयिरु च नाशने ॥ ॥ अथ अमादयुगः ॥ अजः
माता कदली दुदीपनी करु वा न जिहू ॥ उरु विदाहिनी हया वृष्यावल कनी लघुः ॥ नशमयक मिच्छादि
हिधावालि नूजा जयन् ॥ ॥ अथ जीवक कृष्ण जीवक मगन नूने गुणः ॥ ॥ जीवक शिखर्य नूकै
कदकै दीपनी लघुः ॥ सैग्रहियिरु ले मध्य गर्त भय विरुद्धि कृष्ण ॥ सगन्धि पाचने वृष्य हयै वा न क रुपाय है ॥
वक्रुष्य पवना धान गुल्मी छर्दि निसा न जिहू ॥ ॥ अथ धान्य स्य युगः ॥ ॥ धान्य कै शुवनै त्रिग्न म
वृष्य मृग ले लघुः ॥ निकै कदकै वीर्ये वदीपनी पाचने मगै ॥ हयै नूची वद विरुद्धै स्वादु पाकै शिखर्य नून् ॥ अ
इव न रुक्षै स्वादु विरुद्धै पात्यिरु नाशने ॥ ॥ अथ भत पूष्य युगः ॥ ॥ भत पूष्या लघु ली कृषि

५० न
५

रुक्म दीपनीकदः॥ उष्णकानिलरश्मिप्रदं शूलकमोगजिम् ॥ मिरष्यात कुक्ष्यप्रकाविरमयाद्यानि
 शूलजिम् ॥ अग्निमीशकबीदृश्यावद्धविद्धमिहक्रनून् ॥ नृकोष्णपाचनी रश्म्यानिलोज
 यन् ॥ ॥ अथ मथीवनमथीगुहाः ॥ ॥ मथीकावातसमनी रश्म्याद्यापिरूलात्मता ॥ ततः स्व
 ल्यगुहावन्यावाजिनीतानूपूजिता ॥ ॥ अथ वक्षसूत्रगुहाः ॥ ॥ शशिश्नैर्हिर्नवातकरूपि
 तातिसानिर्हं ॥ अस्तुग्दाघहर्त्रे प्राकैवल्यपूष्टिविवर्द्धनं ॥ ॥ अथ यगैधववाधानावचरुतिप्र
 सिद्धा ॥ ॥ अथ वासुगन्धिवधरूनिर्जननमहारुना रूतिप्रसिद्धा ॥ ॥ अत रुदात्कूलमूलमहारुना
 रूतिप्रसिद्धा ॥ ॥ वेचीयगन्धाकटुकानिकाश्च वक्रिवाक्तिहृन् ॥ विवन्धाध्यानमूलघ्नीषणस्तृणः

नाभा
उ

विरणाधिनी ॥ अस्मानक कान्मादह ननु निलीजयन् ॥ सुगन्धपिवचा न द्विदिश्यात्कुरुकाशनम् ॥
 स्वस्वान्वकनी नृया हृत्कृष्टमुखसुद्धिकृत् ॥ ॐ कोहीन गुहा प्रोका लूल मूलो वचा वूरधः ॥ ॥ अहः ॥
 होह वन हय नन्मरध प्रथमै मत्स्य सदृशं द्वितीय मन्कुरु लु ल्यै मत्स्य गन्धिका यो गुहाः ॥ ॥
 हवृषा दीपनी किका मृदु सुगुवना गुहः ॥ पिकुद न स सी नार र्भा ग्रहणी गुल्म शूल जिह्व ॥ ॥ अथ विः ॥
 उज गुहाः ॥ ॥ विउ ज क दू ती क्षु रू द व क्रि क नै ल घः ॥ ॥ शूलो भा नो द न र ल क म्मि वान विवन्ध नू
 न् ॥ ॥ अथ तु न्व न्म नि च व रु ल्य गुहाः ॥ ॥ तु न्व न्मः क दू लि के रू द क्षु दी प नो ल घः ॥ नी दूः
 हयः क दूः पा क वि दा ही ना च नी ज य न् ॥ क रु वा न स ना ग क क र्त्तु का यु सि ना न्मः ॥ कृष्ट शूलः नृ चि धा स

गु० ७

श्रीहृक्छन्दनकृमिन् ॥ ॥ अथ वैष्णवीवनगुह्यः ॥ ॥ वैष्णवावृहणीवृष्यावल्यासधूनशीतला ॥
रुक्मदयद्वान्धवासकाणयिरुप्रकामला ॥ अथैकस्त्रीवृक्षीयाधुकषायावातकृच्छ्रजिन् ॥ ॥ अथ स
मृद्वरुनगुह्यः ॥ ॥ समृद्धरुनेवकृष्योलेखनेशीतलेसनरु ॥ कषायविषयिरुध्वैकलुहकुरुह
लघुः ॥ ॥ अथैकवर्गलक्षगुह्यः ॥ ॥ जीवकर्षरुकोरुदकाकोल्याकृद्विवृद्धिक ॥ अथैवर्ग
हृदिद्रव्यैःवनकाविरिनीत्रितः ॥ अथैवर्गाहिमःस्वादवृहक्षःपुक्रलोगुनः ॥ नयसन्धानकृत्तन्यविला
सवलवर्धनः ॥ वातयिरुस्यरुददाहद्वानसहकयवृक्षरु ॥ ॥ अथ जीवकर्षरुकलक्षगुह्यः ॥ ॥
नसानकैदवत्कृदोनिःसानोष्णप्रको ॥ जीवकःकूर्चकाकानकषरावृषण्जवर्ग ॥ जीवकर्षरुकोवः

माला
७

लोभीनी शुक्रकरुप्रदो ॥ मधूनी पिरुदाहासकार्थवानकयायहो ॥ ॥ अथ हि वृद्धिलक्षणाः ॥
रश्मिलोमान्वितः केदालनाजानस्मनेदकः ॥ कृद्धि वृद्धिर्निरुथो विख्यातकोशयामलक ॥ तूलयैकि स
मा कृद्धिः वामावार्त्तुलामना ॥ वृद्धिस्तुदक्षिणावर्त्तुलामना ॥ कृद्धिर्वल्यादिदीपघ्नी शुक्र
लामधूनागुनः ॥ प्रारोष्यकनीमूर्च्छनकपिरुविनाशिनी ॥ वृद्धिर्गर्हप्रदाशीना वृहशीमधूनामना ॥ वृ
ध्यापिरुस्यसमनीकनकाशकयाप्रनूत् ॥ ॥ अथ मंदमहामंदलक्षणाः ॥ ॥ शुक्रार्मुकनिः
रः केदालनाजानः स्रुपाधुनः ॥ महामेदामि विख्याता महामेदाविनिश्रुति ॥ शुक्रः केदानखट्टयो मदीधा
नुसिवप्रवेत् ॥ महामेदाकथितामूनिपूगवेः ॥ मदायुगीगुनस्वाइवृथ्यैरुन्यकरूपह ॥ वृहशीभीतलीयिः

गुण
८

रुवकदयससीवननृ॥ ॥ अथ काकाली दीनका काली गुणः॥ ॥ पीवली सद्यः कन्दः कीनका काः
लिवन्मनः॥ काकाली कथिता वे अर्महा काकालि पूजिताः॥ काकाली युगलै शीतं शुक्रलै मधुनै गुनः॥ हे ह
र्षयिरुदाहा प्रयिरु रभाषकनाय हे॥ ॥ अथ श्री मधुजल श्री मधु गुणः॥ ॥ यष्टी हि मा गुन
रुदीव कृष्णा वलवर्धु कृ॥ सुतिग्धा शुक्रला कं र्थायिरु निलो प्रजिन्॥ वृक्ष रभाथ विषद्युर्दिहः
स्वात्मनिकया पहा॥ ॥ अथ कवी गुणः॥ ॥ कैयिल्लः करुयिरु र्प्रकृति गुली दन वृक्षान्॥ हन्ति न
वीक उष्ण मना ना हे विद्या मजिन्॥ ॥ अथ धनवहन गुणः॥ ॥ आनवरधा गुनः स्वादुः शीतलोः
नृद्वनवनः॥ दानद्वगयिरु र्प्रवागो दावर्धु लजिन्॥ नन्पूष्य वातलै शहि निकै यिरु क रुय हे॥ य प्र

नाला
८

सा न गवध स्था कं करु मदा विरसा धने ॥ विनय सत नै यथ म द दौष स सन्नि न ॥ न न ऊ म धू नः स्त्रि रथा वा
ह यिरु म ह स नः ॥ **॥ अथ कटु की गुणः ॥** ॥ कटु क कटु का ये ति ति क नू का स नाल घूः ॥ शीत ला दी
य नी रु था क रु यिरु द ना य हा ॥ प्र मे ह ॥ स का ॥ सु दा ह क रु रु मि प्र नू ॥ **॥ अथ चिना गुणः ॥**
कि ना नः सा न को नू कः शीत ल स्ति क की ल घूः ॥ स नि पा न द न ॥ स क रु यिरु सु दा ह नू ॥ का ॥ ॥ ॥ व रुः
वा क रु द न व रु मि प्र नू ॥ **॥ अथ उदय व गुणः ॥** ॥ उद य व वि दा य घू से आ हि कटु शीत ली ॥
द ना ति सा न व का र्णः रु मि वि स र्य क रु नू ॥ दी य नै गु उ की ला सु वा ना सु ध म ॥ ल जि नू ॥ **॥ अथ मद न
रु ल गुणः ॥** ॥ मद ना म धू न स्ति की वी र्या ॥ ल ख ना ल घूः ॥ वा नि रु द्वि द्वि ह नः प्र ति स्या य द ना न फः नू

गु० ३
९

कः कष्टकरो नाहं ॥ १ ॥ रुग्णं वृक्षं पतः ॥ ॥ अथ मयनरुल्लेखकं रुदमहा मयनरुल्लेखकं रुल्लेखः ॥
॥ महापिंडीकः शीतः ॥ २ ॥ रुग्णं पिंडीकं रुल्लेखः ॥ ॥ अथ नास्तीगुहः ॥ ॥ नास्तीमवाचनीतिका
गुग्गुलु ॥ १ ॥ रुग्णं पिंडीकं रुल्लेखः ॥ ॥ नास्तीमवाचनीतिका रुल्लेखः ॥ ॥ नास्तीमवाचनीतिका रुल्लेखः ॥
हिमजिह्व ॥ ॥ अथ नास्तीगुहः ॥ ॥ नास्तीमवाचनीतिका रुल्लेखः ॥ ॥ नास्तीमवाचनीतिका रुल्लेखः ॥
विनाशय ॥ ॥ नास्तीमवाचनीतिका रुल्लेखः ॥ ॥ नास्तीमवाचनीतिका रुल्लेखः ॥ ॥ नास्तीमवाचनीतिका रुल्लेखः ॥
जीवन्ति ॥ ॥ नास्तीमवाचनीतिका रुल्लेखः ॥ ॥ नास्तीमवाचनीतिका रुल्लेखः ॥ ॥ नास्तीमवाचनीतिका रुल्लेखः ॥
वक्रिप्रदीपनी ॥ ॥ अथ मजिनमालकं गुनीगुहः ॥ ॥ अथ मजिनमालकं गुनीगुहः ॥ ॥ अथ मजिनमालकं गुनीगुहः ॥

माला
९

॥ अथ सुवासनीनां वृद्धिस्तुतिप्रदा ॥ ॥ अथ कूटगुहः ॥ ॥ कृष्णमूर्धकदम्बादुशुक
लेनिककैलधः हन्ति वाताप्रविसर्पकाशकृष्णमनूकान् ॥ ॥ अथ पुष्कनमूलगुहः ॥ ॥ पुष्क
नैकदूर्कैतिकैमूर्धवातकरुक्षान् ॥ हन्ति रसास्त्रविषासास्त्रिषासायाध्वंशुलजिह्व ॥ ॥ अथ श्री
कगुहः ॥ ॥ हन्तीकात्रचनीतिकासदन्यूरकशकानिही ॥ हन्ति कैचकफानाहविषमयिरासुकृष्णनू ॥
॥ ॥ अथ काकनाशंगीगुहः ॥ ॥ शृंगीकषायनिकासुकरुवातकयक्षान् ॥ ॥ श्वार्धवातकृदका
शहिकानूचिवमिजयन् ॥ ॥ अथ काष्णरुलगुहः ॥ ॥ कर्दूलस्तुवननिकः कदूर्वातकरुक्षान् ॥
हन्ति रसाप्रमहार्शः काशकस्थमयानूचि ॥ ॥ अथ रोगीगुहः ॥ ॥ रोगीनूकाकदम्बिका नूचास्त्रिषाच

गु०३
१०

नीलघुः॥ दीपनी तु वना गुल्म न क किन्नाशय ध्रुव ॥ रक्षाथ काशक रुष्वा स पा न दान माना न ॥ ॥
अथ याषास रुद गुहाः॥ ॥ अमरुदा हि स निक क पा या व स्ति रक्षा धनः॥ रुद नो ह नि दा वा रक्षा गु
ल्म रु रु अमरु रु रुः॥ यो मि नो ग प्र म हा अ ली ह अ ल व द्वा नि च ॥ ॥ अथ धा वे पृष्ठा गुहाः॥ ॥
धात की क दू को णी ता म द रु रु व ना ल घुः॥ रु रु मि ता न यि रु अ वि ष रु मि वि स र्प्य जि रु ॥ ॥ अथ न
गा गुहाः॥ ॥ मै जि रु म धू ना निक क पा या स व लु वे लु रु रु ॥ गु नू नू रु वि ष र अ रक्षा थ य न्य रु व लु नू
क ॥ न का मि ता न रु रु अ वि स र्प्य व द्वा म ह नू रु ॥ रु रु के दी प ने अ रु ति म्भ पि रु नि ला प हे ॥ ॥ अथ ला
दा म हा व न न यो गुहाः॥ ॥ ला दा व र्धा हि मा व ल्या ति म्भ व रु व ला ल घुः॥ अ नू रु क रु पि रु अ हि रु

माला
१०

काशकनेप्रसूत॥ब्रह्मवदन्वितसूर्यकृमिकृष्टग्रहायहा॥अनककागुरोस्तद्विद्विषाद्योगनाशनः॥ ॥
अथहवदिगुप्तः॥ ॥हविद्राकट्टकातिकानूक्ष्णसुरक्ष्मपिरुनू॥वस्थान्वगुदायमहासुरक्ष्मरूपाधु
ब्रह्मपहा॥ ॥अथवनहविद्रगुप्तः॥ ॥अनस्थहवदीकैदःकृष्टवागमनाशनः॥ ॥अथकष्य
वहविद्रगुप्तः॥ ॥आम्रगन्धिहविद्रागुप्तीतलावागलासगा॥पिरुदृष्टादृक्तिकाचसर्वक निवा
विक्षी॥ ॥अथदानूहविद्रगुप्तः॥ ॥दावीनिष्ठागुप्ताकिंचनप्रकृष्टस्यवागनू॥ ॥अथनसीज
नलकषगुप्तः॥ ॥दावीकाथसमदीनैपादपकायदाघनै॥नदानसीजनोखीनप्रयार्वनसीजनै॥
वसीजनैकट्टक्ष्मसूखनप्रविकानजिगु॥उद्धेनसायनैकिंकैदनेवृक्षरक्षथदृगु॥ ॥अथवाकः॥

७०३
११

वीथगुणः॥ ॥ वाक्यमधुना किक कदपाकनसायनी ॥ विष्टेति नीहिमा नृच्या सवारधका मयिरुनू ॥
नृकाहया ॥ स कृष्टमेहकनरुमिद्रु ॥ नरुलेपिरुलेकृष्टके दद्रुविद्यानिलारु ॥ गुल्मकाशकृमि
॥ सनाशनेकदृकेस्तु ॥ ॥ अथगीतगुणः॥ ॥ विद्या ॥ सुकदृक्कि कायावनी दीपनी रुधु ॥
करुपिरुमिसानामविषकाशवमिद्रुमि ॥ ॥ अथपटिआलोदशावनलोदगुणः॥ ॥ लोदशः
हिलघुणातः वद्रुष्यः करुपिरुनू ॥ कषायानकपिरुसुग्यनामीसानरुनू ॥ नरुष्टेमधुनेशहित
निकैरुष्यपिरुनू ॥ हिमत्ववनकेपाकेकदृकेचविरुषतः॥ ॥ अथरुलावागुणः॥ ॥ रुलाक
स्यत्वेसासमानुष्यनविवन्धने ॥ वलाकवल्कलेरुयेमानुष्यकृत्तमेतथा ॥ वलाककरुलेपके स्वादपाकनसे

माला
११

गुनः॥ विष्टेति वृहती नृकी हि मे वा न वला स कृत् ॥ शुक्रलेदूर्ज नैव ल्ये न कपिरु विना धनै ॥ न स्यात्कि मधूने
निकै कट्ट पाक न सै लघुः॥ कषायै पाचने स्निग्ध नी कू कू द्दि रु दने ॥ मध्य वक्रि क नै ह न्ति क रू वा न वृः
रक्ष दने ॥ कृष्ण र्भा ग्रहणी गुल्म र्भा रुना ह क ना कृ मि न् ॥ रत्न कृ मधू ना वृ थ्या वृ ह र्क्ष वा न पि रु हा ॥ वृ नः
मा नृ क नै स्वा द पि रु घ्नै क ष्म मग्नि कृत् ॥ रत्न आ न कः कषा या कृः शुक्र लो मधू ना लघुः॥ वा न र्भा द नाना
ह कृष्ण र्भा ग्रहणी ग दान् ॥ ह न्ति गुल्म रु ना धि ग्र व क्रि मा श कृ मि वृ क्षा न् ॥ ॥ अथ कृ ल रत्न आ न क मुः
क्षः॥ ॥ नदी रत्न आ न क क्लि कः कषा या मधू ना हि मः॥ सै ग्रा ही वा न लो न क पि रु वृ क्ष क रू प हः॥ ॥
अथ ली ग गुक्षः॥ ॥ रत्न ग क रू ह नी निका ग्रहिणी पाचनी लघुः॥ नी कू कृ पि रु ला मो ह म द वा ग्व क्रि व र्धः

गु० न
१२

नी॥ ॥ अथ पादगुणः॥ ॥ स्यादखसफलाम्बुगीवल्ललः शीतलालघः॥ वदस्तिककषायश्च वागहृत्क
रुकाशहृत्॥ धातुराषयिताग्रहिसदकृद्वाग्विवर्द्धनः॥ मूकमार्हकनीचः सेवनात्पूस्वनाशनः॥ ॥
अथ कहीमगुणः॥ ॥ प्रकस्येवगुणः सर्वरुतव्याग्रहिरुनकः॥ किंचिदिनास्तु विरामाय मूनाहृत्॥
अथ दानागुणः॥ ॥ दृष्ट्यावल्यः खसमिलः रसमालावागकिरुतः॥ ॥ अथ सेन्धवगुणः॥ ॥ सेन्ध
वसधूनेहृद्यदीपने शीतलालघः॥ वक्रुषीपाचने तिग्मं दृष्ट्यं अग्निदायकिरु॥ सर्वेषु सेन्धवे मुख्यमनू
कं नत्पुत्राजयत्॥ ॥ अथ सोवर्चलगुणः॥ ॥ नूचकनीचनेहृद्यदीपने पाचने यने॥ मस्निहं वागलू
नामिपिरुले विषदं लघुः॥ गुग्गुनस्तु द्विदं अविबन्धनाहृत्लकिरु॥ ॥ अथ विउगुणः॥ ॥

माला
१२

विठ्ठलसकानमूर्धाधःकरुवागानूलामने॥ दीपनेलघुमीक्षुं नृकं नृचं व्यवायिव॥ विवन्धनाहविष्टरु
दुर्दुःखो नवधूलकिरु॥ ॥ अथ सामुद्रगुहाः॥ ॥ सामुद्रमधूनेपाकसक्तिके मधूनेगुहः॥ नात्युक्षु
दीपनेरुदिसकानमविद्याहिव॥ ॥ अथ लीवागनूरुकि कसमृकनाकिपिरुने॥ ॥ अथ सीनमिगुहाः॥ ॥
गदाख्ये लघुवागघुसस्युक्षुं रुदियिरुले॥ गीद्व्यवायिधुं श्रीचालिष्येदिकदृपाकिव॥ ॥ अथेकदि
प्रिवतुः येवलदक्षगुहाः॥ ॥ सिन्धुसोवर्चले चैव विठ्ठलसामुद्रिके गते॥ प्रकद्विप्रिवतुः येवलवक्षानिः
क्रमादिदुः॥ सन्धवाशीलामकार्कहयले वक्षयेचके॥ कत्वादुस्यविस्मयैतिग्धं श्रीवलावहे॥ वीर्या
सुदीपनेगीद्वकरुपिरुविवर्द्धने॥ ॥ अथ खनियोपाधिववद्युं किचनामन कुहाः॥ ॥

३०७
१३

कारे गुन कदस्त्रिगुणं श्रवणं वारुणाशनं ॥ ॥ अथ वक्षकलोका गुणः ॥ ॥ वक्षकान्त्रकमन्त्रं दीपनेदः
कहर्षं ॥ लवणं रुनं सैन्धवं ॥ लाजीरुं विवन्धनं ॥ ॥ अथ यवका वसाजीका वगुणः ॥ ॥ यवका
गोलघुसिग्धसूक्ष्मं वक्रिदीपनः ॥ निहन्ति वारुणाशनं ॥ श्रवणं वारुणाशनं ॥ यवका वगुणः ॥
नाहं हृदयसंयाम् ॥ स्वर्जिका ल्यगुणः कस्मादिशवाकुलं लज्जि ॥ ॥ अथ साहगो गुणः ॥ ॥ टंक
क्षान्तिकनीरुदः करुणा वारुणाशनं ॥ ॥ अथ कान्दयप्रयस्यलक्षगुणः ॥ ॥ स्वर्जिका वाव
सूक्ष्मं कान्दयप्रयस्यलक्षगुणः ॥ टंकक्षनसमायुक्तं कान्दयप्रयस्यलक्षगुणः ॥ ॥ अथ कान्दयप्रयस्यलक्षगुणः ॥ ॥
॥ अथ कान्दयप्रयस्यलक्षगुणः ॥ ॥ यलासवज्जि सिखन किल स्वर्जिका कान्दयप्रयस्यलक्षगुणः ॥ ॥

माला
१३

गद्यकसूदाहर्गै॥ प्रगवग्निस्सर्पार्कविशेषा दुःखमूलजिह्व॥ ॥ॐ तिथीगुह्यत्रसालायाहनि
रक्षादिवर्गप्रथमः॥ १ ॥ अथ कर्पूनादिस्वगन्धवर्गः॥ ॥ कर्पूत्रः शीतलोदृष्यः चक्रुष्यालेख
नीलघूः॥ सूत्रहिर्मधूनस्त्रिकः करुपिरुविषायहः॥ दाहहृत्स्यवेनस्यमदीर्घगन्धनाशनः॥ कर्पूत्रद्विवि
धप्रोक्तः॥ यकापकप्ररदनः॥ यकाक्यर्पूत्रजः प्राहूः नयर्कगुह्यवर्कनै॥ ॥ अथ विनियोकर्पूत्रगुह्यः
॥ ॥ चीनाकसैरुः कर्पूत्रः कृष्टकैगुवसिहूमिन्॥ हन्तिपिर्लेचकनूक्तिकनूक्तधकथन॥ ॥ अथ
कलूनीलकक्षगुह्यः॥ ॥ कामरूपारुवाहृष्टनेपालीनीलवर्षुयूक्॥ काश्मनीकपिलद्ययाकलूनीप्रिः
विधमताः॥ कलूनीकाकटिकदानीसुशुक्लागुह्यः॥ करुवागविषहृदिशीतदीर्घगन्धदीपहृत्॥ ॥

गु० २
१४

अथ गोवासाय गुहः सद्युहः ॥ माऊवीमदनः शुभः चक्रव्यः करुवागजिन् ॥ की० किटनकी० घुः सः
वलिः कानिपूष्टिदः ॥ अथ म० कदानालगुहलदक्षः ॥ लताकस्तुविकानिको स्वादीवृष्याहिमा
लघुः ॥ चक्रव्याधुदनीरक्षमरुसुवस्त्रास्यगजिन् ॥ अथ चन्दनलक्षगुहः ॥ स्वानिकीक
धपीमसूक्तं चकननोमिनी ॥ ग्रैथिकाटवसीयूकचन्दनप्रसूचन ॥ चन्दनशीमलनूक्तिकमाला
दनीलघुः ॥ क्रमरक्षायविवरक्षमरुसुपिरुप्रदाहनू ॥ अथ म० लेन्दीगुहः ॥ कालीयकीवः
कगुहविरक्षायद्योगनाशनै ॥ अथ नकचन्दनगुहः ॥ नकेभीमगुनस्वादुदुर्दिनरुसुप्रधिः
रुजिन् ॥ हविचन्दनवरुयविरक्षायद्याहनाशनै ॥ चन्दनानिगुसर्वासिगुल्यानिहिनसादिनः ॥ गरधनगु

माला
१४

विराजः स्यात्पूर्वयषू न मे गुरोः ॥ ॥ अथागुनद्वयगुणः ॥ ॥ अगुनसुनिकमीकूकदस्यात्यरुलैल
घूः ॥ कर्षुकिनागत्वगुदीषभीनवानकरुप्रधन ॥ कर्षुगुणाधिकयच्चलाहवद्वाविमकृति ॥ ॥ अथागुन
गतगुणः ॥ ॥ सद्वागुनरुवः स्निहः कदस्तिस्त्रयिर्गुण ॥ मीकूकथास्त्रगुदीषसीनवानकरुप्रधनः ॥
अथदवदानगुणः ॥ ॥ दवदानलघुस्निग्धनिकीर्षुकदूकगुन ॥ विपाककनसाथमहिकप्रकरुवान
दू ॥ ॥ असकन्दाविवन्धाधकगुपीनसमेहन ॥ ॥ अथभूयसनलगुणः ॥ ॥ सनलासधूनस्तिकः
कदूपाकनसालघूः ॥ स्निग्धासुः कर्षुकर्षुकिः नागनकाविनाशनः ॥ कर्षुनिलस्त्रिदयुकाकाशालकीवृक्षाः
पहाः ॥ ॥ अथपञ्चाखगुणः ॥ ॥ पञ्चकस्त्रवलीनिकीशीनलीवानलैलघूः ॥ विसर्पदाहविस्फोटकस्रक्ष

३०७
१५

आमुपिरुजिन् ॥ गरुसैरुपनेरुयीवनिवसेरुषाप्रक्षरु ॥ ॥ अथ गुगु नूत कक्ष गुक्षः ॥ ॥ सहिषाक्षम
हानीलः कसूदः यमप्रवच ॥ हिनस्थः येवमाक्षुया गुगु नार्थवमाक्षयः ॥ रगोजनसवर्षुम्भुसहिषाक्षमिस्त्र
रः ॥ सहानीलसुविहयस्वनामसमलक्षः ॥ कसूदः कसूदारुमुपक्षामाक्षिक्मन्निरुः ॥ हिनस्थस्वम्भुः
हमाक्षः येवमाक्षसदाहताः ॥ सहिषाक्षमहानीलागज्जडाक्षीहितावरो ॥ हयानीकसूदः यमः स्वस्वयोगकमी
पने ॥ विष्णुसमनूष्याक्षीकनकः यनिकीर्त्तिरुः ॥ कदाचित्पुहिषाक्षम्भुसकः कश्चिन्नुक्षीमपि ॥ गुगु नूर्वि
षदक्षिकावीर्याक्षः पिरुलः सवः ॥ कषायः कदूकः पाककदूदो लघूः ॥ यनरुग्मसंधानरुहृष्यशूक्ष्मः
स्वर्थावसायने ॥ दीपनः पिष्टिलोवत्यः करुवागवृक्षपयी ॥ मदीमहाभवागाप्रक्षदकृष्टसमानूतान् ॥ पिः

माला
१५

लुकाग्रन्तिः ॥ १ ॥ गलुमालाहमीकयन् ॥ माधूर्यात्समयचार्त्तकषायत्वात्थयिरुहा ॥ तिकत्वात्करुतिरु
नगुगुनः सर्वदाघहा ॥ सनवीहृह ॥ २ ॥ दृष्यः पूनाहस्तमिलेखनः ॥ त्रिग्वकीचनसंकाशः पक्वमन्वूरुलो
पमः ॥ नूतनीगुगुलः प्राकः सुगन्धिर्यमुपिचिलः ॥ सुकादुर्गन्धकरश्चेत्यकप्रकृतवर्धुकः ॥ पूनाहस्तनूः
विरुथागुगुनवलवीर्यवर्जितः ॥ अस्त्रमीकुसमीर्लुचव्यवायेप्रसमागतये ॥ सघीनघन्यकृत्सम्यगुलार्था
पूरसवकः ॥ ॥ अथ श्रीवाससनलनिर्यासगुगुनीर्लुतिचनद्रुहा ॥ ॥ श्रीवासमधूनक्तिकः त्रि
ग्वश्चपूरस्तनः ॥ पिरुमीवानमूर्द्धाकिस्वगीगकरूपहः ॥ नदीश्रीस्वदकेर्गन्धायुकाकरुवृक्षप्रधुनः ॥
अथनालगुहाः ॥ ॥ नालाहिमागुनक्तिकः कषायाग्राहकीकयन् ॥ दीघासुस्वदविसर्पकनवृक्षविषादिकाः

गु० न
१३

॥ ग्रह रं गाग्निदग्धा श्रीशूलामिसावनाशनः ॥ ॥ अथ कृष्णगुणः ॥ ॥ कृष्णवर्मधूनस्मिकः तीक्ष्णः सु
च्यः कटुहृन् ॥ कान्तस्वदग्रहालम्बीसस्वगन्धकफानिलान् ॥ ॥ अथ सिलानसगुणः ॥ ॥ सिद्धकः क
टुकः स्वादस्त्रिग्धासुः शुक्रकान्तिहृन् ॥ दृष्यः कटुस्वदकटुहृन् दीपग्रहापहः ॥ ॥ अथ जातुल्लुगुः
क्षः ॥ ॥ जातिरुल्लेनसमिकीतीक्ष्णो नाचनेलघुः ॥ कटुकदीपनेक्ष्यस्वर्गश्रव्यानिलापहः ॥ निहन्ति स
स्ववेनस्यमलदीर्गन्धकृष्णः ॥ कृमिकाशवमिग्धासुहृन् कृमिविषायहः ॥ ॥ अथ लवंगगुणः ॥ ॥
लवंगकटुकमिकीलघुनग्रहिर्नहिमे ॥ दीपनेपाचनेनूचीकरूपिरुसुनाशकः ॥ दृष्ट्वा कृद्दिग्धाध्मानैशूल
मासूविनाशयन् ॥ काशेध्वासेचहिक्कीचक्षययेवक्षययेदली ॥ ॥ अथ लोखीजुलगुणः ॥ ॥ स्फुल्लेलाक

माला
१३

दकापाकं न सवानलकलधूः ॥ ककुक्षु रश्मिपिरुमुककुक्षु सत्तुषापहा ॥ दृष्ट्वा सविषवस्त्यास्यसिना नृगमि
काशनूत् ॥ ॥ अथ गुजवातु शुक्मेलस्य गुणः ॥ ॥ जलाशुक्लकरुक्षु सकाशार्णमृगकुक्षुहत् ॥ न
सुगुदकाशीतालघीवाताकुक्षुमता ॥ ॥ अथ दालविनीस्य गुणः ॥ ॥ त्वर्चलघुसुदकद्वीत्वा इतिकैः
चतुर्ककैश्चामानूचिनाशनैः ॥ दृष्ट्वा सिवागवातार्णः कुमिपीनसशुक्रहत् ॥ ॥ अथ पप्रजगुणः ॥ ॥
पप्रकैमधुनैकिं चिकीकृक्षु पिरुलैलघुः ॥ निहन्तिकरुवारण दृष्ट्वा सानूचिपीनसात् ॥ ॥ अथ नागकश
नगुणः ॥ ॥ नागपृष्ठीकषायार्णुदकैलघुमपाचनैः ॥ खर्वकैस्तुष्ट्वा स्विददृष्ट्वा सनाशनैः ॥ दोगन्धक
कुविसर्पकरुपिरुविषापहं ॥ ॥ अथ शिजातकचतुर्जातकगुणः लकणः ॥ ॥ त्वरगलापप्रकैमुल्ये
प्रिसृगन्धिशिजातकैः ॥ नागकशनेयूकैचातुर्जातकमूचनैः ॥ तद्वयैवाचनैदूकैनीकाक्षु मुखगन्धहत् ॥ लघुपि

श्रुतिरुदलीकरुवातविषाग्रहं॥ ॥अथकषत्रगुणः॥ ॥काशीवदरक्षसंजातकृमिकृमिस्तृणवत्॥
 कनकीगन्धपीडुर्वैसृक्कषत्रकषत्रै॥कृमिपावसीकस्यादधमैसधूगन्धिनै॥ॐषत्याधुनवत्तुचल्लकषत्रसं
 कृलै॥कृमिकदूकैसिध्माभिवावृषुषनेतुजित्॥निकैवमिहवैवर्ध्वयज्जदोषप्रयापहे॥ ॥अथगोवाः
 वनगुणः॥ ॥रगवाचनाहिमातिकादध्ममैगलकीतिदा॥विषालश्रीग्रहीन्मादगर्हश्रावकताधनूत्॥ ॥
 अथसमूद्रकर्कटस्यपृष्ठस्वर्णवानखानखीनयागुणः॥ ॥नखद्वयैग्रहश्चवातामृद्वनकृष्टजित्॥लः
 घृष्टशुक्रलैवर्ध्वस्वादवृषविषाग्रहं॥अलश्रीमुखदोगन्धद्वत्याकर्मथांकदूः॥ ॥अथवालस्यगुणः॥ ॥
 बालकैशीनलैवृकीलघूदीपनपाचनै॥द्वल्लासावृचिवीसर्पद्विगस्वतिसावनूत्॥वकपिरुद्धवर्ध्वादाहृष्टका
 वृक्षग्रहं॥ ॥अथशुशीनलगुणः॥ ॥शुशीनपाचनैशीतैस्तृणैलघूतिकर्कै॥मधूनेकावृद्धानिमद

नूत्करुपिरुजित् ॥ नूत्करुपिष्वीसर्पदाहकुरुवक्ष्यते ॥ ॥ अथ जटामीसिगुहः ॥ ॥ सीसीतिका कषायाचम
ध्वान्कान्तिवलप्रदा ॥ स्वादीहिमाप्रियोषाचदाहविसर्पकुरुजित् ॥ ॥ अथ मोथनागत्रमोथस्यगुहः ॥ ॥ मूर्त्त
हिमैकदूग्राहितिकैदीपनपाचनै ॥ कषायैकरुपिरुचर्त्तनावृजित् ॥ ॥ अथ नूपदक्षज्ज्वातमूर्त्तकैतल्य
काश्चनः ॥ तग्राहिमूर्त्तिरिः प्राकैवर्त्तनागत्रमूर्त्तकै ॥ ॥ अथ कचूरस्यगुहः ॥ ॥ कचूर्वादीपनीवृचः क
दुकस्तिकप्रवच ॥ सुगन्धिः कटूपाकः स्यात्कृष्णवर्णकाश्चनजित् ॥ ॥ उकुलधाजयकुण्डगुल्मवातकरुक्कसात् ॥
अथ पुर्कगीगुहः ॥ ॥ मूर्त्तिकाहिमाध्वदीलघीपिरुनिलापहा ॥ द्वावाहृत्तनवकीघ्रीकुष्ठकाश्चविनासिः
नी ॥ ॥ अथ गन्धपलासीतिस्वगन्धद्रव्यः काष्ठीप्रषूप्रसिद्धिगुहः ॥ ॥ त्वं जन्धपलासीतिकषायाग्रहि
लीलघूः ॥ तिकागीद्राचकटूका उकुलस्यमलनाभिनी ॥ दीपकाश्चवर्त्तनाध्वसधूलहिमाग्रहापहा ॥ ॥ अथ पिः

गु०२
१८

यंगुसगन्धप्रियंगुगुणः॥ ॥प्रियङ्गुः शीतलातिका तु वलानिलपिरुहा॥ नकागियागदोर्गन्धस्वददाहकवाप
हा॥ गुल्मरुद्विषमाहृष्टीतद्वद्वगन्धप्रियंगुला॥ नरुलेसधूर्तवृक्षकषायशीतलीगुवः॥ विवन्धमानवलकृत्संग्रहि
करुपिरुक्त॥ ॥अथनेत्रकागुणः॥ ॥नेत्रकाकटकापाकनिका तु कृकदूलघूः॥ पिरुलादीपनीमध्व
पावनीगर्तपातिनी॥ वलासवानवेशस्यरुट्कंशुविषदाहकृत्॥ ॥अथग्रथिपल्लुस्यगुणः॥ ॥ग्रथिः
पाल्लुनिकातीक्ष्णकटुसुदीपनीलघूः॥ करुवानविषध्वसकशूदोर्गन्धनाशनं॥ ॥अथग्रथिवनरुद्वेषद
स्वगन्धिधूननगुणः॥ ॥श्लेष्मयकैस्तिककटुस्वादुस्निग्धंशिशिदाषजित्॥ मध्वसूकवनैत्वचीनकाशीकवनकु
जित्॥ हनिकृष्टासूतुदाहदोर्गन्धानिलकालकान्॥ ॥अथग्रथिपल्लुस्येवरुदाहटिउवन्तिनपालदरु
रुवतिनकुणः॥ ॥चीनकोमधूवस्तिकः कटुपाककटुलघूः॥ तीक्ष्णदयाहिमाहनिकृष्टकैशुकानिलान्॥

माला
१८

वक्राश्रीसदमदासुवक्रवगन्धविषवत्सारु॥ ॥अथरस्यमलकीसदृशस्फालीसगुहाः॥ ॥तालीसैलघृतीक्रीकृष्णस
काशकरानिलान्॥निहन्तिवृविगुल्मोम्रवक्रिसांशदयामयान्॥ ॥अथककीलागुहाः॥ ॥ककीलैलघृतीक्रीः
सुनिकैदृशैवृविप्रदं॥असदोर्गन्धदृकागःकरुवार्तमयीधैदृत्॥ ॥अथगन्धकोकिलीधमालत्यागुहाः॥ ॥
स्तिग्धासुकुरुदृकीकासगन्धगंधकोकिला॥गंधकोकिलयागुल्पाविरुयागन्धमामिती॥ ॥अथउशीनवत्पी
नद्विलामकृकीप्रसिद्धतस्यगुहाः॥ ॥नामकृकीहिमैतिकैलघृदोषप्रयासुजिन्॥त्वगामयस्विदकृच्छ्रबाहपिः
क्रास्रनागनूत्॥ ॥अथककलशदृशंकृच्छ्रगन्धमलचीवृकीतस्यगुहाः॥ ॥उलवालूकदृकीपाककषायै
शीतलैलघुः॥हन्तिकैदृवृक्षदृदिदृकाशावृविदृजः॥बलासविषपिरुानिकृच्छ्रमृच्छ्रमिजिन्॥ ॥अथः
गुठतदीविठुन्नकनान्नोवृकविषासस्तत्त्वचैमूलाकृतिनकुहाः॥ ॥विरुन्नकैहिमैतिकैकषायैकदृकाति

७०७
१९

दं॥ करुपिरुम्रवीसर्वकूटकीडूविषप्रभूत॥ ॥ अस्मत्सगन्धिः कलैकोऽं कपूनीऽंति चनामनकुम्भ॥ ॥
सृक्कात्वाहीहिमावृष्यामिका निखिलदाघनूत॥ कूटकीडूविषस्य ददाहश्रीकवचककिन्तु॥ ॥ अथ पर्यटी गुम्भः॥ ॥
पर्यटीगुवनानिकाभिनिवर्तु कल्लयः॥ विषवृक्षहरीकैडूकरुपिरुम्रकूटनूत॥ ॥ अथ नखकाउरुवापथः
प्रसिद्धासुर्गंधप्रवालाकृतिकचिदरुणातिववानीऽंतिनामनकुम्भः॥ ॥ नालिकाशीतलालघीचक्रव्याकरु
पिरुहन्त॥ कूटकुम्भवातनूतसुम्रकूटकीडूकवापहा॥ ॥ अथ पंथिज्जातुंदकडव्यनस्य गुम्भः॥ ॥
पोदयंमधूनीकैकषायैशुकलैहिमै॥ चक्रव्यमधूनीपाकवर्धपिरुककूम्रनूत॥ ॥ ॥ अंतिश्रीगुम्भ
रत्नमालायीकप्युगादिस्वर्गधवर्गादिनीयः॥ २ ॥ अथ स्वगन्धप्रसीगत्पूष्यवर्गः॥ ॥ तदुमूलनाल
पशुपूष्यरुलसमूदितापद्मिनीनादुशीकमूदिनीचनयागुम्भः॥ ॥ पद्मिनीशीतलोर्वामधूनालवक्ष

माला
१९

वत्ता ॥ पिरुक्कुरु नूद्रकावागविष्टरकाविही ॥ यमिन्नायगुहाशकाः कूमदिन्याश्चर्ममता ॥ ॥ अथ ॥
नवकनीलात्यलानीगुहाः ॥ ॥ कमलैधवलैशीतमधूनैकरुपिरुद्रन् ॥ रुक्मदाहमविष्टरविषविसः
व्यनाशनै ॥ नस्मादल्यगुहं किं विदन्यद्रकोत्यलादिकं ॥ ॥ अथ रुलकमलगुहाः ॥ ॥ यन्मागुक्कुरुः
निकाकषायाकरुवागजित् ॥ मृगकृष्णसुखलघ्नीश्वरकाशविषापहा ॥ ॥ अथ यमकलिकागुहाः ॥ ॥
पद्मस्य कलिकातिकाकषायामधूनाहिमा ॥ मुखवैसर्प्यदृष्टयः रुक्ममुकरुपिरुद्रन् ॥ ॥ अथ कमलः
कषावगुहाः ॥ ॥ किं रुक्मैशीतलैवृद्धैकषायैग्रहिकीतिदै ॥ करुपिरुद्रुषादाहनकार्ष्णविषरक्षापति
न् ॥ ॥ अथ कूमद्रको ॥ ॥ तिलाकैगुरुहाः ॥ ॥ कूमद्रपिष्टिलेस्त्रिगुहं सधूनैकादिशीतलै ॥ ॥ अथ
कैलावगुहाः ॥ ॥ कलावैग्रहिविष्टरिद्रुद्रगुहसुशीतलै ॥ ॥ अथ कैलीगुहाः ॥ ॥ वाविषर्षुहिः

मातिका लघ्वी साङ्गी सनापदः॥ दोष प्रयक नीरूपायि रुसु वन साधरा॥ ॥ अथ सेवान गुणः॥ ॥ सेवाने तु वने
 निकै सधुने शीतले लघुः॥ दोष प्रयास कि दृष्टान्तिका कदी च पावनी॥ ॥ अथ वसन्तिने पालने तिलाक न कुक्षः
 ॥ ॥ वासन्ति सीतलाल लघ्वी तिका दोष प्रयास नूत॥ ॥ अथ न पालि गुणः॥ ॥ ने पाली शीतलाल लघ्वी तिका दो
 ष प्रयास रा॥ कर्तुं कि मुख नी गद्यी न कुक्ष वार्षिकी सताः॥ ॥ जाती स्वर्ण जाति च वली न नूत पूष्या च वली तिला
 क न या गुणः॥ ॥ जाति यूग्मै निक मूर्ख तु वली लघु दोष कि नू॥ शिवा कि मुख दंता कि विष कृष्ण वक्ष स कि नू॥
 ॥ अथ यूथा स्वर्ण युहित या गुणः॥ ॥ यूथा यूग्मै हि मैतिकै कद पाक न सलघुः॥ तु वने सधुने दृश्ये पिरु चै करु
 वातली॥ वक्षसु मुख दन्ता कि शिवा नी ग विषा सहै॥ ॥ अथ चैपक स्य गुणः॥ ॥ चैपक कद कस्तिकः कषाः
 या सधुने हि सः॥ विष कृमि हनः कृष्ण करु पिरु स वा न कि नू॥ ॥ अथ वकल वोल शी तिलाक न कुक्षः॥ ॥

वकुलमुबनामसुः कटपाकनसागुनः ॥ करुपिरुविषाष्टिपुसिदनगदापहं ॥ तरुलेवालीयाहिकरुपिरुहनीहि
सी ॥ कषायमधुनैस्त्रिगुहयैदर्शनदाद्यकन ॥ ॥ अथ वृहदीलसनीवगकुलनकुषाः ॥ ॥ वकीतुसुः कटू
निकः करुपिरुहनीहि सी ॥ कषायमधुनैस्त्रिगुहं करुपिरुविषाष्टिपहं ॥ यानिधूलरुषादाहकृष्टरुषाक्षार्थनाशनी ॥
अथवागकटवस्यगुणः ॥ ॥ सूवासासधुनः शीतकषायोः लवणगुणः ॥ सनीविष्टरुकटूककरुक्तन्यानिलप्र
दः ॥ रुलेकषायमधुनैहिमीपिरुमुक्तिरुपनी ॥ ॥ अथ कटवीनकनीवर्णिचनकुषाः ॥ ॥ कटुचणीः
नलोयाहिकषायोवर्णुकुनः ॥ निहकियानिदाषाचुकृष्टदाहविषवृक्षान् ॥ ॥ अथ वदुआकटुचस्य
गुणः ॥ ॥ हनिद्रकः कटूपाकवीर्यासुगुवनः कटू ॥ लघुः करुहनीवर्णावृक्षारुषाधननीपक्षः ॥ ॥ अथ
कूडकस्यगुणः ॥ ॥ कूडकः सूत्रिः स्वादुकषायोऽसुनस्मनः ॥ विदोषसमनीवृष्यः सीतहरीवत्सुतः ॥

अथ मल्लिकागुहः॥ ॥ मल्लिकास्य लघुवृष्या निकाचकटुकाह्वयम् ॥ वानपिरुस्य दृग्गुणागकृष्टाद्विविधव
 क्षत् ॥ ॥ अथ माधवीपूष्पस्य गुहः॥ ॥ माधवीमधूनाशीतालघ्नीदाघप्रयापहा ॥ ॥ अथ कर्तकीस
 वलुर्कर्तकीकवलपिरुर्कवलान्ति लोकतयागुहः॥ ॥ कर्तकीकटुकास्वादूलघ्नीनिकाकरापहा ॥ तर्क
 लीकटुर्कनिकैलघुसुकरुवागजिन् ॥ हसकर्तकीमूलेस्यानिकैनेग्रहिर्नचनम् ॥ किंकिलातन्तिगेउप्रसिः
 द्वस्तुस्तुगुहः॥ ॥ किंकिलागोहिमस्तिकः कषायोश्च हवीदसो ॥ करुपिरुपिपासामुदाहदोषवमिकृमी
 न ॥ ॥ अथ रश्मकगुहः॥ ॥ अरश्मकः शीतलस्तिको ग्राहिवर्धः कषायकः ॥ त्वयाषस्वददोर्गन्धनाशनः पत्र
 मोमतः ॥ ॥ अथ वनपूष्पान्तिगेदोप्रसिद्धस्तस्य गुहः॥ ॥ अन्नातनः कषायोऽसुः स्वादुनिकस्तनिकः
 कः ॥ ॥ अथ पुन्नागगुहः॥ ॥ पुन्नागमधूनः शीतो नकपिरुकरापहः ॥ त्वयाषस्वददोर्गन्धनाशनः पत्रमा

मनः॥ ॥अथ कंदस्य गुणः॥ ॥कंदशार्तलघुः श्वसितानुग्विषयिरुजित्॥ ॥अथ सूचकंदपूष्यस्य गुणः॥
सूचकंदः शिवः पीडापिरुस्रविषनाशनः॥ ॥अथ विचकिलस्य गुणः॥ ॥शीतलघुर्विचिकिलः करुपिरुः
विषापहः॥ ॥अथ तिलकंतिपूष्यस्य गुणः॥ ॥तिलकः कटुकः पाकवसंयुक्तवसायनं॥ करुकुष्ठरुमिन्वस्तिः
सूखदंतगजानुहवनं॥ ॥अथ चानपूष्यतिकाश्वदोषसिद्धपूष्यजातिस्तु कुण्डः॥ ॥संखिनीकटुकांतिका
नीडुसिग्धसनागुनः॥ वीर्याशु कटुकापाकवसादनविषापहः॥ ॥अथ इपहविशः॥ ॥बन्धूकः करुकुशः
हीवानपिरुहनीलघुः॥ ॥अथ दधुलसा दधार्गुणः॥ ॥जयासंश्रिहीकश्वसिन्धुकरुवातजित्॥ ॥
अथ सन्दूरी गुणः॥ ॥सिन्दूरी विषपिरुस्ररुक्वावातिहनीहिमा॥ ॥अथ गनियानिपूष्यस्य गुणः॥ ॥अगस्तिः
पिरुकरुजित्चातुर्थकहनीहिमः॥ वृक्षस्तिकी वानलश्चप्रतिस्त्रायनिवानक्षः॥ ॥अथ शुक्रकुरुकुलसीः

॥ तुलसीकरुकातिकादशशुद्धाहपिरुक्तं ॥ दीपनीकसुक्तं ॥ पार्श्वं नूककरुवातजित् ॥ ॥ अथ स
नूतनागुणाः ॥ ॥ मन्दमिप्रदादशसीद्धुक्तः पिरुलालयः ॥ वृष्टिकादिविषरश्मिवातकसुक्तमिप्रसूतं ॥ कटु
पाकवसा नूत्यास्तिका नूतः सुगन्धकः ॥ ॥ अथ दवनागुणाः ॥ ॥ दमनस्तुवनस्तिकादशवृष्टः स्वगन्धि
कः ॥ ग्रहनूद्विषकसुक्तं ॥ शर्करा नूतिदायजित् ॥ ॥ अथ कटनकः ॥ श्वतावर्वनीकथिंजनः ॥ वटपशावर्वनीः
कसुक्तिनः कसुवर्वनी ॥ ॥ निवर्वनी प्रयस्यगुणाः ॥ ॥ वर्वनीतिनयै नूकं शीतं कटुविदाहिव ॥ नीकै नूविकनै
दशदीपनीवहिर्मेलयः ॥ पिरुलैकरुवातामुदकसुक्तमिविषायहं ॥ ॥ निथीगुधनत्तमालायीपूष्यव
र्गस्तुतीयः ॥ ३ ॥ अथ धातुपधातुवसायनसुवनत्तविषापविषवर्गः ॥ नयधातुलकर्षं ॥ ॥ स्वर्धुनू
प्येवतामैवनीगीयसदमेवव ॥ सीसीलाहं वसुधै नूधनवागितिसरवः ॥ वलीपलितखालिन्धकाध्ववलज्जनामः

[illegible]

गु० न
२३

नपविष्टवितः॥ तव स्पर्शा समपतनस्त्येकस्माच्चलाचनान्॥ तनीवृद्धस्तसपतन्वेष्टनवर्षकलन॥ द्वितीयादप
तन्नेशदम्बुवामकार्॥ तस्मादुक्तमहूतमूककर्मस्तुसंस्मृते॥ कृतिमैवापिनत्योर्कैवैगदवसयागतः॥ गुन
स्त्रिग्वंमृदुश्चतैदाहृदयनेक्रमे॥ स्वर्णुशैवचवस्वर्णुतावनवगुभास्तृताः॥ कठिनकृत्रिमैर्दृक्वैवकैपि
तैदलैलघूः॥ दाहृदयनेनैर्दृष्ट्यदाष्टास्तृताः॥ नृप्येष्टीर्कषायार्त्तस्वाद्याकवसैसर्वे॥ वयसःस्त
पनेस्त्रिग्वंलखनेवागपिदुक्तिन्॥ प्रमहादिकवीगश्चनाशयत्यचिर्वैध्वर्वे॥ तावसवीवस्यकवीनितायवि
द्वन्धने॥ यद्वृत्तिशुक्रनाशनै॥ सपाटवैवीर्यवलेनिहन्तिमहागदापर्वयत्यहित्स्वर्दे॥ ॥ अथताम्रात्यकि
लेकगुहाः॥ ॥ तुल्यैप्रकार्तिकयस्यपतिनैधवलीतले॥ तस्मादतस्तमूहर्तनामृमाद्रूपनाविदः॥ कृत्स्न
वृक्षमतिनर्दश्चतैवापिद्यनासह॥ लोहनागयूतचैतिसूत्रेस्यादीषसफर्कै॥ ताम्रैकषायैमध्वैसत्तिकमसै

माला
२३

चपाक ॥ कद्रुतावकैवपिरुपह ॥ अथ हनेवभाते ॥ तदोपहं स्यात्तुल्यस्वनेचपाधुदना ॥ कद्रुका ॥ अथ सद्रुयान्यी
नसमस्त्वपिरु ॥ सोरुं कर्मिषुलमय्यकनातिप्राकः पत्रहं हसमल्यमनत ॥ प्रकदोषाविषनामृत्वक्षोदापाप्रकीर्तिः
ता ॥ प्रमामृद्धविदाह ॥ अथ स्वदाकृदनवीतयः ॥ अथ विः विरुसनापप्रनदोषाविषापमाः ॥ ॥ अथ वागलकक्ष
गुहाः ॥ ॥ खूत्रकैमिश्रकैवेवद्विविधं वेगमूचन ॥ खूत्रकैत्वगस ॥ अथैमिश्रकैत्वहिर्नमर्त ॥ वेगलघुसर्वे
कमूखं महकरुक्रमिन् ॥ निहन्निपाधुस ॥ अथैमिश्रकैत्वहिर्नमर्त ॥ वेगलघुसर्वे
लमहवर्ग ॥ दहस्यसोखीप्रवलद्वियैत्वननस्यपृष्टिक्रनूचनूनी ॥ ॥ अथ यशदगुहाः ॥ ॥ यसदनु
वलीकिर्कीभातलेकरुपिरुद्रु ॥ चक्रुषीपत्रमैमहान्याधुष्यासैचनाभयन् ॥ ॥ अथ सीरुषात्यकिलकक्षगु
हाः ॥ ॥ दत्तालीगीसूनावमीवासूकिर्मूचयन् ॥ वीर्योक्तकृतानागसर्वनाभयहानृषां ॥ अथ सवेगगुहंरुयैः

विश्रामान्महनाशनं ॥ नागमुनागमुल्लवलेदयति व्याधिवनाशयति जीवनमाननाति ॥ वक्रियदीपयति कामवल
कनाति ॥ मृत्तुचननाशयति सतर्नचसेवितस्य ॥ पाकनहीनीखल्वैगनागोकृष्टानिगुल्मीश्वकरुद्धनच ॥ महासमीः
विद्वधिसूखयोगनर्त्तितनृत्तिकुनूतवलत्तै ॥ ॥ अथलोहीत्युक्तिलेकः ॥ ॥ पूनालोमित्तदेत्यानीनिहिता
नीसूत्रेयुधिउत्पन्नानिषावीनर्यालोहानिविविधानिचलोहीतिकीसर्वशीर्तकषायैमधुर्नगुनूः ॥ नूदवयदीचकुषी
लेखनीवातलेजयत् ॥ करुपिर्गुगलेष्टुलेभाकार्णः स्त्रीहयीशुनो ॥ मदीमहकृमिकृष्टनर्त्तितद्वदवहि ॥ गुनूः
तादृशोक्तदः ॥ मलेदाहकावितत् ॥ प्रभादीयः सुदुर्गन्धदीपाः सकायसञ्चव ॥ सैरत्तकृष्टामयमृत्तुद्वेदवद
द्रोगशूलै ॥ कुनूतभर्त्तितनानानूगानीचनथाप्रकाये ॥ कनातिद्वेत्तससुद्धलोहीजीवकावीमदहाविचायसै
यदसुद्धिसैत्तुर्नद्ववम्पाटवेनननूतभवीनकदादृष्टाद्विद्वर्गचयद्वति ॥ कृष्णशुभिलर्गलेचसायानैवाजिः

कातथा ॥ मयमस्मै न सैवेव न्यक्तं लोहस्य सैवकः ॥ ॥ **नयसावलोहलक्षगुणः ॥** ॥ कथारुद्धिखनाकावास्थं ग
न्यस्तनलपितं ॥ दृष्टं नयप्रभृत्तसि सारैलाहसूतद्वयं ॥ लोहसनाक्यैह न्याग्रही सति सावकं ॥ अर्द्धसर्वगं
वार्तं धूलैव पत्रिना मर्तं ॥ दृष्टिपीनसपिर्द्धं च धासैवाशु नियच्छति ॥ ॥ **अथ कान्तलोहलक्षगुणः ॥** ॥
यस्याप्रप्रभवतिलनलोहविन्दुः प्रतफहिं सुगन्धं विसृजति कती निम्बकल्कः तफद्रुग्धं रवति शिखलाकावकं ने
तिहमिं कृष्णगः स्यात्सजलचक्षकः कातलोहं नद्रकं गुल्मादलाक्षं धूलामसामवार्तं सगंधवै ॥ कौतर्तका मलारु
थकृष्टकयप्रभाहवत् ॥ दहयुष्टिवर्तैर्धैर्यं दद्रुजनयनसूतान् ॥ यकृत्सीहप्रसमनैमस्तपिर्द्धं सिवावृजी ॥ सः
वीत्रीगान्चिजयनकाकलोहं न सैव यः ॥ ॥ **अथ पद्मकुलक्षं ॥** ॥ सफापद्मवत्स्वर्धुमादिकी तुर्कः
कौष्ठं च वीवीश्च सिन्दूरैव शिलाजगुः ॥ ॥ **अथ सुवर्धुमादिकलक्षगुणः ॥** ॥ कचित्स्वर्धुसाहिर्यात्स्वर्धु

मादिकमीलितं ॥ उपधातुः स्वर्गस्य तस्य तद्वदुक्तमताः ॥ तथा च कीचनारावददामि स्वर्गमादिकी ॥ किं तु तस्याः
नूकल्यत्वात् किं विदुना गुणस्ततः ॥ ॥ अथ तालमादिकगुणलक्षणः ॥ ॥ किं विदुः कृतसाहिता न मादिक
कमूचनं ॥ नूपायधातुस्तथा का गुणवक्तव्यवृद्धेः ॥ तथा च वक्तव्यवृद्धेः ॥ तथा च वक्तव्यवृद्धेः ॥ अतः कल्यन्याः
तस्य तताहीना गुणमताः ॥ ॥ अथ मादिकद्वयस्य विभिन्नगुणः ॥ ॥ न केवलं स्वर्गनूपाय गुणस्तथा च य
मिनाद्वयीतस्य सैर्गतास्तन्यपितथा गुणः ॥ मादिकं मध्वैतिकं स्वर्गवियेन सायनं ॥ चक्षुषी वसिष्ठकृष्टः
माधुमहविषादलै ॥ अर्थः ॥ रणं कुर्यात् कथुप्रियायै च नियच्छति ॥ मैधानलत्वे वलहानि मूत्रां विच्छेदितानि नृग
दान् कुर्यान्मालीनं रथे ववक्षपूर्विका च ॥ कुर्यादसूक्ष्मं खलमादिकं च ॥ ॥ अथ तु कलकलगुणः ॥ ॥
तुच्छतायायधातुः स्यात्किं विदुना प्रकाशयत ॥ किं विदुना प्रकाशयत किं चिन्मूत्रगुणं ॥ तस्माद्वक्तव्यमादिकगुणं च नृत्

उक्तं कंकटं कानं कषायं चामकं लघुः ॥ लखने रुदनं शीतं च कृष्यं कुरुपि रुहन् ॥ विष्णुस्तु कुरु कुरु चैव न रुहन् सर्व
नमनं ॥ ॥ अथ कौश्वयी न विदुः यलकं गुह्यः ॥ ॥ उपधातु र्वे लोष्य दयास्तु नृक्षि त्रै गथाः ॥ त्रितितय्यु पधातु
पधातुः स्यात्ताम्रस्य यमदस्य च ॥ कौश्वयी स्यात्गुह्यं रुयाः स्वस्वयानि समाजनैः ॥ सीया गऊ प्रसावेन संत्य नपि गुह्यः
दयाः ॥ कौश्वयं कषायं तिको लखने विभदं नरैः ॥ गुह्यं नृक्षि नृक्षं कुरुपि रुहन् पनैः ॥ नीतिका कंकटं छी च द्विः
विष्णुस्तु प्रकीर्तिताः ॥ सीतका कौश्विकं रुपाताम्रा नीतिका मता ॥ ॥ अर्वा हि जायत रुक्मा का कुरु छी तिसामता ॥ गुर्वी म
दी च पीता हास्तु नीगी शान नमता ॥ सुस्त्रिंश ममृक्षं गी च नीति नता दृष्टी श्रुता ॥ स्त्रिया नृक्षा बला र्ष्यता नका नी वाद्यः
नासही ॥ पृष्ठगा वमूले र्युका नीतिकान् स्रुता मता ॥ नीतिका यूगले नृक्षं सति कंकल वलं न स ॥ अर्धने पाधुनी गघ्रं कुरु मि
घ्नं नाति लखने ॥ ॥ अथ सिन्दूर लकं गुह्यः ॥ ॥ सिन्दूरं सी सज्जी सस्था पधातुश्च सी सवन् ॥ नानाद्रव्यैश्च

गुण
२७

संसिद्धसंयोगजगुष्मन्निर्ग॥सिद्धनसर्वविसर्गकृष्णकधुविषाघहं॥रुग्णसंधानजननवदरणाधनगोहर्न॥ ॥अथ
सिलाजगुत्पलिलकक्षगुष्मः॥ ॥निदाधेयर्मसंगकाधुसावैधनाधना॥निर्यासवत्प्रमूर्चतिरुहिलाजगुकीर्ति
नं॥सधूर्नकटुतिकैचजवायुष्यनिरुतवत्॥विपाककटुसीनैचनसोवर्धुसिलाजिगुः॥वाजटैकीटुकीरुधर्तसीनैस्वाद्
विषयन॥ताम्रान्मधूर्नकीदार्तनीक्षुचनथारुवत्॥यजुयटायुप्रतीकाधंसनिकैलवक्षान्विनं॥विपाककटुशीनै
चसर्वप्रवृत्तदायस॥आयसगुपधातुःयथाक्रमेवागपिरु॥रुक्मपिरुकरुद्रिषुविरागयनः॥प्रसस्यनैरदोऽस्मः
जमरुवाःशिलाकयै॥कटुतिकैरुक्कटुपाकैवसायनै॥कृदियागवहैरुहिकैरुमहस्मसर्कवाः॥मृदुर्कृकयैधसै
वाताम्राभ्रसिपाधुता॥अपस्मात्रतरथान्मादरुक्कृष्टादवक्रमीन्॥ ॥अथवसात्यलिलकक्षगुष्मः॥ ॥
नग्ननसस्यलिनिरुकिःवसायनार्थिल्लिकैपावदोनस्यताजनः॥तनीवसंरुतिप्रोक्तःसचधातुवपिस्मृतः॥शिवी

नाला
२७

गतिर्गते न कः पाति तं धनं ली न ल ॥ तदहं सा न जात त्वात् शुक्रवर्धु महचनत् ॥ कथं रुदन विरुयं शिववीर्यं चतुर्वि
धं ॥ १५५॥ न के न था पीने कृष्णं चरुवतिक्रमात् ॥ वृक्षः कथि या वेष्यः शुद्धं स्वलूजा नितः ॥ १५६॥ सक्तं नूजा ना ॥
न के किल न सायने ॥ अतु वाद तु तस्यी न खगती कृष्णं मेव च ॥ स्वस्व न सा रु व द्रुक्का वद्ध ॥ श्वे व रु ना र्दनः ॥ नैजितः का
मितः सुतः सा का द्वा महं धनः ॥ मूर्ध्नि च ह न ति नूजं बन्धन मनू ह य खे गतिं ॥ कृत्वा नूजनी क नीति मृतः को न्यः क नू
क्षक नः ॥ सुता त्या न दः षडू सः तिग्धः मिदो ष ध्वा न सायने ॥ योग वा ही महा वृष्य सदा वृष्टि व ला व हः ॥ सर्वा मय ह नः
प्राका वि र षा सा सर्व कृष्ण नूत् ॥ मले विष व क्रि गि तिल चो प र्ने नै सर्गिके ॥ दो ष मू स कि या न दः ॥ तु पा य जो द्वा वि पू
ना ग सै रू को दो षो च सून क थि नै वि कि ल्लिके ॥ मल न मूर्ध्नि म न हं विषा ह दा हा मि ना क कृष्ण व र षा नी न ॥ द हः
स्व जा अ गि नि क्ष सदा स्या जी च ल्यो गो वी र्यं ह नि श्रयै सी वी ग न कृष्ण रू ज ग ह र्ग दो रु व द गो सो ख लू र षा ध नीः

७०७
२०

यः॥वक्रिर्विषमलैवेति मूर्खा दोषास्तु यो न स॥
प्रतर्कवन्ति सन्नाप्यं मृतिमूर्धनृणां कमात्॥
अन्यपि कथिता दोषाः
हिषगिः पानदयदि॥ तथाप्यनं प्रयो दोषा ह न ही या विरभाषतः॥
संस्कारहीनैखलसूतवाजं यस्तु वनं न स्य कवा नि
बाधन॥ दहस्य नासं विदधाति नूनैकसी श्रदोषान् जनयन् न वां॥
॥ अरथाय न सल कक्षं॥ ॥ गन्धा
हि गुलमश्रुता लक सिलाः॥ आतां जनैट कक्षं वाजावर्क कचैव कोरुटिक या क्षेखः
षटी गेविकी॥ काभी क्षेव स
कैक पदं भिकता वा ला श्रकै कृष्टकै॥ सोनाष्टी वमन अमी उपनसाः
सूतस्य किं विदुः॥ ॥ न प्रहि गूः
लल कक्ष गुहाः॥ ॥ दनदं विध प्रोक्तः श्रमार्तः श्रुकुं उक्तः॥
हंसपादसूती यस्या दुष्टवान् नूनी रुतः॥
वर्मान् श्रववर्षु स्यात्सूयीतः सूकुरुं उक्तः॥ रुवाकू स्रमसं का
॥ हंसपादा महारुमः॥ तिकै कषायै कदूहि गुः
लै स्या न ग्रामय चैकरुपिरुहा नि॥ दृष्टा स कृष्टकान का मला
श्रीहामवा गोच गवै निहन्ति॥ कृष्टपात नयं श

माला
२०

तुषार्क उत नूय नुतः ॥ सुधमवतदीयनुत्तुर्न सर्वप्रयोजयत् ॥ ॥ अथ गन्धकीत्यक्रिलकषागुहाः ॥ ॥ स्वददी
येषूवादेव्याः की तुत्यानऊसा सुर्न ॥ दूगूलैर्न नवमुहात्तातायाः की न नीवधः ॥ प्रसुर्न यदऊसुत्ता ऊधक सुमजायत
॥ वतुर्द्धा ऊधक प्राकोवकः पीतः सितासितः ॥ नको ह म क्रियासूकः पीतः श्वेव न सायने ॥ वृथा दिलेपने श्वतः रु
सुः ॥ अथ सुसदूलेतः ॥ गीधकः कटुकस्त्रिको वीर्यासु सुववः सनः ॥ पिरुलः कटुकः पाकक धुवी सूर्य ऊनुजित ॥
हन्ति कूटकयसीह करुवाता न सायने ॥ अरणा धिनी गन्धक प्रवकूटै कनीतिनापै विषमै शरी न ॥ सोखी च नूयै
चवलेन रथो ऊः शुक्रै निह श्वेव कनीतिवा मु ॥ ॥ अथ प्रकोत्यक्रिलकषागुहाः ॥ ॥ सुनापधाय वृरुस्य
वजिष्ठा वक्र मूहर्न ॥ विसूली गस्तुस्तस्य गगनपत्रि सूर्यिताः ॥ ननपतुर्चन ध्यानात् शिखनेषू म हस्तगो ॥ न
त्यप्रवस मूत्यनेन रुद्रि त्रिषूचा प्रकै ॥ नशादकिष्ठा रणे लैर्क रणा दल्य गुहां हितै ॥ अल्पै सत्त्वेन दाधक नस्य स

गुण
२८

त्वगुणप्रदं ॥ अत्र मुरुन (मोल) वरुसत्वे गुणधिका ॥ न द्रव्यं वक्रजान्त्वादयमश्रवणं वा ॥ गगन-
जान्त्वा गगनं च ऊर्गः सूनाः ॥ विप्रकृषिय विट् शूद्ररुदास्या रुचुर्विधं ॥ क्रमनं वसिर्न वकं पीतं कृष्णं च वर्ण-
नः ॥ प्रणस्य नं सिर्गं न वं वकं चैव न सायन ॥ पीतं हि मरि कृष्णं नूगदषूद्रतयपि च ॥ पिनाकं दई न नागी वक्रं च
किंचतुर्विधं ॥ मूचस्य (मो) विनिदिके पिनाकं दलसंचय ॥ अरु ना रुद्रं यस्य महाकृष्टप्रदायिकं ॥ दई न
त्वमित्रातिक्रूरं दई न धनिं ॥ गालका न्वरुणः कृत्वा ण स्यान्मृत्युप्रदायकः ॥ नागी वक्रिस्त्रिं सस्वस्त्युक्ता
नैयत्रि मूचकि ॥ नत्सनी नगनं निर्ये व्याधिं कुर्या रुगधनं ॥ वक्रं तु वक्रवक्रिष्टु रुन्ना (मो) विरुक्तिवज्रं ॥ यरु
ना वक्रयधीमान अत्रकं विनये लिषक् ॥ चतुर्षु पिव नै वक्रं वाधि वार्धिका मृत्युनून् ॥ अत्र कषायै मधुनै स
भीर्गं मायूकनै ॥ धातुविवर्धनं च हन्या विदो र्षं वक्ष म हनून् ॥ कृष्टं स्त्री हाद नै र्यथिविषकृमीधनी गान् रुक्ति ॥

माला
२८

दृश्यति व पूर्वार्थं वृद्धिं विधकृता नृणां श्री नमयति शरीरा विती नित्यमवदीर्घा यूपी जनयति सूता स्निह तुल्य प्रलावा
नृणां शरीरं हनति नित्यं सव्यमानं मृता प्री पी जी विधकृ विविधं न वा भां कृष्ट कर्षे पाधु गदं च दृष्ट ॥ इत्यार्थं पी जी चः
कनाति सस्त्रा मसिद्ध मर्त्यं गुनता पदं स्यात् ॥ ॥ अथ हविता व गुणः ॥ ॥ हविता लैक दूस्त्रिग्वं कवा यासु हन वि
षै ॥ कौशुक्य स्यात्वागम कुरुपि रुक च व्रभात् ॥ हानति च हविता नै सोष्ट वंद ह जातं सृजति च वदुता पदं ह कृष्टः
स्मयी ज विन वतिक रुवा तो चायुषो लैक नाति ॥ अमृत मिम स सना लूष्ट वागं श्व व गत् ॥ ॥ अथ मनः सिल
स्य गुणः ॥ ॥ मनः सिला गुनर्वर्णा सना सु लखनी कदूः ॥ तिका स्त्रिग्वं विषया स काश हन क रुा प्रनूत् ॥ म
नः सिला मीध वलै क नाति ज रुध्र व ॥ ॥ आधन मं न वल मलानू नाधं किल मृय नाधं स शर्क नै क रु ग नै च क र्यात् ॥
अथ सोवी न रथ न स न सा गुणः ॥ ॥ सोवी नै ग्रा हि मधू नै च दू षी क रु पि रु जिन् ॥ कवा ये ल व नै स्त्रिग्वं च चै द

द्विविषयप्रसूत॥ हिम्माश्चष्माचक्षुश्चैर्न सवनीये सदा रथेः॥ ॥ अथ आर्गज नस्या मसूत्रमागुक्षः॥ ॥ वल्मीक
 शिखवाकारैरिन्न सैर्जन सैर्निरु॥ चूर्द्धगुणेनिका काव मसूत्रा गार्गज नै मरुः॥ सोवीत्रयगुक्षः सन्नि सर्वजनपि
 न किं तु द्वयावैर्जनयाः॥ अर्द्धाश्चार्गज नै मरुः॥ ॥ अथ पूष्या नगुक्षः॥ ॥ वीतिर्गैकावर्कपूष्यकाचा मय
 टलायहं॥ ॥ अथ सहागा नगुक्षः॥ ॥ टंकक्षानिकवावृक्षः करुश्चावातपिरुक्तिरु॥ ॥ अथ रुद्र
 गिरीगुक्षः॥ ॥ रूटिकाख्या कषायाश्चावातपिरु करुवृक्षः॥ निहन्ति सितवितर्यान्थानि सैकोचका वि
 क्षी॥ ॥ अथ खटीगुक्षः॥ ॥ नाजावर्कः प्रमहघ्नः सहिष्का निवानहं॥ ॥ अथ चूचकगुक्षः॥ ॥
 चूचकीलेखनशीता मया विषगवायहः॥ ॥ अथ गवूसा नगवूगुक्षः॥ ॥ गेनिकद्वितयैस्वा इति गंधं तु
 वलकैर्हि सै॥ चक्रवर्षादाहपिरुश्च करुहिका विषायहं॥ स्वर्धुस्वमन्युश्च विषमा दार्ढिवा नहन्॥ ॥

अथ खली गो वखनी गुणः॥ ॥ खटी दाहा मृदु कृता मधूना विषरणा वक्तिन् ॥ लेपादत कुष्ठा प्राकारु किता मृति
का समा ॥ खटि गुष्ठा रुमः प्राकारो गुग्गुलावालिष म्वनेः॥ ॥ अथ बाल गुणः॥ ॥ बाल को लेखनी शीता वरुणः
कृत नाशिनी ॥ ॥ अथ स्वपत्रियाथ गुष्ठा स्फुटक प्राकारु गुष्ठा नसर्क मताः॥ ॥ अथ कसीस गुणः॥ ॥
काशीष द्वय मस्त्रा सुति के व तु वने तथा ॥ वातरक्ष्य हने के स्थं न स्यै के व विष प्रधुन् ॥ मृदु कृष्ण स्मरी शिथ नाशनं
पत्रिकीर्तिनी ॥ ॥ अथ सोनाक्षी सानवी साटी लिले त कुष्ठाः॥ ॥ स्फुटिका र्वा गुष्ठा य तु सोनाक्षी अयिर्न गुष्ठाः
॥ ॥ अथ कालिमा नि गुणः॥ ॥ कृष्ण मृत्ति कृत दाहा मृदु प्रद न रक्षयि कृतिन् ॥ ॥ अथ कार्दव गुणः॥ ॥
पैका दाहा मृदु पिक्वा र्त्ति र्वाथ घ्नः शीतलः स्रवः॥ ॥ अथ बाल गुणः॥ ॥ बाले न कृहने शीतं मध्वं पाचन दी
पनी ॥ कटू के मधूने ति के ग्रह स्वद पिदा घनन् ॥ कृता नि सान कृष्ण घ्नै गर्ता विरक्षा धने ॥ ॥ अथ कैक क

टीनां निलोकीतकुशाः॥ ॥ कंकटैश्चनेतिकीकट्टैर्वर्तुकावर्कैः॥ कृमिरक्षारथादनाधानुगुल्मानाहकरा
 ग्रही॥ ॥ अथ शंखगुहाः॥ ॥ शंखेन शोहिमः पाकं कट्टः सदक नीलेयूः॥ कषायालेखनः पकि शूलपिरुक
 रुम्रनूत॥ ॥ अथ घृष्टासूतुं कोठीगुहाः॥ ॥ लघुशंखादयः शीतानेद्रुकुसुटनाशनाः॥ मधूनाः
 हृष्टविष्णुशगुनवः क्रुदितामताः॥ ॥ अथ वल्लस्य निवृक्तिः॥ ॥ धर्माधिनाशनाः सर्वे वमकस्मिन्नती
 वयन्॥ नतावल्लमिदं प्राकं शब्दशामुविशानदेः॥ ॥ अथ वल्ललक्षणाः॥ ॥ ॐ नृपदीडसूर्य्यन्दमनयः
 पूष्यनोगकः॥ वक्रवेष्टूर्य्यगमदपद्मवागाशमीनवः॥ वल्लान्यथापनत्तानि मूकभोकि कशुकका॥ प्रवाल
 श्वनशाकावर्त्यादीनि वक्रन्यपि॥ ॥ अथ शंखीगुहाः॥ ॥ न सर्वलेखनाः शीतामधूना सनाः॥ वक्रः
 व्याकिलमंगल्याग्रहदृष्टविषाग्रहा॥ ॥ अथ विषात्यल्लिलकक्षगुहाः॥ ॥ कालकूटीवत्सनाहः शृंगः

कञ्चप्रदीपनः॥ हलाहलौघञ्चपूशहाविदः सकुक्कस्तथा॥ सोनाक्षुब्धमिहि प्राकाविषरुदाश्रमीनव॥ कालकूटकः
सुवर्णधननत्रैर्विन्दुलितः॥ अर्थगुदवास्तुनसमवयथिमात्रिनोन्नास्तुनस्यरश्मिनास्तुनस्यनस्यपिप्लस
दृशस्तनानिर्यासः॥ अहिच्छप्रमलयकोकक्षगवीनपर्वतादिषूपययत॥ वत्सनालः सविन्दुवानसदृश
परशवत्सनालप्रकृतिः॥ प्रतप्तसीधवृक्षानवर्द्धनगङ्गाकः अस्मिन्गङ्गावद्धगङ्गादग्ध्वनधिवैरुवतिप्रदीपना
वकवर्धुनलप्रकासहादहकृन्॥ हलाहलनालप्रकाशनिर्नीलपशोरास्तुनाकृतिरुल्लोगुच्छः॥ प्रतप्तसीध
वृक्षादयापिदहन्ति॥ अयं हिमवतिकिस्किदायीनिकाकक्षदक्षिणसमूहगतवशायनवृक्षपूयः कपिलव
र्धुः सानकोमकोमलयादोरुवति॥ वृक्षक्षः पाथुनस्तुषूद्विधादहपूययकृष्टनाम॥ हानिदोहविदाशदृशः
सकुक्कः सकुक्कैवपूत्रिगीनवः सोनाक्षुः सुनाक्षुदशरुवतिवृक्षक्षः पाथुनस्तुषूद्विधादहपूययकृष्टनामः

प्रयुंजीतवधं शूलैव धायतु ॥ विषं प्राह हनं प्राकं व्यवायि च विकसि च ॥ आरमेयै वात करु कृथा गवाहि मदावहै ॥
 तदवयुं कियूकं तु प्राह कृच्च न सायनै ॥ योगवाहि पलै रश्मि वात कित्सन्निपात कित् ॥ ॥ अथ विषलकः
 हं ॥ ॥ अर्क कीने त्रिहि कीने लीगली कनवीनकः ॥ गुं जाहिरु नी धरुनः सफाये विष जातयः ॥ ॥ ॥
 ॐ नि श्री गुहा न त्रिमा लायी धा दू पधा तु य न सा य न स विषा य विष वर्ग थु र्थः ॥ ४ ॥ अथ गु दू या दिवर्गः
 ॥ गु दू ची कटू की लघ्वी स्वादू पा क न सा य नी ॥ सै ग्रहिणी कषा या सु वल्या निक मि दी य नी ॥ दा व प्र या म नू द ह सा ह
 का षा थ या धु ती ॥ काम ला कृष् वा ता मृ क मि द्र व व मि र्ज य नू ॥ ॥ अथ वि ल्व गु दः ॥ ॥ श्री रु ल मु व न रि
 की ग्रहि रू का मि पि रू क नू ॥ वा त रश्मि ह नी व ल्या ल घु नू लु थ या च नः ॥ विल्वे ग्रहि क रु या सु कटू दी य न पा च नै ॥
 रु यै वा लै ल घु स्त्रि र्थं ति कै वा त करु प है ॥ रु दै गु नू रि दी षे स्या दू र्ज नै पू ति मा नू र्ज ॥ वि दा हि वि रू क नै म धू नै व कि

मीयकृत् ॥ ग्राहिणीकरुवातामशूलघ्राविल्वपणिका ॥ कोचिकसेस्तिर्नविल्वमग्निसंदीपनैवने ॥ रुच्यैवचिकनेशक
सामवातस्यनाशनै ॥ रुलेष्यपत्रियकैयकुक्षवकुक्षवाहनै ॥ विल्वोदन्त्यत्रविह्वयसामैतद्विगुरुक्षरुने ॥ ॥ अथ
कैरुनिगुहाः ॥ ॥ काष्ठीनीतुवनातिकावीर्यासुमधूनागुनः ॥ दीपनीपावनीमध्वरुदिनीप्रसदापजित् ॥ दा
षरुसुमशूलार्णविषयहृदयापहं ॥ तस्यैवातलेग्राहितिकैशीर्तकषायकै ॥ पाकमधूनेसस्त्रिगंधंशुवनासैविव
न्धकृत् ॥ हन्याद्वाहृषावातनकपिरुक्कयकयान् ॥ ॥ अथपाटलाकाष्टपाटला ॥ ॥ पाटलाशुवलातिकाशु
क्षुदाषप्रयापहा ॥ अरुचिष्वासरुग्नाथामुच्छिदिहिकृत्पाहनः ॥ पूष्यैकषायमधूनेहिमैरुच्यैकरुमनूत् ॥ पि
रुतिसात्रदाहघ्नैशूलैहिकामुपिरुनूत् ॥ ॥ अथगनियानिगुहाः ॥ ॥ अग्निमन्त्रः स्वयथुहृदीर्यासुकरु
वातनूत् ॥ पाशुहृत्कटुकस्त्रिकमुवनामधूनाग्निदः ॥ ॥ अथसीनागुहाः ॥ ॥ रग्नानाकोदीपनः पाककटुक

मुवनाहिमः॥ग्राहीनिकोनलरसपिरुकाणमनाशनै॥दुर्मकस्यरुलेवालेवृद्धवातकरूपहै॥दृश्यैकषायैम
 धूनेलघुलोचनदीपनै॥गुल्मार्णःकृमिहृत्पौष्टगुर्ववातप्रकोपनै॥ ॥अथवृहत्यैचयैचमूललक्षःगुणः॥
 श्रीरुलःसर्वगोरुद्राघाटलागहिकालिका॥रश्मनाकाःयैचमःशार्कयैचमूलमिदंमहत्॥यैचमूलेवृहत्किंकः
 कषायैकरुवातनृत्॥मधूनेश्वासकाणघ्नमूलेलघुमिदीपनै॥ ॥अथसालोनिगुणः॥ ॥शालिपत्नी
 गुर्वद्विद्वन्श्वासानिस्तान्किन्॥रश्मषदाघ्नयहनीवृहत्पुष्टनसायनी॥निकाविषहनीस्वादःक्षितिकाशक
 मिबुधूत्॥ ॥अथपीरुषेनीगुणः॥ ॥पृष्ठबलुविद्योषधिवृद्धासुमधूनासना॥हन्तिदाहकान्श्वासनका
 निस्तान्बुद्धसी॥ ॥अथवृहतीगुणः॥ ॥वृहतीग्राहिणीद्रुयाघाचनीकरुवातकिन्॥कटुनिकस्यवैलः
 स्यमनावाचननाशिनी॥उष्णकूष्मन्श्वासमूलकाणमिमीशकिन्॥ ॥अथकटाक्षरश्मकटाक्षीगुणः॥ ॥

कैठका नीलमालिका कटका दीपनीलघुः॥ वृक्षसुपावनीकाशमसकनकसुनिलान्॥ निहन्ति पीनसंयार्धपीजकः
मिहदा मयान्॥ तथा रुले विपाकचकटकं न सरुदनै॥ नचनैदयैतिकैपिकामिहलघुः॥ हन्यान् रक्षसमनूत्कैशू
काशमेदः कृमिहनात्॥ तदस्याकासिता कृदा विरभा फलका विधी॥ ॥ अथ रगा कृत्र गुणः॥ ॥ रगा कृत्र
भीतल स्वादुर्वल कृद्वि रभा धनै॥ सधूनः दीपना वृष्यः पूष्टि रक्षस विनूक् प्रधूत्॥ प्रमेहश्चासकाशार्धः कृदु
दुद्रागजिह्व॥ ॥ अथ लघूपैव मूलस्य गुणः॥ ॥ लघूपैव मूलस्य गुणः कौ० कावीदयै तथा रगा कृत्रः पैः
चमः प्राकैपैव मूलमिदं लघुः॥ पैव मूलं लघुः स्वादु वल्यै पिडा निला पहं॥ नात्युष्णं हृदं ग्राहि दानश्चासास्म
नी प्रधूत्॥ ॥ अथ दशमूलः॥ ॥ प्रताप्यैव मूलात्यौ दशमूलमूदा हनः॥ असाकाशमित्रः पीजकनरु
दिपनैवकात्॥ तद्वि रक्षनानाह नूविपार्धवृक्षो जयत्॥ ॥ अथ वासोस्य गुणः॥ ॥ वातको वातकृत्स्व

यंकपि कृष्णनाशनं ॥ त्रिकम्बुवनकोट्यलघुः शीतलुः उतिहृत् ॥ अस्काशकनकद्विंसहस्रकयापहः ॥ ॥
 अथ जीवन्तिर्जकं सवन्मधुनयूष्यत कुक्षः ॥ ॥ जीवन्ती शीतला स्वादुस्निग्धा दीपययापहः ॥ वसायनी वलक
 नीचक्रवाग्रहिती लघुः ॥ जीवन्ती रूलमन्यकं मधुनैव हसं गुवः ॥ ॥ अथ पर्यटस्य गुप्तः ॥ ॥ पर्यटारु
 निपि कृष्णप्रसूतकुरुक्षान् ॥ सैग्रहि शीतलस्त्रिकोटाहान् अतली लघुः ॥ ॥ अथ माषपल्लि गुप्तः ॥ ॥
 माषपल्लुहि मातिका नूका शुक्रवला सक्तु ॥ मधुना ग्रहिती रभाषवातपि कुरुक्षान् अनूत् ॥ ॥ अथ मूत्रपल्लु
 गुप्तः ॥ ॥ मूत्रपल्लुहि मातिका मधुना तिक शुक्रला ॥ चक्रवाकत रभाथप्रिग्रहिती कदाह कुरु ॥ दीपययहरीः
 लघ्वी ग्रहस्थ रभाति सानजिन् ॥ ॥ अथ जीवनीय गुप्तः ॥ ॥ जीवन्ती सूर्यपल्लुयूका काल्यो जीवकर्षको ॥ सो
 मदयस्त्री तिमधुना जीवनीयगर रभा गुवः ॥ शुक्रकृद्वहः शीतः सुखगर्ल करुप्रदः ॥ वकपि कुरुक्षार रभाषकनदाह

कयापहः॥ ॥अथसूक्तैवधुनकेवधुयार्गुमाः॥ ॥उलधुयुगैमधुनसूक्तैगुनविनाशयत्॥धूलिणाथकटीवः
स्तीक्ष्णःपीडादन्तवान्॥बुध्नासकलानाहकाशकृष्टममान्तान्॥उनधुपयवातघ्नैकरुमिविनाशनै॥
सूयदाप्रहर्षनकपिरुप्रकापनै॥रूयग्रपल्लवैगुल्मवस्तिधूलहनैपनै॥करुवातकृमिहृन्निवृद्धिसमः
विधानपि॥उनधुपूष्यवातामकरुपिरुविनाशनै॥उनधुलसूयैगुल्मधूलनिलायहै॥यहृत्प्रीहादना
रार्घ्यैकद्वैदीपनैपनै॥तद्वत्सकृच्चविहृदीवातरक्ष्मादनापहः॥ ॥अथअर्कगुहाः॥ ॥अर्कद्वयै
सुनैवातकृष्टकधुविषवृक्षान्॥निहन्तिहृत्गुल्मारार्घ्यैकद्वैदीपनै॥अर्कस्यपूष्यैमधुनैसति
कैकृष्टकृमिघ्नैकरुनाशनैव॥आखाविषहन्तिचनकपिरुसैग्रहिरागरुचहिससगुल्मै॥अलर्ककसूमेवृः
धूलघ्नीपनपाचनै॥अवाचकप्रसकार्णकाशसनिवातर्ष॥दीनमकर्षस्यतिकोसुंतिगंधंसलवहंलः

गु० न
३४

धूः॥ कृष्णगुल्मीदवहनेरश्वमेतद्विलचने॥ ॥ अथ सईदस्य गुधः॥ ॥ सईउत्रचनतीक्ष्णदीपनः कटुकी
गुनः॥ शूलमास्तीलिकाधानकरुगुल्मीदनानिलान्॥ जन्मादमेहकृष्णार्शः॥ अथ सदीस्य पाथुता॥ वृक्षाध्माश्विनः
प्रीहविषदूषीविषहनेन॥ उरुवीर्यमुहीकीनेस्त्रिगुं सकटुकीलघूः॥ गुल्मिनीकृष्णिनीचापितरथेवादनगीगि
र्मा॥ अथ सईदस्य गुधः॥ ॥ सातलाकटुकापाक
वातलाभीतलालघूः॥ तिकाश्वकृष्णनाहपिक्वादावर्कनकजिन्॥ ॥ अथ कविहारी गुधः॥ ॥ कः
लिहारीसनाकृष्णश्वार्श्ववृक्षशूलजिन्॥ सकानाश्वजिहिकाकटुकातुवलासताः॥ तीक्ष्णकृष्णमिन्ः
लघ्वीपिक्वालागर्तपातिनी॥ ॥ अथ सविककनेनस्य गुधः॥ ॥ कनवीनद्वयैतिकैकषायैकटुकीमर्त
॥ लाघवप्रकर्षनेनप्रकापकृष्णवृक्षयह॥ वीर्यासृक्कमिकैरुचैरुदनेविषवस्मर्त॥ ॥ अथ पीतपूष्यस्वगन्ध

माला
३४

[illegible]

गु० न
३५

यमूखे विह्वलिवक्रिहृत् ॥ करुहृत्पिहृत्कृत्ग्राहिजन्तुकृत्प्रमहजिह्व ॥ ॥ अथ कूटवीजस्य गुणः ॥ ॥
कूटजः कटुकोटुकोटीयनस्तुवनाहिमः ॥ अरुणमिसानपिरुमुकरुत्सुमकृत्नूत् ॥ ॥ अथ विलोना गुणः ॥ ॥
अस्मीनस्तुवनाग्राहिभीतोयैलेखने गुनः ॥ सीग्राहिकरुवागोघ्रिविवन्धाधानकावकान् ॥ ॥ अथ कचनान
नहृदकोल्लाननयो गुणः ॥ ॥ काचनानाहिमाग्राहितुवनः ॥ श्लष्मापिरुनूत् ॥ कृमिकृत्सुगुत्तुप्रैशगैधुमा
लाहृष्टायहः ॥ कोविदाग्राहितदत्स्यारुयोः पूष्यतथालघूः ॥ नूदीसीग्राहियिरुमुप्रदवकयकाशनूत् ॥ ॥
अथ श्वेतनीलपूष्यसिंदूवाननयो गुणः ॥ ॥ निगुंजीलमिदानीककषायाकटुकालघूः ॥ कश्चनप्रः
हिताहृन्निशूलश्वेतममावतान् ॥ कृमिकृत्सुविरश्लष्मावनीनीलापितद्विधा ॥ निगुंष्टिपयैकृमिजिह्वानः
श्लष्माहृनेलघूः ॥ निगुंष्टिपूष्यनिकोर्कृमिवातकरुपहृ ॥ गुल्मलीहानूचिकृत्सुकीर्णरुतयत्कटु ॥ ॥

माला
३५

अथ काका कनैजः ॥ न कनैजः न या गुं ॥ ॥ कनैजः कट्ट कती क्री वीर्या सुया निदा यजिन् ॥ कृष्ण दावर्ग गुल्माः ॥
 ॥ वृक्ष कृमि विषा यहं ॥ नरु लै करु वा न द्यै मदीर्घः कृमि कृष्ण नृन् ॥ न त्य श्री करु वार्धः कृमि र ॥ थ ह नै प नै ॥ तद
 नै कट्ट कं पा क न स दी प न पा च नः ॥ करु वा न ह नः ॥ ॥ रु विषा र्ध कृमि कृष्ण जिन् ॥ ॥ अथ नृष कनैजी अना
 त्रिन्ति च न स्य गुणः ॥ ॥ कनैजी रु र नी तिका गु व ला कट्ट पा किनी ॥ वीर्या सु व मि वा ना र्धः कृमि कृष्ण प्र मः
 ह नृन् ॥ वीर्या सु कृ स्र मी न स्या स ति कं करु वा न नृन् ॥ ॥ अथ कं ॥ ॥ कपिक रु प नै वृष्णा म धू नै वृ ह क्षी
 गुनः ॥ तिका वा न ह नी व ल्या करु पि रु म ना णिनी ॥ न द्दी जी वा न स म नै वा जी क न क्ष मू रु मी ॥ ॥ स न अ न क गुं
 जा न स्य गुणः ॥ ॥ गुं जा क ष्ण व ल क नी वा न पि रु क ना य ह ॥ मू ख सा ष प्र म ष्ण स म द नृ सु वि ना णिनी ॥ नः
 ज म य ह नी वृष्णा हं ति क धू ग्र ह व द्मा न् ॥ कृ मि द लू फ कृष्ण नि न द नृ र्ध ना पि ष ष्ण र्ध न् ॥ ॥ अथ नो हि क्षी गुणः ॥

७०२
३७

स्यामीसनाहितीवृष्यासनादोषप्रयापहा ॥ ॥ अथ हउसंघानिगुणः ॥ ॥ अस्ति संहारकः प्राकः रक्षमावा
नहनीस्त्रियुक् ॥ सनीषः कृमिदूर्नामनाशनीस्त्रविकारवान् ॥ स्वादुर्दृष्यालघून्कः पावनः पिरुलामनः ॥ ॥
अथ का निगुणः ॥ ॥ कृमानीरुदिनीभीतातिका नेयावसायनी ॥ मधूनामदिनीवल्यावातविषप्रधून् ॥ गु
ल्महीहयकृद्विद्विक्कुरुवहनीहवन् ॥ ग्रंथानिदग्धविस्फुटवकपिरुत्वगामयान् ॥ ॥ अथ सद्यर्गिः
गुणः ॥ ॥ मधर्गिनीवसतिकावातलाप्तासकाशहा ॥ नूकापाककदः पिरुवधरक्षमादिशूलनून् ॥ मधर्गि
गीरुलीनिकैकृष्टमहकरुप्रधून् ॥ दीपनैस्त्रसनैकाशकृमिवृक्षविषायहे ॥ ॥ अथ पुनर्नवातस्य गुणः ॥ ॥
पुनर्नवानूक्षानिकाकदपाकहिमालघूः ॥ वातलाग्राहितीरक्षमापिरुवकविनाशिनी ॥ ॥ अथ स्वगन्ध
स्य गुणः ॥ ॥ अथ गन्धानिलरक्षमा रक्षामिष्टप्रदयापहः ॥ वल्यावसायनीतिकाकषायोस्तुतिगुक्कलाः ॥

माला
३७

अथ प्रसावणी गुह्यः ॥ प्रसावणी गुह्यं संधानवलकृतसना ॥ वीर्यासु वात कृत्तिका वातनककरायहा ॥ ॥
अथ सतावरी गुह्यः ॥ सतावरी गुह्यः शीतानिका स्वादीनसायनी ॥ मन्दाग्निपूष्टिदास्त्रिधनश्या गुल्मानि सान
जित् ॥ शुक्रस्रुवरी वल्गा वातपिकुसुम्भरुजित् ॥ ॥ अथ महासतावलितस्य गुह्यः ॥ ॥ महासतावरी
मध्याह्न्या दृष्ट्या नसायनी ॥ शीतवीर्यानिर्हृत् ॥ ग्रहणी नयनामयान् ॥ तदकूनक्तिदाषध्यालघूनर्धः कयाप
हाः ॥ ॥ अथ वनिशवउवनशरसहदवा ॥ तित्तकर्क ॥ गुनसकरी ॥ गनसखली ॥ तित्तवतषी गुह्यः ॥ ॥
वलावतुष्टयै शीतै मधूने वलका किकृत् ॥ त्रिधनग्रहि समीनापि रुस्रकयनाशनै ॥ आसीदृहदला कृच्छ्रः
किवातानूला मनी ॥ गुर्वी नागवला दृष्ट्या विरभायादपि रुजित् ॥ वल्गा नसायनी पूस्त्ववर्धनी दृहणी तथा ॥ न
स्याः रुलेहि मीस्वा इस्करुने गुनलेखनी ॥ विवंधानजनने नकपिरुनिवर्हर्ष ॥ ॥ अथ रुलहद गुह्यः ॥ ॥

७०८
३१

[illegible]

माला
३१

नक्षत्रानुगुणः॥ ॥मूर्वासनायुवस्वाइलिकापिरुसमहनू॥विद्योषरुसाइकागकधुक्कइकायहा॥ ॥अथ
जीवचूतनक्षत्रानुगुणः॥ ॥मौनैशमधुनादाहकनरुटकरुपिरुइरु॥ ॥अथवतस्यगुणः
॥वतसःशीतलोदाहरणारुर्णयानिरुक्ववधत्॥हकिविसर्प्यरुइसुप्रपिस्मनिकरुनिलान्॥ ॥अथजल
वतसगुणः॥ ॥जलजीवतसःशीतःसंग्राहीवातकोपनः॥ ॥अथशीतजलगुणः॥ ॥रुगवाकःकटुति
कोरुकोरुकरुवातनू॥कथःशुच्यःकमिधुसंकाशरणथामपाधुनू॥दंश्यानसायनैवल्यःकृष्टनप्रभिराति
जित्॥ ॥अथउरुमानीरुयवनान्नाप्रसिद्धीषधीरुगुणः॥ ॥उरुमानवीकाशीताकषायावधरणधिनी॥दद
यानिरुजामरुमृगकृष्टनिलप्रधु॥रुलंस्याइरुमानवधसकावदीपनैलघुः॥कटुर्कतिकविषदविषघ्नीपिरुका
पनी॥ ॥अथसनकलीगणवदितयास्तुगुणः॥ ॥शतपुष्पीकटुतिकोवामनीकरुपिरुजित्॥ ॥अथश

गु० न
३८

यसाधगुहः॥ ॥ शायनी तु वला निक सना पिरु करायहा ॥ कनक द्योग गुल्मासु प्रभूल विष प्रदुर्ग ॥ ॥ अथ
सात्रिवास्वित सात्रिवागुहः॥ ॥ सात्रिवायुगले स्वादस्त्रिग्धं शुक्रवले गुहः॥ अग्निमांदन विष्वा सकाशा सविष
नाशनै ॥ दोष प्रया प्रप्रदन क्षाना निसा वनाशनै ॥ ॥ अथ यवासा इनाल लादयो गुहः॥ ॥ यासः स्वादुसः
नक्तिकी हिम म्बुवल कोलघुः॥ करु मदा मदशान्ति पिरु सुकूकूक काश किन् ॥ रुकु विसर्य वाता प्रवमिद्वन
हनस्मनः॥ यवा सक गुह प्रोका इनाल ला विष ग्वनैः॥ ॥ अथ मूली महा मूली दयो गुहः॥ ॥ मूलीनिका
कटु पाक वीर्या सु मधुनालघुः॥ मध्या गधु पवीरु कृक मिथान्य निपाधु नून् ॥ शीघ्र दानू च वः साल शीह मदा
गुदा र्क्षि दून् ॥ महा मूली मू जीव मू निरिः पत्रि की र्क्षि ताः॥ ॥ अथ चित्रि चित्रि गुहः॥ ॥ अथासा र्ग सनाः
तीक्ष्ण दीपनः कटु निककः॥ पाचनी नावन च्छर्दि करु मदानिला पहाः॥ निहन्ति दद्रु सिध्वा र्णकं दूधूलोदनाय

माला
३८

वी॥ ॥ अथ शानक विविचित्रिगुणः॥ ॥ अथ मारुगान्तरा वागविहरी वागकृदिसः॥ नृकः पूर्वगुरो नूनः कथिता
गुनवदिरिः॥ नदीर्ग विमलैस्वाङ्गसपाक सुदुर्जनै॥ विहरी वागलै नृकै नकपिरु प्रसादनू॥ ॥ अथ दन्दि
यगुणः॥ ॥ दन्दिद्वयै सनै पाक वसव कदू दीपनै॥ गुदी कनास्मभूला सुकै नृक सुविदाहनू॥ तीक्ष्णै हन्ति वाता
मुक रूपा रथा दन कृमिन्॥ रुद्र दन्ती रुलै दुस्मात्सधूनै न सपाक योः॥ शीतलै सुख विदू मृग न रथा थ विषा य है॥
अथ जयपाल गुणः॥ ॥ जयपालै गुनै सिग्धै नवी पिरु करुण है॥ न सपाक च सधूनै वली वृष्यै च वै हर्षै॥ निहः
किनिल दाहा मुका ष कृदु कन कयात्॥ ॥ अथ स्वतपनिबल गुणः॥ ॥ नृवृत्तिका सना नृका स्वादु नृः
सुसमी न किन्॥ कदू पाक कन रथ मपिरु रथा रथा दवा य हाः॥ ॥ अथ मयपनिबल गुणः॥ ॥ काला
विहृदिन गुण न स्या मीष विन चनै॥ मूर्छा दाह प्रमथानिक रथा कर्षक का विधी॥ ॥ अथ नृवृत्तिका सना नृका स्वादु नृः

गु० न
३९

यगुः॥ ॥ गवादनी द्वयं तिकै कट्ट पाक न सैल घूः॥ वीर्या स्वाका सला पिरु करु सी हाद ना पहं॥ ॥ अथ नील
गुः॥ ॥ नीलिनी वचनी तिका कस्या माह प्रमा यहा॥ रुक्म हन्यु दन श्री ह वा न न क करु निनी॥ अम वा न सदा व
रुं स द व विष मू द न॥ ॥ अथ सनयू खा गुः॥ ॥ सनयू खा य कृ सी ह दू द व द विषा य हाः॥ तिका क षा य
का षा म षा स द न ह नाल घूः॥ ॥ अथ अं को ट र ना नि च गुः॥ ॥ अं को ट कः कट्टः स्निग्ध सी दू द रु मु
व नील घूः॥ वचन कृ मि षू ला म र षा रु य ह विषा य हाः॥ विसर्प क रु पि रुं स मा ष क थ विषा य हाः॥ न रु ले नी न ले
स्वा दू र ल षा घूं वृ ह नी गु नूः॥ व ल्यै वि न च नै वा न पि रु ह क या म जि नू॥ ॥ अथ चर्म नै ग गुः॥ ॥ चर्म नै ग
स ना तिका क षा या क रु पि रु जि नू॥ रुक्म वि ष कं दू षा स गु ल्म व म्य थ ना शि नी॥ ह नि दा हा द ना ना ह र षा थ कू द
व मि द ना नू॥ च र्म नै ग रु वं पू षी म ह कृ मि व मि प्र षू नू॥ रुक्म घूं स क का यै च न शी नू चै व दू र्ज नै॥ न दी रु म धू न म

माला
३९

हृषीकेशवृद्धिकर्तृमर्त॥ ॥ अथ **रुद्र** स्वसाहसिप्रसावहासीलावल्लीगुह्यः॥ ॥ मार्कण्डिकाकृष्टहनीउध
स्वकृष्टसाधिनी॥ विषदुर्गन्धकाशघ्नीगुल्मादत्रविनाशिनी॥ तस्मैलैतुवर्तनिकैपिरुद्रन्माहनाशनं॥ त्वाद्रपाकनि
लहर्तृगुनशुक्रकयापहं॥ कृष्टकृमिघ्नीहहर्तृदीपनैवल्लुकृत्यनं॥ ॥ अथ **कैवर्त्या** गुह्यः॥ ॥ काकमाचीः
प्रिदाघघ्नीस्त्रिगुह्यस्वत्रशुक्रया॥ तिकानसायनी॥ रुद्रकृष्टाणां हनमहजिन्॥ कटूनग्रहिनाहिकवमिहृदी
गनाशिनी॥ ॥ अथ **वनयोरनिकैवर्त्या** प्रहृदगुह्यः॥ ॥ वनयोरहिमाद्रुद्राहृदिनीश्वासकाशजिन्॥ ॥
अथ **कीर्त्या** गुह्यः॥ ॥ काकनाशाकषायोक्तुद्रकानसपाकयोः॥ करुघ्नीवामनीनिका॥ रुद्रार्णविश्वक
ष्टहाः॥ ॥ अथ **काकजंघा** गुह्यः॥ ॥ काकजंघाहिमातिकाकषायोक्तुद्रकानसपाकयोः॥ निहकिह्वनकृष्टात्र
ब्रह्मकंदूविषकृमिन्॥ ॥ अथ **विध्वान** गुह्यः॥ ॥ वृद्धदात्रः कषायोक्तुद्रकानसपाकयोः॥ वृद्धावातास

वाताशः ॥ १ ॥ रुमहकरुप्रधुत् ॥ शुक्रायुर्वलमध्वगिस्वनकातिकनः सनः ॥ ॥ अथ दवदानी गुष्मः ॥ ॥ दवदानी
 नसतिकाकरुशः ॥ १ ॥ रुपाधुतः ॥ नाशयेदामनीतीकुकयहिष्माकमिह्वान् ॥ दवदानीरुलैतिकैकमिरक्ष्मा
 विनाशनै ॥ स्वसनैगुल्मधुलैघेसर्षधैवातजित्यनै ॥ ॥ अथ नागकली गुष्मः ॥ ॥ नागिनीनीचनीतिका
 तीकृष्णकरुपिरुनूत् ॥ विनिहन्तिविषैधुलैयानिदोषवमिह्वान् ॥ ॥ अथ हंसपदियुष्मः ॥ ॥ हंसपादी
 गुनः ॥ भीतीहन्तिनकविषवृक्षान् ॥ विसर्पदाहातिसानहनाहनादिनोहिधी ॥ ॥ अथ सामलना गुष्मः ॥ ॥ सा
 मवस्त्रीविदोषघ्नीकटुतिका नसायनी ॥ ॥ अथ वटपशीवउचवनीचञ्चुतिचनकुष्मः ॥ ॥ वटपशीकषा
 यीसुयानिमृगदायहा ॥ नरुलैतनूनैभीनैसधूनैकरुपिरुजित् ॥ कषायैलखनैरुद्विवन्धध्वानवान
 कृत् ॥ ॥ अथ लङ्कानुशा गुष्मः ॥ ॥ लङ्कानुशीतलातिका कषायारक्ष्मापिरुजित् ॥ नकपिरुमनीसानैः

यानिनागान्विताशनैः॥ ॥ अथ अटलैवृथालकुल्लहदलस्य गुणः॥ ॥ मदीगलालचूत्वाइः कृमिपिरुकरूप
 हाः॥ ॥ अथ मूषरीकंदतालमूलीं निचतकुणः॥ ॥ मूषरीमधूनावृष्यावीर्यासुहृहलीगुनः॥ निकानसायः
 नीहकिगुदजात्यनिलकथा॥ ॥ अथ वीरुमखीसा गुणः॥ ॥ वध्याकर्काटकीलघ्वीकरुद्रवृक्षरक्षाधिनी॥
 सूर्यदूर्यहनीतीक्ष्णविसूर्यविषहानिनी॥ ॥ अथ स्वतपूषीनीलपूषी अथ नाकितागथा गुणः॥ ॥ अथ ना
 किनकटुमरुध्वरुणकलुसूदृष्टिद॥ कृष्णूलगिदीषामरुणथ ब्रह्मविषापहाः॥ कषायकटुपाकचनिकचः
 स्मृतिवृद्धिद॥ ॥ अथ शंखपूषी गुणः॥ ॥ शंखपूषी सनामध्यापूष्यामानसनीगहन॥ नसायनीकषायी
 सुस्मृतिकान्तिवलाग्निदा॥ क्षयायः सनहताग्नीकृष्णकृमिविषवधूत॥ ॥ अथार्कपूष्य गुणः॥ ॥ अर्क
 पूषीनिलरश्मिमहचिरुविकानकिन॥ ॥ अथ दीधी गुणः॥ ॥ इग्धिकीसुगुनरुकावातलागर्हकादिनी

मधूनाकदस्त्रिकासुखसूत्रमलापदः॥ स्वाइविहीरिनीवृष्याकरुकुसुमिप्रसूत॥ ॥ अथरु० अरुनी
 गुहाः॥ ॥ लक्ष्मीवातकृत्तिकाकषायामधूनाहिमा॥ पिरुसःकाशपिरुसकरुपाधुदतापहा॥ ॥ अथ
 गुमागुहाः॥ ॥ दोक्षपूषीगुनूकास्वादसुवातपिरुकृत्॥ सदानलवभास्वादपाकाकदीचरुदिनी॥ करुस
 कारुलापूषीतमकभसजनुजित्॥ ॥ अथवनरी० निप्रसिद्धीषधीवृक्षमाधुकी० निदिनीयोषधीतयागुहाः
 ॥ ॥ ब्राह्मीहिमासनातीकुलधूमध्वचभीतला॥ कषायमधूनास्वादपाकापूष्यावसायनी॥ स्वर्णास्मृतिप्रदाकृष्ट
 पाधुमहासुकीजित्॥ विषकाशकनहनीतदवन्यैद्रपधिनी॥ ॥ अथरु० रुद्रदिनीयद्रुद्रुद्रुनयार्गुहाः॥
 ॥ सुवर्चलाहिमानूकास्वादपाकनसागुनूः॥ अपिरुलाकदूःकावाविहीरकरुवातजित्॥ अन्यानिकाकरोसुः
 लघूनूकासनाकदूः॥ निहन्तिकरुपिरुसुभसकाशरुचिद्वान्॥ विस्फुटकृष्टमहाप्रयानिरुक्तुपाधुताः॥

अथ सूर्यादी सत्रयोगिनी ॐ ति वना मस्या गुणः ॥ सूर्यादी कट्टिकी सुकृमिल कक्षिक ननी ॥ वृश्चिकार्ध सूर्या
र्ध विषष्टिवृक्ष नापही ॥ अथ मत्स्यादी मरुद्धी ॐ ति प्रसिद्धोषधी तस्या गुणः ॥ मत्स्यादी ग्राहिणी शीता क
क्षपि रुक्का पुनरू ॥ लघूतिका कषाया च स्वादी कट्टिविषा किनी ॥ अथ जलपिप्ली गुणः ॥ जलपिप्ली
लिका रुद्रा च कृष्णा शुक्रला गुनः ॥ सै ग्राहिणी हिमा नूका नका दाह वृक्ष पहाः ॥ कट्टिका कनसा नूचा कषाया वक्रिव
र्द्धनी ॥ अथ गरुडि गुणः ॥ गरुडि कवा तला शीता ग्राहिणी कक्षपि रुनरू ॥ रुद्रा प्रमहकाशा प्रवृक्ष कनहरी
लघूः ॥ कोमला गुवलानिका स्वादुया कनसा मता ॥ अथ नागदसनी गुणः ॥ महायोगश्चरीतिका कट्टः
काहन निवृक्षानू ॥ नकाग्रह विषे सूर्यरुता गन्धरु जाल कानू ॥ वृश्चिका मला वल्या सर्व वस्य कनी स्मृता ॥
अथ अनवरनवन गुणः ॥ वल्लभान सपा कनिक रू सुकक्ष पहा ॥ मूयघातात्मजि ग्राहिया निमूयानिः

लार्हिकिन् ॥ ॥ अथ चिकिती गुणः ॥ ॥ चिकिका कटुका नूयानी कू सुवक्रि पिरु रुत ॥ नकानिल हनी कू सुकमि
 वान करु पहा ॥ ॥ अथ आकाशवेली गुणः ॥ ॥ खिवली ग्रहिणी किका पिठिला अमया पहा ॥ गुवनामिकनी
 दृश्या पिरु रू आमना सिनी ॥ ॥ अथ सामान्यनी वेदा गुणः ॥ ॥ वेदाकाः स्याद्विनातिका कया यो मधू नवसः
 ॥ मंगल्यः करुवाता सुनदी वृक्ष विषा पहा ॥ ॥ अथ पतुल तल लं तल रुस्य गुणः ॥ ॥ नदीकाकः कटु नि
 का कया लेखन स्मृतः ॥ वला समे दो म हा मु रु मि रणा था दवा पहा ॥ ॥ अथ समरी गुणः ॥ ॥ अरुगन्धालघू
 नूया दृश्या नूट करु वान किन् ॥ ॥ अथ गन्धवर्ध गुणः ॥ ॥ अरुगन्धानिकनी कू नूका दृश्या मि वर्धनी ॥ दृ
 यमीय कनी लघ्वी शुक्र वान करु मुदुत ॥ पिरुला रुमिद दू घ्रासना कद्वि विदाहिनी ॥ ॥ अथ स्विनव कयीतनी
 लघू व्यरुदन चतुर्विधः कटु स नू वान रुत ॥ ॥ सैनयः कू सुवाता सुकरु कथु विषा पहा ॥ तिकी सु मधू नः कस्यः

सुस्निग्धः कषात्रैर्जनः॥ ॥ अथ मूला कानी गुणः॥ ॥ श्रानववर्षिकदृष्टिका कषायाशीतलालघूः॥ विषाकक
द्रुका मूत्रकफामयकमिप्रभूत॥ ॥ अथ मखावा गुणः॥ ॥ दूनकः शीतलावृष्यः स्वादुस्निग्धपिच्छिलः॥ तिः
कोवातामवातामरुक्कादृष्टिनिलाप्रजित्॥ ॥ दूनस्यरुले स्वादुतिको सारुविषाग्रह॥ शूलपाथुदनानाहवातमूत्रवि
बन्धनूत॥ ॥ अथ कपास गुणः॥ ॥ कर्पासकोलघूः कोष्णमधूनीवातनाशनः॥ तत्फलैवसमीवघ्नैवकद्वत्
मूत्रवर्धन॥ उत्कलुपिषुकोनादपूयाप्रविषनाशन॥ तद्दीर्घतदन्यैवृष्यैस्निग्धैकरुक्कनैर्गुणः॥ ॥ अथ कूक
नवदगुणः॥ ॥ कूकनन्दः कदृष्टिको दानवककषाग्रहः॥ ॥ अथ हाठरुली गुणः॥ ॥ वामरुथहनीकृष्ट
करुपिरुहनीसदा॥ ॥ अथ आनामसालि गुणः॥ ॥ देवगन्धाहिमार्ति कोकदृष्टिरुक्कषामुजित्॥ ॥
अथ बलाभीटा गुणः॥ ॥ बलाभीटा कदृष्टिको लघूः पिरुक्कषाग्रहः॥ मूत्रकृष्टविषघ्नीववृद्धिदिविविधार्थदा

अथ मृद सनावर्तंति नित्यं गुणः॥ ॥ दधाली स्वादुति कोष्ठाकरणाथा मुवातजित्॥ ॥ अथ गौं उपट्ट
 ००ति वनस्य गुणः॥ ॥ गुंदः कषायः शिशिरो मधूना न कपिरुजित्॥ ॥ कृत्य शुक्रवक्त्रा मूत्ररसाधनी मूत्रकृच्छ्र
 न्॥ ॥ अथ मोक्षंति रूक्ष विराम गुणः॥ ॥ ००वका शिशिरो वृकाचकृष्या वातकोपिनी॥ मूत्रकृच्छ्र स्मनी दाह
 पिरुक्षानि न नाशिनी॥ ॥ अथ मयूत्र शिखा गुणः॥ ॥ मयूत्रा कृत्ति खालघ्नी पिरुक्षप्राति सानजित्॥
 अथ लक्ष्मल क गुणः॥ ॥ रगादी न स दृग्भीषुषी नो मवल्ली समन्विती॥ न क विन्दु समीपं लक्ष्मका न मूत्रा न॥
 लक्ष्मालवक्ष्म नूका स्वादी वृष्या हि मा सना॥ गुर्वी वल्गा गर्हदा च हृहक्षी च त्रिदीष नून्॥ ॥ अथ स्वर्णवल्ली गु
 णः॥ ॥ कीचनी कृत्यदा मूर्ध्वव्यथा दीष प्रयापहा॥ ॥ अथ नीलदूर्वा गुणः॥ ॥ दूर्वा नीला हि मा तिका कः
 षाया मधूना जयन्॥ कुरु पिरु म्र विसर्प रूक्ष दाह त्वग मयान्॥ ॥ अथ स्विनदूर्वा गुणः॥ ॥ स्विनदूर्वा कषा

याचत्वाद्दीवत्वाच्चजीवनी॥तिकाधिसाविसर्प्यामृदुद्विपिरुकरुदाहजित्॥ ॥अथगीउवद्वीरभाववृत्तिचत
रुताः॥ ॥गंदूद्वीहिमालोहद्राविहीग्राहिहीलघुः॥तिकाकषायामधूनतिलकाकद्रपाकिका॥दाहन्सु
धनासामृकृष्टपिरुद्वनामहा॥ ॥अथकाशगुणः॥ ॥कारभाकूमधूनतिकास्वादुपाकाहिमामतः॥मृ
दुक्तुसदाहामृपिरुद्वयजगजित्॥ ॥अथदर्शगुणः॥ ॥दर्शकृष्टभाद्विपिरुवस्तिनृक्प्रदनामृजि
त्॥सूत्रिग्नःशीतलःस्वादुःकषायकफवातहा॥ ॥अथमूर्जगुणः॥ ॥मूर्जःकषायामधूनगुक्षुनृषति
दोषजित्॥दाहन्सुविसर्प्यामृमृगवल्गुकागजित्॥ ॥अथनलगुणः॥ ॥नलगुमधूनतिकःकषा
यासुकफामृजित्॥दृढस्थितानिमृगानिदाहपिरुविसर्प्यजित्॥ ॥अथवीरगुणः॥ ॥वीरःसर्वाहिमः
स्वादुःकषायवस्तिरभाधनः॥दृढनकरुपिरुहाकृष्टमृवृक्षभाहजित्॥तत्कवीनःकद्रपाकनसंनृकीगुनः

सनः॥ कषायः श्वेतः स्वादु विदाही वातपित्तनृत् ॥ तत्वास्तु सनातृका कषायः स्वादु पाकिनः॥ उष्णपित्तानिलकना
वर्द्धमृशकरोपहा॥ ॥ अथ वीरु कने निर्वृतिवत कुक्षः॥ ॥ चिकुका वातनिर्हारी श्वेतप्राधातुपृष्टिकृत्
॥ आरग्याविषवशस्य रुलेमस्य हृदनै॥ ॥ अथ टका निगुक्षः॥ ॥ टका वीवातजिक्रिका श्वेतप्राधी यनी
लघुः॥ ॥ आरथादनविथा हावी हितापी विसर्पिषां॥ ॥ अथ पानालगनू जीगुक्षः॥ ॥ क्लिष्टहिटः यने वृष्य
श्वेतप्राधः पवनापहः॥ ॥ अथ हिगुपशी वंशपशी नयार्गुक्षः॥ ॥ हिगुपशी द्रव्ये द्रव्ये नीक्षु कृपाचने कटुः
॥ दृढस्तिवृग्विवन्धार्शः श्वेतगुल्मानिलापहः॥ ॥ निशीगुक्षनत्तमालायी गुक्षुद्यादिवर्गः यंचमः॥ ॥
॥ ५ ॥ अथ वटादिवर्गः नशुगुक्षः॥ ॥ वटः शीतो गुर्ग्राहिकरूपितु वृक्षपहः॥ वरष्ठा विसर्पनृद्राहीकः
प्रायायानिदोषकृत्॥ ॥ अथ पियलगुक्षः॥ ॥ पियलदूर्जनः शीतः पित्तश्वेतवृक्षप्रजित्॥ गुर्गुवृक्षकी

नूकीवस्थायानिविस्थाधनः॥ ॥ अथपिपलरुदगजगंतुगुप्तः॥ ॥ रुलीसादूर्जनस्त्रिग्वृत्तिकरुप्रदः॥ रु
लेस्त्रिमधुनीमूलकषायः स्वादुमऊकः॥ ॥ अथवतिरुपीपननन्दवृक्षंतिवतकुत्साः॥ ॥ नन्दीवृक्षालघुत्वाद
स्तिकमुवनउरुकः॥ कदूपाकनराग्रहि विषयिरुकरामुनू॥ दाहयिरुकरामुद्रामदः पिरुमुरासरुददः॥ ॥
अथकीनवृक्षयेववल्कललक्षगुप्तः॥ ॥ न्यराधाइत्तनास्वल्पाविशस्रदपादपाः॥ येयेनकीनिस्थावृक्षा
रुषीमुर्वैववल्कनै॥ कविरुपाविशस्तनभिनीषेखनसंपन॥ कीनवृक्षाहिमावस्थायानिदोषवृक्षपहाः॥ नूका
कषायाभदोत्राविसर्पामयनाशनाः॥ रासरुपिरुकरामुद्राः सुन्यारुद्राहियागदाः॥ त्वग्यैवकहिमग्रहिवृक्ष
राथविसर्पनू॥ नषीपयैहिमैग्रहिकरुवातामुनूत्रयूः॥ विष्टैराधानजिरिकैकषायैलघुलेखनै॥ ॥
अथशंखगुप्तः॥ ॥ सर्कः कषायावृक्षधकधुः कदूस्तिकः कषायास्तुनियकृति॥ करुपाधुश्रुतिगदानेहकृष्ट

विषवृक्षः॥ ॥ अथ सारंगुहः॥ ॥ गजककुतुबनाभीनवीर्यातथेवच॥ पृष्टिरुद्रुधपिरुसुरक्ष्मपिरुति
 सानजिन्॥ ॥ अथ भीमवकपिलवर्षुसीसवदयागुहः॥ ॥ शिंशियाकट्टकातिककषायारक्ष्महात्रिती॥
 उरुवीर्यारुवद्रुदःकृष्टविश्वमिहमिन्॥ वस्तिनृबुधदाहामुजिन्॥ मरुमहबुधघ्ननश्चतुवनःकरुपिरुजि
 न्॥ ॥ अथ विजयसारंगुहः॥ ॥ वीरकःकृष्टविसर्पश्चिप्रमहगुठकमिन्॥ हकिरक्ष्मासुपिरुनित्व
 यःकरक्ष्मनसायन॥ ॥ अथ ववूनगुहः॥ ॥ ववूनःकरुनृग्राहीकृष्टकमिविषायहः॥ ववूनययैसीअ
 हिपूनृषव्याधिकाशजिन्॥ नृयैकट्टसुइर्नामकरुसारंगनाशन॥ ॥ अथ खयनगुहः॥ ॥ खदिनःभी
 तलोदयःकधुलीवककाशहाः॥ तिकःकषायामदीघःकमिमहकनवृक्षान्॥ शिप्ररक्ष्मासुपिरुसुपीरु
 कृष्टकरीजयन्॥ निर्यासस्तस्यमधूनीवल्यःशुक्रविवर्द्धनः॥ ॥ अथ खनखयनगुहः॥ ॥ खनदीविष

दीवः ॥ मुखनागकरा मुक्तिः ॥ ॥ अथ ॐ निमददुर्गन्धस्वदिनतनुः ॥ ॥ हा निमदः कषायास्तु मुखदन्तगदा
मुनूत् ॥ हन्ति कषु विषः स्रक् कृमिकृष्टवृक्षग्रहात् ॥ तत्फलैः निकमधुनैस्त्रिगन्धैः करुवातनूत् ॥ ॥ अथ नीध
गुप्तः ॥ ॥ अत्रिष्टकः त्रिदोषघ्ना गर्हपाती वृक्षग्रहः ॥ ॥ अथ पिता क्रिया गुप्तः ॥ ॥ पूर्य जीवैर्गुनैश्च घ्ना गर्हदः ॥ स
ष्वावातकृत् ॥ सुष्टु मूत्रमलादूको हिमः स्वादु कटुः पटुः ॥ ॥ अथ ॐ गुदगुप्तः ॥ ॥ ॐ गुदः कृष्टरुतादिग्रहः
वृक्षविषकृमीन् ॥ हन्त्युसुः श्विग्रहलघुः निककः कटुपाकवान् ॥ तत्फलैः मधुनैर्निकैस्त्रिगन्धैः करुवातजिह्व ॥ ॥
अथ जिगिनी गुप्तः ॥ ॥ जिगिनी मधुना सास्तु कषाया या निरुग्ना धिनी ॥ कटुका वृक्षद्विगवाता निस्ताननूत्कीटः ॥
मोदकीया न निर्वासानस्याद्यातव्यथा ग्रहः ॥ मूत्ररूपयनूत् सुनक मूत्रविवन्धकृत् ॥ ॥ अथ तमालगुप्तः ॥ ॥ त
मालः तालवस्त्राकीदाहविस्फोटकत्पूनः ॥ ॥ अथ तुनिगुप्तः ॥ ॥ तुनिनूकः कटुः पाककषाया मधुनीलघुः ॥

मिको ग्राहि हि मा वृथा बुध कृष्ण मयि रुजिन् ॥ ॥ अथ रजःपत्र गुणः ॥ ॥ रजः रजः ग्रहः श्रवण कर्तुं न कृपि रु
 न कृजिन् ॥ कषायस्त्रिक कटुकः स्निग्ध गदग्री गजिन् ॥ रजः संधान कृष्ण ग्रहः धर्म कृमि नृज यन् ॥ तत्पृष्ठी स्वादु
 कटुकं पाकं तु वन तिक के ॥ वातलै क रू पि रु म कृ सु जि का हि शी त लै ॥ रू द द ह क रू पि रु म कृ सु जि त् य न मी म नी ॥
 रु लै ल चू सु म हा र्श कृ मि वा न क रू पा र्ह ॥ वि पा क क टुकं नृ कं कृ सु गु ल्मा द न प्र धू न् ॥ स्त्री ह प्र म ह द र्ना म कृ मि शूल
 ह नै य नै ॥ ॥ अथ सिव त्रि गुणः ॥ ॥ मी न कः र्श त लो ग्रा हि स्निग्ध वृथ कषाय कः ॥ प्र वा हि का ति सा वा म क रू
 पि रु म द ह नू न् ॥ ॥ अथ कूट सं व त्रि गुणः ॥ ॥ ग्री ही न कः कटु स्त्रिकः स ग्री रु क रू वा न नू न् ॥ स्त्री ह द नः य रुः
 स्त्री ह मी स म द वि पा य हः ॥ रू ता ना ह वि व न्धा म क रू शूल नृ ज पा र्ह ॥ ॥ अथ धव गुणः ॥ ॥ धवः शी तः प्र म
 हा र्शः पा धू पि रु क रू पा र्ह ॥ म धू न म्बु व न रु स्य रु लै स्वा द कषाय कं ॥ हि मी नृ कं गु नृ रु क रू वा न लै क रू पि रु जिन् ॥

[illegible]

मृकृद्वाहिरुलेति गन्धकने गुनः॥ स्वादुस्समधूने पाकवान् प्रैकरुपिरुजिन्॥ ॥ अथ कनहि गुणः॥ ॥ कटं र
 वः प्रमहा मृना जीवन् विषकृमिन्॥ हन्त्युसुः करुदुष्टघ्नः कटुकः क्षीरपाकवान्॥ तस्युक्षं तस्युले हं यै विरक्षा वा
 कुरुषु क्रनून्॥ कटं रवस्य निर्यासः प्रमहा मृकृमी प्रधून्॥ कटुवृक्ष गुनवृद्ध्या वलकृद्वागनाशनः॥ ॥ अथ
 माषपर्वतवृक्षपादपाटलिनिर्यवृक्षास्तस्य गुणः॥ ॥ मूककः कटुकस्तिका ग्रासुसुः करुवागहा॥
 विषमद्यो गुल्मकक्षुवस्तिनूक्तु कुरुनून्॥ तस्युष्यै करुपिरुघ्नै कुरुकै र्विषप्रधून्॥ रुले मूस्त्रित्वं रदिदी
 यने गुल्ममहनून्॥ अनीचका मृगुका र्णटा ० नरस्यपिरुनून्॥ निर्यासास्त्ययने वृद्ध्याः रक्षा रुपिरुनिलाय
 हः॥ ॥ अथ सिनसः गुणः॥ ॥ भीरीषा मधूनी तु सुस्तिक श्रुवनी लघुः॥ दाघ रक्षाथ विसर्प्यघ्नः काशवृक्ष
 विषापहः॥ ॥ अथ देवसिनसि गुणः॥ ॥ देवाक्षुषि विषस्तिक स्त्री र्दुःकरुः कटुलघुः॥ सिनीविनवनी हन्ति

करुणिकानिलकमीन॥ ॥ अथ जलसिन्धुसंगतं निगुणः॥ ॥ विदोषविषकृष्टाः हनीवानीसिनीषिका॥ ॥
अथ समीगुणः॥ ॥ समीतिककटुः शीता कषाय यानेव नीलघ्नः॥ कर्मकाशप्रमथसकृष्टासुः कृमिकिन्मला॥ ॥
कृतिवनस्यगुणः॥ ॥ सफपरधुवधरश्मिवातकृष्टासुजनुक्तिन्॥ दीपनः श्वासगुल्मघ्नः त्रिधासुमुवनस्रः
॥ ॥ आर्कगलस्यगुणः॥ ॥ आवलमुवनलिकीवधरश्माधनलीपयः॥ रुलनुमधुनैतिकैकानपिरुकरासुः
क्तिन्॥ ॥ अथ वारधाटगुणः॥ ॥ निकैस्वादकषायचसशोषिष्यंदनाशनै॥ पिरुश्मविषहृद्रचैव्याघुटकै
स्मर्तै॥ ॥ रूटगुणः॥ ॥ रूटस्यारुलैतिकैश्मकृमिविनाशनै॥ पिरुलेगुनविष्टरीनचवीरुकरासुः
तै॥ ॥ अथ तिनिशतिनिद्रुंतिचतुष्टयः॥ ॥ तिनिशः श्मपिरुसुमदकृष्टप्रमहक्तिन्॥ मुवनः श्मिद्रुदा
हध्रावल्गुं कृमिप्रक्षूत्॥ ॥ रूटसहगुणः॥ ॥ काकः कषायः शिथिलीनकपिरुप्रसादनः॥ ॥ अथ तिः

७०२

४८

विगीतिसिगुहः॥ ॥तित्रिगिह्मिमुवनासतिका॥शावदाऊयन्॥वलासपिरु॥कार्णःशूलाध्यानवृक्षकमीन्॥
ॐतिश्रीगुहवत्तमालायीवद्यादिवर्गाःषष्टमः॥ ७ ॥अथामादिवर्गाः॥आमस्यगुहः॥ ॥आमैवालीकषाया
लीहृयीमानूतपिरुकुहू॥वद्धकषानमस्यलीहृयीदायप्रयासकृन्॥पक्षीमुसधूनेवृषीतिग्धैरुयीवलप्रद॥गुन्वाः
नहनैरूचीवर्धभातमपिरुली॥कषायगुनसावक्रिः॥शम्भुक्रविवर्धनै॥तदववृक्षसंपक्षीगुवानहनपनै॥
सधूनालीनसैकिचिन्तवत्पिरुप्रकापनै॥आमैकृत्रिमयक्षैतद्वत्पिरुनाशनै॥नसत्यास्यहानमुसधूनेवादि॥
षतः॥नूपितनस्यनेरूचीवलवीर्यकनैलघुः॥पाकिस्यादातपिरुहने॥तद्रसागालिसोवलीगुन्वीतहनःसनः॥अ
हृयकुर्या॥क्षमीवहंहृयःकरुवर्धनः॥नस्यस्वर्गुगुनपनैनवनैगुन्पाकिच॥सधूनेवृहृयवलीभातलेवातनाश
नै॥वातपिरुहनेरूचीवृहृयवलवर्धनः॥वृष्यवर्धकनैस्वाहृदग्धामैगुन्शीतली॥सैदानलत्वीविषमकनैचनका

माला
४८

मयैव च गुणदनेव ॥ आश्रयित्वा नयना मयैवा कथयितुं स्मादतिता निना ॥ प्रवदन्नासु विषयं मधूनासु पत्रं
तु ॥ मधूनासु नैव ग्रहितत्वाया गुणायनः ॥ पुच्छैरुत्तानूपा नैव स्यादाश्रयः सतिरुक्तः ॥ शीतकीवाप्रयोकवी सहसोव
चलनः ॥ ॥ अवापकगुणः ॥ ॥ यकस्य सहकारस्य कटविस्तारितानसः ॥ धर्मसूक्ष्मसूक्ष्मरु आश्रयवक्तुः
॥ तिस्रस्तः ॥ आश्रयवक्तुस्तुष्टिवातपिरुहनः सनः ॥ नूयैस्वर्योस्तुतिः वाकालचूवयत्रिकीर्तिताः ॥ ॥
अथकोलिगुणः ॥ ॥ आश्रयवीर्यकषायस्याद्यमीसाननाशनी ॥ ॥ षट्सं च मधूनेतथा हृदयदाहनूत् ॥ ॥
अथ अवावस्यगुणः ॥ ॥ आश्रयमसौवातघ्नं गुणवैवचिह्नसूत्रं ॥ यकनुवने स्वादनसपाकीहिमैसती ॥ तर्प्यं
लक्ष्मालेति गंधवृष्टीविष्टेति वृहदं ॥ गुणवली मनुष्यरुक्तदाहक्यासुक्तिः ॥ ॥ अथशरीरवावगुणः ॥ ॥
नाशानुवने स्वादविषदंभीलेगुणः ॥ अहिनूकैविर्वैधवावगतैरुक्तैरुपिरुनूत् ॥ ॥ अथकोशसूकोशसूत्रः ॥

निवत रुमाः॥ ॥ कोष्ठा मूकुर ॥ अथ पिशु वक्ष कदापहः॥ नरुले याहि वा न घ्न म स्त्रा सुल घृ पिशु नै॥ पक रुदी
 पने नृचै लघु सै करु वा न नृत् ॥ नत्म ऊ पिशु वा न घ्नः स्वा इ तु ल्या मि दी यनः॥ ॥ अथ कटहन गुक्षः॥ ॥ पन सै
 भीत ले पक्कं ति गंधं पिशु निला पहे ॥ नर्यं हं वृ हं स्वा इ मी स ले ॥ अथ ले र्भं ॥ वली शु क प्र दे ह कि न क पिशु क न क
 री ॥ अमं न द व वि दै हि वा न ले गु व री गु नः॥ दा ह रु त्म धू नै व ली करु म दी वि व र्ध नै ॥ पन सी रु न वी जानी वृ ध्या नि
 वि वि धा नि च ॥ अ नृ सी व द्र व र्धं सि रु द्र मू या क्षि ना नि च ॥ म ऊ न त्या पि पिशु घ्राः वृ ध्याः ॥ अथानिला पहाः॥ वि र्भः
 घा त्य न सै व र्धं गु ल्मी रु र्म च ला मि तिः॥ ॥ अथ वटहन गुक्षः॥ ॥ अम ल कू व मू सै त्या रु न वि दै के न था ॥ म
 धू रै व त था सै व दा ष पि न य न क रु न् ॥ ॥ अथ की रा गुक्षः॥ ॥ मी च्चा रु ले स्वा इ भी र्गं वि दै हि क रु रु रु नः॥ तिः
 गंधं पिशु रु रु द्दा ह क न क य स मी न रु न् ॥ पक स्वा इ हि मी पा र्क म धू रै वृ ध्या र्द ह र्भं ॥ रु रु न गु ग द रु नी ह र्भं रु वि सी स रु

न॥ मासिक्क मर्त्या मृतवधकाया रदाः कदल्या वहवाहवन्ति ॥ उका गुष्ठा रुच्यधिकैरुवन्ति निर्दोषता स्यालघूता च
तेषी ॥ ॥ अथ नाकं रुलेन स्य गुष्ठः ॥ ॥ नात्रिकल रुले भीतं इरुले वस्ति रभाधनं ॥ विष्टैरिष्टैरुहर्षवली वा न पिरु
मदाहनू ॥ विरभाधनः कोमलनात्रिकले निहन्ति पिरुक्कन पिरुदी यान् ॥ नदवजीर्णं गुन पिरुका नि विदाहिवि
ष्टैरि मर्तैरि षग्ली ॥ न स्या रुः भीतल रुयै दी घनं शुक्लं गुनः ॥ पिया सा पिरु कित्वा इव स्ति सुधिकने घनं ॥ नात्रि
कल स्य ताल स्य स्वकून स्य सिनी भित्तुः ॥ कषायस्त्रिग्वध मधून वैरु ह्मा नि गुन निच ॥ पूल्ल कय कय यथा कार्थं न
कपिरु निल विष ॥ प्रसक्तानि सचाप्रीसी भातानि नू विना शिव ॥ ॥ अथ ताल रुले गुष्ठः ॥ ॥ पर्वत ताल रु
ले पिरु रक्ष्मन् क विवर्धनं ॥ इरुर्नैव रु मूर्त्यै व न द्रा विषी द शुक्लं दं ॥ ताल मऊ गुन रुः किंच न मद क नील घूः
॥ ॥ रक्ष्म लो वा क पिरु घ्नः सस्त्रि हा मधूनः सत्रः ॥ ताल गै न रु सं गाय मती व म द रुत्त नं ॥ अस्ति रु नै न दान स्या स्त्रि

गु० ३
१०

रुद्रदातयवनूत॥ गालस्यमस्तुकीत्वाइवस्तिसूक्तिकनेयने॥ ॥ अथवेलरुलस्यगुप्तः॥ ॥ विल्वेवालेकषाया
सैकददीनयाचने॥ हयैग्रहिलघुस्तिग्धंतिर्कैवागकराग्रहै॥ रुद्रगुप्तत्रिदोषेस्माद्रुद्रनेयुतिमानूत॥ विद्याहिविष्ट
रिक्नेमधूनेवक्रिमीयक्रु॥ रुलपनिषकैयक्रुलवर्तुइधाकृत॥ विल्वदल्यमविहयमासैतद्विगुप्तारुने॥ ॥
अथकयथस्यगुप्तः॥ ॥ कपिन्मामसैग्रहिकषायेलघुलखने॥ पकैगुप्तुषाहिकसमनेवागपिह्रुक्तिनू॥
त्वाइस्त्रेगुवनेकी० ॥ अधनेग्रहिर्जले॥ ॥ अथकयथपत्रीगुप्तः॥ ॥ कपिन्मयत्रिकाहिककषायाकदूः
षाकिनी॥ गीह्रुस्रुक्रमिमदाघ्री॥ श्रुममहक्रमिप्रक्षरु॥ ॥ अथनानेगीगुप्तः॥ ॥ नानेगस्रमस्रुस्रुचैवा
गहनेसने॥ स्याद्वमलमपनेहयइर्कलेवागनाशनै॥ ॥ अथामृगरुलगुप्तः॥ ॥ अमृगरुलेगुप्तुचिकृत्वा
द्वसैवागक्रुहृषी॥ गुप्तेनिस्वरुलरूपेयन्धिमदरुवलेनू॥ ॥ अथनदोगुप्तः॥ ॥ स्यादामेतिर्कैग्रहिवा

माला
१०

गलेभीतलेलघुः॥पक्षिपिरुप्रमहासुरः॥समधुनेगुनः॥ ॥अथरुनंदजामुनिद्वयार्गुणः॥ ॥नाऊऊवूरुले
स्वाइविहरेतिगुनराचने॥ऊवूसंग्राहिहीनूकाकरुपिरुमुदाहनू॥ ॥अथवेविश्रयलकसगुणः॥ ॥पच्यः
मानेसमधुनेसोवीनेवनदेमहू॥सोवीनेवनदेभीनेरुदनेगुनः॥शुक्रली॥ईहनेपिरुदाहासुरकयसुनिलापह
॥सोवीनालघुसंपक्षिमधुनेकावसूचन॥कालेगुमधुनेग्राहिनूचसूचवातहू॥करुपिरुकनेचापिसान
कैगुनचस्ते॥द्रुस्वैकर्मकथिनेतत्कषायेतथास्तुकी॥मधुनेवरुवेतिगुनपिरुनिलापह॥सूचैतमग्निक
सर्वेलेलघुसुशुक्रमासनू॥ ॥अथपनिश्रवनागुणः॥ ॥लवलीरुलसम्राजःकरुपिरुहनेगुनः॥विष
देनाचनेरुहैस्वाइलुवननस॥ ॥अथकनोदाकनोदीगुणः॥ ॥कसमैददयेचामसलेगुनरुवाहन॥उ
सूचैकनेप्राकैवकपिरुकरुप्रदे॥तत्यैमधुनेरुचैलघुपिरुसमीनसू॥ ॥अथपिशाचविमोहीगुणः॥

वानः पिरुकरासुप्रः सुकूलैः मधुनैः गुनः ॥ त्रिगुणैः सर्वमनूतिरुदाहरुः साकनापहं ॥ पियानमकूमधुनीवृष्यः पिरु
 निलापहः ॥ दृशानिदुर्जनस्त्रिगुणैः विद्वेदीयामकोपनः ॥ ॥ अथ कटुं रुलविगमसुसुगुणः ॥ ॥ रुलैक
 टकिनः पकैः मधुनैः सर्वदोषजिह्व ॥ ॥ अथ गङ्गावीरुलगुणः ॥ ॥ काशमर्यः रुलमृदिद्वेस्वादपाकैः नसैहि
 मं ॥ अस्त्रैः वतुवने त्रिगुणैः मधुनैः कश्चिन्नायनैः ॥ वैहङ्गं गुनैः रुयैः वलवीर्यं विवर्द्धनं ॥ वातपिरुः रुषानकनकसूः
 शुविबन्धनूत् ॥ ॥ अथ सीखरुलसनां तिबनगुणः ॥ ॥ अनेरुलैः रुकभातैः मधुनैः सुकूनैः गुनः ॥ कषा
 यैः लेखनैः सुनैः वाताध्मानविबन्धकृत् ॥ पिरुदाहरुः साकाशकनकयविषासुजिह्व ॥ ॥ वनपीवनगङ्गाहं उब्
 वनिकपाकनिरुलगुणः ॥ ॥ कीनिद्वेकरुलैः मासैः कषायैः मधुनैः गुनः ॥ रुद्वेविद्वेति सैः अहिनकपिरुः रुपापहं ॥
 अथ द्रुम्वनरुलगुणः ॥ ॥ उद्वनवीरुलीः रुद्वेगुनः पिरुकरासुप्रनूत् ॥ मधुनैः सुवनीवः रुषावृषाधननीपनैः ॥

उद्धस्व नखिलाग्निद्विक्रम हनासि च ॥ स्फुर नानिकषायानि ॥ शब्द कर्दि हनासि च ॥ उद्धस्व नखिलेवाले कषायै स्वा
दूषातले ॥ नृणां हयिरुक्कृदि प्रदना प्रमुक्तिवधूत् ॥ श्रीदेवक मलेन स्य रुले गुनूत नै मर्त ॥ ॥ अथ सिंघा न गु
धः ॥ ॥ गंगाटकी हिमः स्वादु गुनूदृष्यः नसायनः ॥ ग्राही शुक्रानिल ॥ शब्द प्रदः पित्ताम्रदाह नूत् ॥ ॥ अथ गैरा
गुधः ॥ ॥ पञ्चवीर्य हिमैतिकै कषायै मधूने गुनूः ॥ विष्टै हि दृष्यै नृष्यै च गर्तै स्तुप नै पनै ॥ कर्वात कर्नै व
ली ग्राहि पित्ताम्रदाह नूत् ॥ ॥ अथ मखान गुधः ॥ ॥ मखान वीर्यमा ॥ ॥ तुनक पित्ताम्रदाह नूत् ॥ तदवयवैः
सैस्त्रै गुनू विष्टै हि दृर्जै ॥ ॥ अथ कुरुवला गुधः ॥ ॥ उर्कै कुरुवली वीर्यै स्वादु कर्हि मै गुनूः ॥ ॥ अथ खीः
विगुधः ॥ ॥ नागादन रुले वृक्षै वली स्निग्धै हि मै गुनूः ॥ नृणां नृणां मदग्राहिक यदा मया प्रनूत् ॥ ॥ अथ म
रुवा गुधः ॥ ॥ मधूकपूष्यै मधूने भातले गुनू हर्षै ॥ वल शुक्र कर्नै प्राकै पित्ताम्रदाह नूत् ॥ रुले भीतै गु

७०२

५२

नृत्वा इषु क्लीवा न पिरु कृत् ॥ अहं यीह निरुक्ता दाह ॥ स कृत कृतान् ॥ ॥ अथ रुन सा गुणः ॥ ॥ पत्र पर्व कक्षा
या सप्त मा सी पिरु लैल धूः ॥ पर्व कु सधू नै पा क भी नै पिरु विरु रि वृ हर्ष ॥ इ यी इ विरु दा हा स कृत कृत स सी व स्रुत् ॥
॥ वृह नृ कृ नृ सा कृत नृ नि प्र सिद्ध नृ रु साः ॥ ॥ कृतं गु नृ हि मं पर्व स्वा इ पिरु नि ला प है ॥ उ र्दं गु नृ स र्व सा सप्त मा सी
नृ क पिरु कृत् ॥ ॥ अथ अनान गुणः ॥ ॥ स्वा इ स्वा इ सप्त मा सी च वि वि धं दा डि मी रु लै ॥ नृ पी स्वा इ प्रि दा व घ्ने
रु दा ह कृत न ना भ नै ॥ रु क्त रु स्रु व ना ग घ्ने न र्यं शं गु क्ली गु नृः ॥ कक्षा या गु नृ सी अ हि त्रि ग्धं म धा व ला व हः ॥ स्वा इ लै दी प नै
नृ ची किं वि लि र्क क नै ल धूः ॥ अ हं गु पिरु कृत न नै मू र्दं वा न क रु प है ॥ ॥ अथ क हि अ गुणः ॥ ॥ क न कं गु नृ स्व स्वा
इ गु व नै क रु वा न डि नृ ॥ कृत नै र्म ल्य कृत नै र्म दा ह रु र्द वि ष गु ल्म नृत् ॥ भी न लै न र्म लै न क पिरु ह नै प नै ॥ रु र्मा ह वि
ष नृ दा न क नै च कृ प्य मू र्दं ॥ मा ध्मा नै र्म ल्य पिरु घ्न रु वि रु र्द र्द नै प नै ॥ त स्यै व च रु लै प र्दं वा न रु लै ह ना भ नै ॥

माला
५२

सुपिचिलीच्छदिकनेरक्षायिरुप्रमहकृत्॥१॥रुपाधुप्रतिस्यायकामलागलनाशनै॥कनकस्यतनोन्मूलैसर्व
कृष्टप्रसाशनै॥अनूकजातूकवानमहार्षःकरुवाननाशनै॥ ॥अथनिकोचर्ककोटरुलसदृशसूकूलकदकी
रुलसदृशद्वयागुप्तः॥ ॥निकोचर्कगुनस्तिग्धं वक्ष्येस्वद्वैहसं॥नकप्रसादनैवलयैवानघैकरुपिरुहृत्॥
तद्वत्सूकूलकैरुयैविराभागुनदूर्जनै॥ ॥अथपनातगुप्तः॥ ॥पलातसामैवानघमस्तैरुचनेगुनः॥प
कैस्वद्वैहिमैवलयैवानपिरुविनाशनै॥ ॥अथलूकगुप्तः॥ ॥अलूकमनास्वैस्वद्वैगलीवानपिरुनूत्॥ ॥
अथगीरगजद्वगविट्सदृशं तथागीनक्षमृगविट्सदृशं द्वयागुप्तः॥ ॥गीरगनूनेचनेपकैगुनवानाप्रपिरुनू
त्॥कषायैस्तिग्धंमधुनैमस्तैरुवक्रिपिरुहृत्॥ ॥अथतुवनकगुप्तः॥ ॥तोवनैतुवनैपाककैकैकरुः
॥१॥रुहृत्॥उत्तुमानाहदूर्नामःकृमिमहद्वनापहं॥ ॥अथवृहदंजीनस्वत्याजीनकोआहदं निःशितिवनाम

गु० न
ग३

तथा गु० ॥ ॥ अजीर्णं भीतलं स्वादु गु० नृपि कुरुवात नृ० ॥ तस्मादल्प गु० र्भूयं मे जीर्णं लघु नृ० ॥ ॥ अथ दा
खस्य गु० ॥ ॥ द्राक्षा यक्षा सनाभीता च कृष्या वै हस गु० नृः ॥ स्वादु पाक नसा स्वर्ग्या तु वनी हृष्ट मूत्र विद् ॥ पा० र्को सु मा
नूत कृष्ट व्याकरु पृष्टि नृ विप्रदा ॥ हन्ति नृ सु वनः ॥ सवात वाता मुका मलो ॥ कृष्टु प्रपि कुरु सी मा हदा ह ॥ सदा सदा
नृ ॥ आसा सा ल्य गु० गुर्वी से वा स्ना न क पि कुरु कुरु ॥ ॥ गस्तनी तु गु० नृ वृष्या द्राक्षा स्ना ल पि कुरु नृ ॥ अनी जा न्या स्व ल्य नृः
ना ॥ गस्तनी सदृशा गु० र्भूः ॥ द्राक्षा पर्वत जाल धी मा स्ना र्ध व्या मु पि कुरु नृ ॥ द्राक्षा पर्वत जा या दृक् ता दृक् स्ना क्त न मेः
दिका ॥ ॥ अथ दूहा नी पिं तु खरु नि नृ क दृष्ट गु० ॥ ॥ खरु नी ॥ गस्तनी का ना घना दी पा दि हा गता ॥ आ का
नी नि च विख्या ना द ॥ अरु व नि य श्चि म ॥ पिं तु खरु नि का ख त्या सा पि नृ वृ व जा य न ॥ न ना य न्या रु व त्व त्या सा गु स
र्व व जा य न ॥ खरु नि नि त्रि त यं भी नं स धूर् नं न स पा क था ॥ ॥ लि ग्धं नृ वि क नं दृ यं क न क य ह नं गु० ॥ न र्प्यं न क पि कुरु ध्वः

माला
ग३

पूस्त्रिविष्टरिषुकदं॥कोहमात्रकृद्वलीवाक्कवारकहायहं॥कनारिद्यानकृत्स्नकाशश्चसमिवानहो॥सदमूर्धम
नस्त्रिरुमदाद्यप्रगदार्ककृत्॥तात्पीमल्यगुहंरुयमल्यस्वकृत्रिकारुलं॥स्वकृत्रिकावृकतायैसदयिरुकरैमर्त॥वा
नस्त्रिवाहनैरुच्यदीपनैवशुककृत्॥जन्मजासूदजाभीगीवृध्यःपिरुमदाहनूत्॥ ॥अथसर्वमानीगुहः॥ ॥
सलेमानीममशान्तिदाहमूर्धमपिरुकिन्॥ ॥अथवदामनस्यगुहः॥ ॥वाताममूर्धमस्त्रिगंधवातघ्नगुह
शुककृत्॥वाताममज्जामधुनावृध्यःपिरुनिलायहः॥स्त्रिगंधासुःकरुक्कलेश्वनकपिरुविकानहं॥ ॥अथ
सर्वस्यगुहः॥ ॥रुलैस्त्रिविकिपूर्ववातपिरुहनैगुहः॥बृहत्कंकरुक्कवृषीत्वादयाकनसैहिमै॥ ॥अथअस
नाटस्यगुहः॥ ॥अक्षकृकोपिवातामसदृशःकरुपिरुनूत्॥ ॥अथसदाकूलस्यगुहः॥ ॥वातपिरुहनैवृ
षीवावनैस्यात्सदाकूलं॥ ॥अथवाक्कीनागुहः॥ ॥वीरुपूनरुलैस्त्रिगंधाइनसैह्यदीपनैलघुः॥नकपिरुहनैकक्षः

क्रिष्णहस्ताधनैपने॥ असाकाशत्रविहनेहयैरुसुहनेमने॥ ॥ अथवीजोनारुदमधुकीकनिगुप्तः॥ ॥ सधूकः
 कटिकास्वादिनीवनीशीतलागुप्तः॥ नकपिरुदयसाकाशहिक्रमापहाः॥ ॥ अथवनवीजोनगुप्तः॥ ॥
 वीजपूनेरुलेवनीगुप्तः॥ स्यादीजपूनेवन्॥ उदात्तस्यविद्युच्चर्षःकुमिश्रलविवन्धनूत्॥ कसूमेनकपिरुद्वीणीः
 तलेग्राहिपिरुक्तिन्॥ ॥ अथजीवीनश्चजीवीनद्वयागुप्तः॥ ॥ जीवीनमूर्खगुर्वस्त्रेवातश्चविबन्धनूत्
 ॥ शूलकाशकरोक्केशद्विर्दृष्टसमदाप्रकृत्॥ अस्यवेनस्यदृष्टीजवक्रिमीशकृमिहनेत्॥ स्वल्पकृन्नीत्रिकानद्वः
 नूत्सुद्विनिवाविधी॥ ॥ अथनिम्बुमिष्टनिम्बुगुप्तः॥ ॥ निम्बुकमस्त्रेवातश्चपाचनेदीपनेलघूः॥ ना
 जनिम्बुरुलेस्वादगुप्तपिरुसमीननूत्॥ गगानगविषधंसिकरोक्केशचनकद्वत्॥ ॥ अथसर्कवानिम्बुगुप्तः॥
 शर्कवाविधिनिम्बुकीमधूनेगुप्तद्वैहृत्॥ वातपिरुनविद्विर्दृष्टस्य॥ यहनेपने॥ ॥ अथवीहाननिम्बुगुप्तः॥

बोहाना रिधनि चूकी कषायै स्वाइरूक की ॥ गुर्वीस्य रक्षाधने शीतं वानलं ग्राहिलोचनं ॥ ॥ अथ कीव नख गुणः ॥ ॥
कर्मनैर्गहि मै ग्राहि स्वाइरूकै करुवात किन् ॥ ॥ अथ अवीलि गुणः ॥ ॥ आमासिका गुर्वव निहना पिरुकरु म
रुन् ॥ पक्का गुदीपनी रूका सनीरु करुवात नून् ॥ ॥ अथ स्रवेन स गुणः ॥ ॥ अस्त्रवेन स मय स्रवेनैल धू
दिपनी ॥ दृशग मूल गुल्म प्रै पिरुकरु दूषणं ॥ रूकै विस्मय दाय प्रै पा रक्षा दारु गुल्म नून् ॥ हिकाना हनिल स्वाः
सका म मूल वमि प्रै ॥ करुवाता मय धी सिद्ध गमी सद्रवत्त रुन् ॥ वक्षकी स्त्राप स स्वाइली हस्रवी विनायकी ॥ ॥
अथ विषा विन गुणः ॥ ॥ वृक्षा म्मा स म्मा रूकै वात प्रै करु पिरुहने ॥ पक्कनु गुर्व सै ग्राहिक दूकी तुवनैल धूः ॥ अ
स्त्रा स्रवाचनै रूकै दीपनी करुवात रुन् ॥ रूक्षा रक्षा ग्रहणी गुल्म मूल दृशग म्मा रुकिन् ॥ ॥ अथ साला म्मा गुणः ॥ ॥
साना म्मा स्रवात प्रै गुर्व पिरुकरु प्रदे ॥ ॥ अथ वतुन म्मा रूकै चाला लक्ष गुणः ॥ ॥ वृक्षा म्मा ठिमी विचाः

गु० न
५५

कयिन्नेभुनस्तकै॥ नृत्तवतसवृकास्तदातिमीवदनेः कचिन्॥ वीरपूतयूननेननेः येवास्तमृदिनैवुरधेः॥ ॥
०० तिष्ठागुधनस्तमालायीमोन्नादिरुलवर्गः सकसः॥ १ ॥ अथधान्यवर्गः॥ ॥ अलिधान्यीव्रीहिधान्यीभूकधा
न्यीरुतीयकी॥ अमीधान्यीरुद्रधान्यमिर्ककीधान्यपैचकी॥ २ ॥ अलयीनकअलायाव्रीहयः षष्ठीकादयः॥ यवादिर्कः
भूकधान्यीमूजायैसिविधान्यकी॥ कीर्वादिर्कद्रधान्यीस्यारुद्रधान्यीचतन्मर्ग॥ ॥ ३ ॥ अलिधान्यीलरुद्रगुधः॥
कीदननविनागुक्राहंसनाः अलयासनाः॥ अलयीमधूनास्त्रिधावल्यावद्वल्यवर्चसः॥ कषायालयवीर्यास्वः
र्यादृष्याः वर्धहृष्टाः॥ ४ ॥ अलानिलकराणीताः पिरुद्राः मृशलोक्तथा॥ नकअलिवनरुषीवल्यावर्धुमिदीषजिः
न॥ चक्रव्यामृश्लः स्वयः शुक्रलः रुद्रकनापहाः॥ विषवृष्टासकाशदाहृद्रवक्रिपूष्टिदः॥ नस्मादल्याननगुधः
अलयीमहदीदयः॥ ५ ॥ अलयीरुग्धमृजानः कषायालयूवाकिनः॥ तृष्टमृश्लपूनीयाश्चरुकारक्षयापकर्वताः॥ ६ ॥ केदा

माला
५५

नावातयिरुद्राः गुनवः करुणुकलाः ॥ कषायाश्लेषवर्चस्कासधूनाश्वलापहाः ॥ सुलजाम्बादवः पिरुककरुद्रावातव
 क्रिदः ॥ किंचित्सक्तिकसधूनाः कषायाकरुपाकिनः ॥ वायितासधूनावृष्यावल्याः पिरुप्रक्षानाः ॥ १५ ॥ अमलासाल्यः
 वर्चस्काकषायागुनवाहिमाः ॥ वातयिरुद्राहीनगुष्टाः किंचित्प्रकाशवायिताः ॥ नायितम्बुनवावृष्याः पूनानाल
 घवः स्मृताः ॥ नायानिनाय्यालघवः भीष्मपाकागुष्टारुनः ॥ अदिहिनादोषहनावल्यामृगविवर्धनाः ॥ किन्नरुद्रा
 हिमाद्रुकावल्याः पिरुककरुपायहाः ॥ वर्धविष्काकषायाश्लेषवास्तिकतान्विताः ॥ ॥ अथवीहिधान्यलक्षगुः
 षाः ॥ ॥ वार्षिकाकंठितागुक्तावीहयश्चित्रयाकिनः ॥ कुरुवीहिः पटलः चक्रकूटीठकंश्रुपि ॥ आल्यसूखा
 ऊतुसूखांश्रुयायावीहयस्मृताः ॥ कुरुवीहिसविरुयायः कुरुसूखनधूलः ॥ पाटलः पाटलापूर्यसदृशावीहिरुच्यन
 ॥ कूकूटीकनिवीहिकूकूटीठकउच्यन ॥ आलसूखः कुरुशूकः कालनधूलउच्यन ॥ लाकवर्धुसूखेयस्यवीहीर्जुतुः

गु०२
गो३

मूखस्य सः॥ ब्रीहयः कथिता य० कं मधूना वीर्यं नाहि सः॥ अल्य रिषीदनी वद्धवर्चसाः षष्ठीकेः समा॥ कृष्ण व्रीहिवनस्फुषी
तस्मादल्य गुष्ठाः यनेः॥ ॥ अथ षष्ठीकानीलकण्ड गुष्ठाः॥ ॥ गरुत्तु चैव यपा कीयानि न षष्ठीका सताः॥ षष्ठीकः कै गु
क प्रीतः प्रमोदक मूकै दको॥ महा षष्ठीक कंदान पृष्ठाः कूटवकादयः॥ कालकः शतपृष्ठाश्च षष्ठीकाः समुदाहृतः॥ प्र
नपि ब्रीहयः प्राका विहीलकण्ड दर्शनान्॥ ॥ अथ षष्ठीकानी गुष्ठाः॥ ॥ षष्ठीकाः मधूना शीता लघवा वद्धवर्चसः॥ वा
नपि कृष्णमताः शालीनी सदृशा गुल्फेः॥ षष्ठीका प्रवर्तनं पीलघ्वी तिग्धा त्रिदोषा त्रिन्॥ स्वादी मृदी या ही च वलदाहः
नहानिधी॥ नका शालि गुल्फेः सुल्यानकः स्वर्ग्य गुष्ठा यने॥ ॥ अथ शूकधन्यः॥ ॥ नययः प्रसिद्धः अनियवीतिः
शुकः कृष्ण नूतवर्धुयाः॥ नतीको हनिता निःशुक स्वल्पी यवः यवः तिलो क प्रसिद्धः॥ नवी गुष्ठाः यवः कषायो मधूनः श्री
नलो लेखनी मृदः॥ ब्रह्म मृत्तिलवर्धुया नूतनी मधुग्निवर्धनी॥ कटु पाकं न रिषीदी स्वर्ग्य वलकनी गुल्फः॥ वक्रुवा न न

माला
गो३

लः स्वेयं वर्तु कारी सपि किलः ॥ कष्ट त्वगमय रश्मि पिरुमहः प्रहं जनः ॥ धीन सः श्वासकार ॥ नृत्त कृत्वा हित नृत्त य
क्षुत् ॥ तस्मादति यवोत्पूनः स्फोकोत्पून न न सक्तः ॥ ॥ गधूम मयल कृत्त गुप्तः ॥ ॥ यश्चिमाया गता स्फुली रूथी रग
धूम सैरु कः ॥ मधुली तु नतः स्वल्या मल्य दक्ष प्रकीर्तितः ॥ निःशुको दीर्घ रगधूमः क्वचि नैदी मखाति धः ॥ गधूमा मधू
नः शीतो वात पिरु ह नो गुत्तः ॥ करुणु क प्रदा वल्यः स्निग्ध सैधान कृत्त नः ॥ जीवनी वृह रश्मि वरश्मि स्वीदी नृत्तः स्निग्ध कृत् ॥
मधुनी भीत ला स्निग्ध पिरु धी मधुली लघुः ॥ शुक्र ला वृह रश्मि यथा तद नैदी मखा मतः ॥ ॥ गधूम मयल कृत्त गुप्तः ॥
वेद ला मधुना नृत्त कषायः कट्ट पाकि नः ॥ वात लः करु पिरु धुः वर्द्ध मृत्त मला हि मः ॥ कृत्त मृत्त मधुना स्त्री मयल्य आः
नका नकाः ॥ ॥ गधूम मयल कृत्त गुप्तः ॥ ॥ मृत्त मयल कृत्त गुप्तः ॥ मृत्त मयल कृत्त गुप्तः ॥ मृत्त मयल कृत्त गुप्तः ॥
श्राव न नृत्त ॥ कृत्त मयल कृत्त गुप्तः ॥ मृत्त मयल कृत्त गुप्तः ॥ मृत्त मयल कृत्त गुप्तः ॥ मृत्त मयल कृत्त गुप्तः ॥

गु० न
३१

शुक्रः प्रधानं हनिता गुरुः ॥ न कपित हनिता कृष्णो जिन्दा यान् न कपी को ॥ गोत्रः पिरु मस्तु गोत्रो हन्यान् कुरु नि
लो ॥ हनिता प्रवनं सुखी कथि श्रवकादितिः ॥ ॥ अथ उनिदस्य गुणः ॥ ॥ माघा गुत्रः स्वादुषा कस्ति रग्धा नूचा निलाय
हः ॥ उरु सैतर्प्य रक्षा वल्यः शुक्रलो हृहः पनी ॥ हिन मूत्र मस्तु न्य मदः पिरु कुरु प्रदः ॥ गुदकीलादिन श्व सपकि भूला
निनाशयत् ॥ कुरु पिरु कना साषा कुरु पिरु कना दधिः ॥ कुरु पिरु कना मस्तु हंता की कुरु पिरु कुरु ॥ ॥ अथ बीजा
गुणः ॥ ॥ गज साषः स्वादुषा कुरु वन सुखी रक्षा गुत्रः ॥ ग्राहि वात कनी नूचाः सुन्य हनि मल प्रदः ॥ स्वती न कुरु था कुरुः
सुम्नि विध सप्र कीर्तिः ॥ यो महा सुख रव तिस्र प्रा के वधिको गुरुः ॥ ॥ अथ निष्याव को लसिं वीरु ल सट्टा
रुला नाग सिं वीरु कर्त वीरु निष्याव सैरु सन्न रव तिस्र कुरु ॥ ॥ निष्या बी मधूनी नूकी विषा कस्तु गुत्रः सनः ॥ क
षाय सुन्य पिरु म मूत्र वात विवन्धन ॥ विदा सु सु विष रक्ष रक्षा रुदक् शुक्र नाशनः ॥ ॥ अथ मां ० गुणः ॥

माला
३१

[illegible]

गु० न

गट

भां॥ करुपिरुहनाहयाग्राहीभीतातिवातलः॥ ॥ अथप्रिपूटस्वल्पस्वसावीनकुक्षः॥ ॥ प्रिपूटपिकलायायःसा
पिस्वष्टिकवकुक्षेः॥ किंस्वस्वैरुत्तयेकत्वेकानीवातातिकोपनः॥ ॥ अथकोलन्वनकोलन्वस्यगुधः॥ ॥
कूलन्वःकदूकःपाककषायःपिरुनककृत्॥ लघुर्विदाहीवीर्याशुः॥ सकाशकरानिलान्॥ हनिहिकसमीशु
कदूगनाहान्मपीनसात्॥ स्वदसंश्रमदीक्षनकुमिहवःसवः॥ वरध्वविशषतःशीतोनेशमयविषायहः॥ ॥
अथनिलस्यगुधः॥ ॥ निलस्वादकदूतिकमुवनधनसागुनः॥ विपाककदूकःस्वादस्त्रिध्वकुरुपिरुकनः
॥ वल्यःकुरुध्वहिमस्यरुध्वमुच्यमुखाव्रह्महितः॥ दध्याल्पसूशकृद्वाहिवान्प्रामिमतिप्रदः॥ कुरुध्वसुसमरु
षुशुकलोमध्वमस्मृतः॥ अन्योहिनननःश्रीकासुहृन्कदयासिलोः॥ ॥ अथतसीगुधः॥ ॥ अतसीमधूनाति
कास्त्रिध्वपाककदूगुनः॥ उष्णदृक्सूक्रवातघ्नीकरुपिरुविनासिनी॥ ॥ अथनीनीगुधः॥ ॥ उवनीग्राहिणीः

माला
गट

भीतालघीकरुविषासुजित्॥गीङ्गासुवक्रिदाकैशुकुसुको०रुमिप्रधूत्॥ ॥अथनपीतसर्वपगुधः॥ ॥सर्वपःक
दकःपाकवसेहसस्मनिककः॥गीङ्गासुकरुवातघानकपिरुगमिवर्द्धनः॥किंचिद्रुकाजयैकधुकुसुको०ग्रहकमिन्॥
नक्षत्राविशेषतदुधस्वेतसर्वपः॥ ॥अथनककुलनांशुगुधः॥ ॥नाजिकाकरुवातघीनीकोसुनकपिरु
त्॥किंचिद्रुकागिदाकधुकुसुको०रुमिजयत्॥अतिनीकुविशेषनतद्वत्सुपिनाजिका॥ ॥अथद्रुधान्य
गुधः॥ ॥द्रुधान्यीलघुमूलेकद्रुपाकिचिलखने॥कषायैसधुनेरुदंअवृथकंदरशाषं॥वातकृद्वद्विकं
वनकपिरुककायहं॥ ॥नशुकैगुनीगुधः॥ ॥कैगुनीवद्वसन्धानवातकृद्वहृदीगुधः॥रुसुनकातथास्वेता
पीताचतिचतुर्विधा॥तासीपीताप्रधानैस्याद्रुकाकरुहनायनै॥ ॥अथविनागुधः॥ ॥विनाकःकैगुलदीप्ति
कैगुवद्रुधकोनकैः॥ ॥अथसवागुधः॥ ॥अथमकीसायरातुकीवातलक्ष्मपिरुह॥ ॥अथकीदवगु

गु० न
३९

॥ कोइ वा वातला ग्राही हिमः पिरुकरुपहाः ॥ ॥ अथ दालवनकी व ॥ ॥ अति वातकना ग्राही वीर्या सुव
नकी इवः ॥ ॥ वातकसवीरु गुहाः ॥ ॥ कषायामधुना नूकानक पिरुकरुपहाः ॥ ॥ शीतलो लघुवृद्ध च वातकी वात
कीपनः ॥ ॥ अथ कनलगुहाः ॥ ॥ कषायामधुना नूकानक पिरुकरुपहा ॥ ॥ अथ दाललो लघुवातलाः
चवलाटिका ॥ ॥ अथ गनधुवा गुहाः ॥ ॥ गवन्धुका कटूः स्वादीका श्वकृत्करुनाशिनी ॥ ॥ अथ तिनी गुहाः ॥
निवातः शीतलो ग्राही पिरुघ्नः करुवा नूकनू ॥ ॥ अथ शीतनी गुहाः ॥ ॥ शीतनालः शीतलः स्यात् शीतः रश्मि
पिरुजिन् ॥ ॥ अथ दालमधुना नूक कषायः कटू कृत्करुः ॥ ॥ शालिधान्यं समीधानी लघुसुम्वत्सनीपितै ॥ ॥ तच्च पथ तमे प्रा
कं गुर्वपथ तमे नदी ॥ ॥ धान्यं नवमहिषीदिगु नूत्वा इक प्रदे ॥ ॥ वर्षा धितं सर्वधान्यं गो नदी पतिमैवति ॥ ॥ ननु मूचतिः
वीर्यं स्त्री क्रमात्सैव न तस्य नै ॥ ॥ अतः यवरागाधुम तिलमाषानवाहिताः ॥ ॥ पूनाक्षविनसा नूकानगथा गुहाका निधः ॥

माला
३९

ॐ निधी गुह्यनलमालायीधन्यवर्णाद्वयः॥ ८ ॥ अथमीसवर्गः॥ ॥ तथमीसलक्षं॥ ॥ मीसीवाकहनैसर्ववृह
हंवलशुक्रकृत्॥ ॥ अथनरुदः॥ ॥ मीसवर्गाद्विधाहूयोजीगलाहूयहृदयः॥ ॥ तथजीगललक्षगुह्यः॥ ॥
मीसवर्गाद्विधाहूयोजीगलाहूयहृदयः॥ ॥ तथापलुमृगहूयविशिलाप्रनूदाअपि॥ प्रसहाअथचअम्याअक्षो
जीगजातयः॥ जीगलासधूनादूकाः॥ उवनालघवस्तथा॥ वल्लावृद्धावृहदाधदीपनादीषहानिहः॥ मूकतीमिमिनः
स्वैवगददत्वादितंनथा॥ बाधिर्यमनूचिंछुद्विप्रमहंसखजागदाहू॥ गलगलुंश्रीपदंचनाशयैत्यनिलामयानू॥
अथाहूयलक्षगुह्यः॥ ॥ कूलचनाः॥ स्रवश्चापिकोशस्तः॥ पादिनस्तथा॥ मत्स्याजतेश्वरविख्याताः॥ येवधाहूयजातयः॥
आहूयामधूनास्तिग्धागुनूवावक्रिसादनाः॥ ॥ रक्षकालाः॥ पिच्छिलाः॥ येवमासवृद्धिप्रदंपदं॥ ॥ तथाहिर्यदिनस्तहिषाः
यापथननामताः॥ ॥ अथजीघाललक्षगुह्यः॥ ॥ हनिरक्षेनकनैगव्यवातायूमृगमाहूकाः॥ वाजीवः॥ यवत

अपि स्वर्दंष्ट्रः सनतादयः ॥ जैघालसीरुता प्रनवीति हयथक् ॥ हविष्मन्मस्रुद्विष्टं प्रनः शुक्रतया सतः ॥ कूर्वगा
 स्ताम्रवर्ष्मस्त्राद्विष्ठाकृतिको महान् ॥ अथानीलीउकीसमीजाति कीर्तिताः ॥ वातायुस्तु किंसा नारी मृगः स्वल्पः
 प्रकीर्तिताः ॥ स्वल्पः प्रथुनरीरुया ॥ शाही मृगमातृकः ॥ कस्तूरी हविषं चैव वदन्ति मृगमातृकः ॥ गङ्गी वस्तु मृगः
 रुया गङ्गीतिः पत्रिनी वनः ॥ पृषतः श्वेद्विस्वस्त्राद्विष्ठा किं विदल्यकः ॥ स्वर्दंष्ट्रः समनीयस्तु कश्मीने कर्कटाहि
 धः ॥ कश्मिनदरुण सनतादयः स्त्राद्विष्ठा इन्सा हयूक ॥ अथुर्द्वयादः उद्युप्रमादः समहा विष्ठा ॥ स्त्राता वनस्तुः समहा
 मृगस्तुः ॥ जैघालाः प्रायशः सर्वपिकृत ॥ अथ हनामताः ॥ किंचिन्वातक नारुयाल घवी वलवर्द्धनाः ॥ ॥ अथः
 विलेखयलकटागुहः ॥ ॥ रमाधमशरुर्जैमखले स्त्राकाया विलेसयाः ॥ विलेसया वीन हनामधूना न सया कथीः ॥
 हृहसावदविष्ठा वीर्यास्तु प्रकीर्तिताः ॥ ॥ अथ गुहा सयलकटागुहः ॥ ॥ सिंहव्याघ्रव ॥ ॥ काककतन

द्वीपनस्तथावप्रजम्बुकमार्जलाः स्यात्सुगुहाभवाः ॥ वातहनागुनूकमधूनाश्चनस्त्रिगुहावल्याहिमानि न्यूनप्रमुखा वि
कानि सः ॥ ॥ अथ पल्लुमृगलक्षगुहाः ॥ ॥ वनोकावृक्षमार्जलः द्रुमविजलः वृक्षमर्कटिकानूखीः तिलीकः
स्तृतापल्लुमृगवृक्षीश्चक्रः ॥ साविस्त्राहिताः ॥ ॥ सासार्धकाशसमनास्तृष्टमृष्टपूनीषकाः ॥ ॥ अथ विक्रिनलक्षगु
हाः ॥ ॥ वैतिकावावविगितिः कपिंजलकनिरिनाः ॥ चकोनक्रकनायाश्च विक्रिनाः समूदाहताः ॥ विकीर्यरुद्रयै
श्चनयस्सुस्त्राहिविक्रिनाः ॥ कपिंजलः तिलीका लोके कपिसनिरिनाः ॥ चकोनः प्रसिद्धः क्रकनः कयने तिली
के ॥ विक्रिनामधूनाभीताः कषायाः कट्टयाकिनः ॥ वल्यावृक्षाम्बुदोषघ्राः यथाचलद्यवीमताः ॥ ॥ अथ प्रतुदल
क्षगुहाः ॥ ॥ कालकक्षकहानीनकपीनस्तनपत्रकः ॥ ॥ हानिलः तिलीकः ॥ ॥ कपीटीधवलः पाशुभानपशुवृ
हकः ॥ पतुदामधूनापिरुकरुघ्राम्बुवनाहिमाः ॥ लघवीवर्द्धवर्द्धस्कारिकेचिद्वानप्रकोपनाः ॥ ॥ अथ प्रसरः

७०४

39

[illegible]

माला

٥٩

विक्रमसिद्धन्तिलोक स्रवाः पिरुहनास्त्रिधाः मधूनागुनवीहिमाः ॥ वातः श्रवणप्रदाः श्रेववलशुक्रकनः स्रवाः ॥ ॥
अथकाशसुलक्षगुहा ॥ ॥ शंखाः स्रवकाः श्रेवस्रकि स्रवकतल्लुकाः ॥ जीवः श्रेवविधाः सर्वकाशसुः पत्रिः
कीर्तिताः ॥ काशसु मधूनास्त्रिधाः वातपिरुहनाहिमाः ॥ वृहक्षथतथावृष्यावर्वस्याः करुवर्द्धनः ॥ ॥ अथया
दीनीलक्षगुहाः ॥ ॥ कूवीनकर्मनकाथककटः रुक्ककटः ॥ घटिकाशिंशुमानश्चत्यादयः पादिनः स्मृताः
॥ कूलीनाकुलजंतुविशेषः ॥ कूर्माकटपः नक्रः नाकस्रनशादिनशीवकुलः ॥ ककटः ककटन्तिलोक रुक्ककट
टस्रद्विः शेषः घटिकाघनिशानिन्तिलोक शिस्रमानः शूशि ॥ पादिनापिचयनशुकाशसुनौगुलेः स्रवाः ॥ ॥
अथमत्स्यलक्षगुहाः ॥ ॥ लोहिताशामुक्तजीवास्त्रिमत्स्याः पत्रिकीर्तिताः ॥ मत्स्याः त्रिधा स्रवागुनेवः करु
पिरुलाः ॥ वल्यारिष्यदिनावृष्यावृहक्षपवनापहाः ॥ व्यावायाधूननीनीचदीफागीनीचपूकिताः ॥ ॥ अथजंघादि

नीविमिहनीकनिययनीगुहः॥ ॥तग्रहविहः॥ ॥हनिहःभीतलीवकविहूश्रीदीपनीलघुः॥वसपाकवमधूनःसू
 गन्धिःसन्निपातहाः॥ ॥अथवननिगुहः॥ ॥पुषनमुहवस्वाइयहकःभीतलीलघुः॥दीपनीलीवनः॥असक
 नदीषययाचुजिहू॥ ॥अथपाटीगुहः॥ ॥मंतिनीहवनकाभासुहय॥असपहाहिमाः॥ ॥अथवानहसीगा॥
 नैकःस्वाइलघुर्वलीवृष्यादाषययापहः॥ ॥अथश्रीनवगुहः॥ ॥अथमुसधनीवृष्यःस्त्रिग्भासुककृषि
 रुलः॥ ॥अथविलगयविरभषगुहः॥ ॥तग्रहनाहागुहः॥ ॥अशःभीनीलघुःग्राहीवृकःस्वाइसवाहिनः
 ॥वक्रिकृत्ककृत्तप्रावागसाधनमःस्मृतः॥कनानिसानरगायासुअसनाशकवथसः॥ ॥अथसीगुहः॥ ॥
 भाल्यकः॥असकाभासुरभाषदाषययापहः॥ ॥अथविक्रिनविरभषः॥ ॥तग्रहलवागुहः॥ ॥लवाविक्रिन
 वगासूःनवगुर्धमनाकृषेः॥वीसूलीगोनकन्यथयोदुनीदर्शनसुथा॥लावावक्रिकनास्त्रिग्भाहनप्राग्राहिह

हिमाः॥ पीतलः श्यामलः सुवीर्याः सुनिलनाशनः॥ गोमालः घृतनीरुकावक्रिका नीतिशेषजित्॥ योधुकः पिरुक्रुर्त्ति
चिल्लघुवातकः स्यापहः॥ दप्रनानकः पिरुद्राददासयहनाहिमः॥ ॥ अथ वनेनागुप्तः॥ ॥ वरुको नधूनः शीतलः
रुधकः पिरुनूत्॥ ॥ अथ गवनेनागुप्तः॥ ॥ वटकः शीतलः तिग्मः स्वादुः शुक्रकरुप्रदः॥ सन्निपातावभम
वटकः मुक्तिशुक्रलः॥ ॥ अथ वटनवटगुप्तः॥ ॥ वरुको ग्निकनः शीतलः नदीशेषययापहः॥ सूत्र्यात्
क्रदावलो वरुको ल्यगुप्तततः॥ ॥ अथ कूटवनकूटगुप्तः॥ ॥ कूटो वैहलः वीर्याः सुनिलजगुप्तः॥
वरुध्याकरुद्रलो नूतः कषायकः॥ वनकूटकः तिग्मः वैहलः श्यामलागुप्तः॥ वातपिरुकयवसी विषमदः
ननाशनै॥ ॥ अथ लीननद्यगुप्तः॥ ॥ तिरुनवर्षुदायाहीहिकादाषययापहः॥ असकापनहनः नस्मात् गो
नाधिकागुप्तः॥ ॥ अथ प्ररुदविराषः॥ ॥ त्रहातिगुप्तः॥ ॥ हानीतागुप्तः नूतः पिरुकः स्यापहः॥ स्वेदः

गु०३

उ३

स्ववकवशोकः ॐ वदन्त कनश्च सः ॥ अथ पीडुगुप्ताः ॥ ॥ पीडुकः करुवातश्च ग्रहणी दोषनाशनः ॥ अथ
धवनपीडुगुप्ताः ॥ ॥ नकपिरुहः शीतो मधूना न स पाकयोः ॥ सीं ग्राही वात भसन का पातः पत्रिकीर्त्तितः ॥ कपोः
न ॐ तिविरुं यो लो क धवल पीडुकः ॥ ॥ अथ यनवा ॥ ॥ याना यता गुर्वस्त्रिग्ध न कपिरु निला यहः ॥ सीं ग्राही शुक्र
लभीतः कपोतायि समी मूना ॥ ॥ अथ यकी उगुप्ताः ॥ ॥ नातिस्त्रिग्ध निला वृष्या हि स्वा इ पाक वसा यनिः ॥ चवान
घ्रिनास्त्रि शुक्रा सि गुर्वसं ज नि य किं सः ॥ ॥ अथ ग्राम्या ॥ ॥ त्रय च गगुप्ताः ॥ ॥ कृगमी सैलघूः स्त्रिग्धं स्वा इ पाक
त्रिदोष क्रित् ॥ नातिभीत मदा हि स्वा स्वा इ पीन सना शनै ॥ शुक्क कार श नू चो र श धे हित म र य ध दी य नै ॥ अजा सून
स्य बाल स्य मी सैलघू न नै र व नू ॥ दृश्यं क न ह नै र श्वी स्व स्वा इ वल दै र श्वी ॥ मी सी निष्क सि तां उ स्य च ग स्य क रु रु रु
नूः ॥ ॥ अतः स्रद्धि क नै व ली मी स दै वा त पिरु नू ॥ वृद्ध स्य वा त ली नू र्दी न था व्या धि मू न स्य व ॥ उर्द्ध मी उ वि का न चै र

माला
उ३

गमूत्रविप्रदः॥ ॥अथसदः॥ ॥सवस्यहृहमीसैपिरुः॥सवकनेगुनः॥नतादृषहानस्यमीसैकिंविश्वयुक्त
नी॥ ॥अथदस्मगुप्तः॥ ॥सदःपूश्चरुवमीसैदृयैदृषीप्रयापहं॥पिरुः॥सवकनेकिंविद्वानवाधिविनाश
नी॥ ॥अथरगमीसस्यगुप्तः॥ ॥रगमीसैगुर्वपथंरपिरुः॥सवविर्वर्द्धनी॥स्त्रिगंधानहनेवलीहृहसेपीनसप्रसः
न॥ ॥अथरगटगुप्तः॥ ॥अथमीसैसलवसेचक्रुषीमधूनेगुनः॥ ॥अथकूलवनाः॥ ॥नयमहिषमीसस्यगु
प्तः॥ ॥साहिषीमधूनेसासैस्त्रिगंधाहृवानाशने॥निद्रानेतावलक्तननूवर्द्धाकनेगुनः॥ ॥नयकीदवसन
गच्छावृत्तिलोकाकनकुप्तः॥ ॥कीदवनकचक्रामीसैस्त्रिगंधहिमंगुनः॥वृषीचसृष्टविष्मृष्टंवातपिरुः॥सनाशने
॥ ॥अथपादिनगुप्तः॥ ॥नयकचक्रुषमीसस्यगुप्तः॥ ॥कचक्रुषीवलदावातपिरुः॥किंस्त्रीत्त्वकानकः॥ ॥अथः
विरासः॥ ॥विहंगपुमान्प्रचक्षुचतुष्यदजातिषू॥यनाहंलघुपूमीस्यात्स्तीक्ष्णपूर्वार्धमादिरभत्॥दहमध्यं

गु०२
३४

गुनू प्रायः सर्वषी प्राप्तिनीमर्त ॥ पद्मात्कयादिहेगानीतदववनमूचन ॥ गुनूस्थजानिपूर्वषीगुर्वीग्रीवाचपक्षिष्णं
॥ उनस्कन्दीदनेमूर्द्धापादापाक्षीकटीतथा ॥ पृष्ठत्वयकदंशसिगुनूक्षीहयस्थारूनी ॥ लघुवानहनेमीसखगनीध
न्यात्रिष्णं ॥ मत्स्याभीनीपिरुकरंवातघ्नगुनूकीर्तिनी ॥ कुलाभीनीरश्मिवाहनेलघुनूकमूदीनितै ॥ वृंहर्षं गुनूवात
घ्ननवासेवपलाशिनी ॥ ॥ अथ मत्स्याः ॥ नयनो कुलोहितः सर्वमत्स्यानीवनावृष्यार्तितार्जितः ॥ कषायातुनसाः
स्वाइवातघ्नानातिपिरुलः ॥ कूर्ध्वजन्तुगतान्वागान्हन्त्याद्रोहितमूधुकी ॥ ॥ अथ सिलिंधः ॥ ॥ सिलिंधः रश्मि
कालोवल्मीविषाकमधूनीगुनूः ॥ वातपिरुहनादृशमवातकनीमतः ॥ ॥ नयहाकुलगुष्माः ॥ ॥ लकटीमधूः
नः सीनीवृष्यः रश्मिकनीगुनूः ॥ ॥ अथ पटिनागुष्माः ॥ ॥ पाटीनः रश्मिकालोवल्मीनिद्रानः पिशिताशनः ॥ दूष
यद्रकपिरुवकृष्टनीर्गकनीत्यसौ ॥ ॥ अथ वगगनागुष्माः ॥ ॥ गगनीमधूनः सीनीनातिपिरुकरः सनः ॥ ॥

माला
३४

मातृगणनामथद्वयश्रवणां च प्रकाशयत् ॥ अथ सोनावक्रसोनादिगुणः ॥ सकलसकषायश्चग्राहिः
मधुनामताः ॥ अथ कवण्णीगुणः ॥ कवयो मधुनास्त्रिधाः कषायाश्चपित्रीचनः ॥ नातिपिरुक्कनीवानक्षमः
नावलवर्द्धनः ॥ अथ अर्गुगुणः ॥ यत्र मा मधुनास्त्रिधा मधुप्रसिद्धेव विरुयानद्विदिविका ॥ अथ
सहनीगुणः ॥ यास्त्रितिका कटुः स्वादुः शुक्रघ्नीकरुवातजित् ॥ स्त्रिधा त्यक्तुनागघ्नीचनीचलघुर्मताः ॥
अथ पयनागुणः ॥ महासरुलसैरुमुक्तिकः वातकरुयहः ॥ मधुनः शिशिनाः नूयावातसाधनरक्षामनः ॥
अथ कूडमत्स्यगुणः ॥ कूडमत्स्यात्वा इव सादीषय विनाशनीः ॥ लघुघ्नीकानूचिकना सर्वदा ग्राहिमासताः ॥ अ
थानिकूडमत्स्यगुणः ॥ अतिशूक्रपूरस्वहनीनूयाः काशानिलायहाः ॥ अथ मत्स्यागुणः ॥ मत्स्यगर्हः
यत्रैवृष्यः स्त्रिधाः स्त्रिलोकनीगुणः ॥ करुमेदप्रदावल्यालानिकुम्भीरुनाशनः ॥ अथ सुकटीगुणः ॥ विष्टुतिनः ॥

७०२
७५

कमत्सा अर्धल्या इर्जममताः॥ ॥ अथ सनामत्सा गुणः॥ ॥ प्रतिमत्सा अर्ध्यात्पूः सर्वदा वप्रकोषनाः॥ ॥ अथ
दग्धमत्सा गुणः॥ ॥ दग्धमत्सा गुरोः प्रष्टुष्टि कदलवर्द्धनः॥ ॥ अथ कुविशेषकूपादिगुणः॥ ॥ हर्मनः
कूपजामत्सा सिमिन्नमनजाहिताः॥ मरधोनदीरवारप्रष्टा ग्रीष्मवृशा समूहवाः॥ तदा गजातवर्षा सपथ्याः भवदि
नेर्जनाः॥ ॥ अथ कूपजादिगुणः॥ ॥ कोपाजामत्सा पुक्रमूत्रकृष्टरक्ष्याविवन्धदाः॥ कृष्टादिकान्तं ह्यमूक
तावन्यदा जनेः॥ सनाजामधूनास्त्रिधाः वल्यावातनिर्वहताः॥ नादयावृहतामत्सा गुर्वी निलनाभनाः॥ वक्रपिठ
कनादृष्टाः शीतलोवलमूत्रदा॥ तदा गवनिर्जनजावलायुर्मातिदन्कनाः॥ ॥ ॥ मिश्री गुह्यनत्वमालायीः
सीसवर्गाः दशमः॥ १० ॥ अथ आकवर्गाः॥ ॥ नवशाकलकषगुणः॥ ॥ पत्रैष्वीरुलीनालीकंदैस्त्वदः
जनथा॥ आकषद्विधं मूदिष्टं गुर्वी विद्याय रथा रुने॥ ॥ अथ आकगुणः॥ ॥ प्रायस्सर्वाणि आका निविष्टं हि निगु

माला
७५

नूनिच॥ **रूका** **सिव** **रूव** **चा** **सि** **रू** **वि** **भ्मा** **रू** **ता** **नि** **च**॥ का **कै** **रि** **न** **रि** **व** **पू** **ना** **रि** **नि** **ह** **नि** **ने** **यै**॥ व **रुं** **वि** **ना** **भ** **य** **ति** **न** **क** **स** **था**
पि **शु** **क**॥ प्र **रू** **क** **य** **च** **रू** **न** **प** **लि** **तै** **च** **रू** **नै** **ह** **नि** **रू** **ति** **ग** **ति** **म** **ति** **प्र** **व** **द** **नि** **रू**॥ **भा** **क** **षू** **स** **र्व** **षू** **व** **स** **नि** **रा** **ग** **ः** **स** **ह** **न** **वी** **द**
ह **वि** **ना** **भ** **ना** **य**॥ त **स्मा** **दु** **ध** **ः** **भा** **क** **वि** **व** **रू** **नै** **हि** **कू** **र्या** **न** **था** **रू** **षू** **स** **च** **प्र** **व** **दा** **या**॥ **स** **र्व** **भा** **क** **म** **जी** **र** **ग** **य** **म** **च** **रू** **ष्य** **म** **रू** **ष्य**
च॥ **वि** **ना** **प** **द** **ल** **वा** **मु** **क** **का** **क** **मा** **ची** **पू** **न** **न** **वा**॥ **रू** **दै** **व** **भा** **क** **व** **रू** **नै** **प** **शू** **भा** **क** **वि** **ष** **यै** **प्रा** **सि** **कै**॥ **प** **शू** **भा** **क** **प्र** **रू** **व** **प्र** **वा**
भा **क** **व** **रू** **न** **स्य** **लि** **खि** **त** **चानू**॥ त **प्र** **प** **शू** **भा** **का** **नि** **ग** **या** **पि** **क**॥ **पि** **दि** **शि** **रू** **नि** **स** **नि** **त** **न्म** **रू** **च** **न** **व** **थू** **अ** **थ** **न** **थू** **ध**
न **यै** **गु** **भा**॥॥ **वा** **मु** **क** **दि** **ती** **यै** **स्वा** **इ** **का** **नै** **क** **दू** **दि** **नै**॥ **दी** **प** **नै** **पा** **च** **नै** **ल** **घू** **शु** **क** **व** **ल** **प्र** **दै**॥ **स** **नै** **ली** **हा** **र्ष** **पि** **रू** **म** **क** **मि** **दा**
प **शू** **या** **ह** **म्**॥॥ **अ** **थ** **पौ** **रू** **गु** **भा**॥॥ **पौ** **त** **की** **भी** **त** **ला** **स्त्रि** **ग्धा** **रू** **ष्य** **ला** **वा** **न** **पि** **रू** **नू**॥ **अ** **कै** **पा** **पि** **दि** **ला** **नि** **दा** **शु** **क** **दा** **न**
क **पि** **रू** **नू**॥ **अ** **क** **घा** **पि** **दि** **ला** **नि** **दा** **शु** **क** **दा** **न** **क** **पि** **रू** **नू**॥ **व** **ल** **दा** **नू** **चि** **रू** **ग्य** **ष्य** **पू** **ष्या** **नं** **द** **वि** **व** **रू** **नी**॥॥ **अ** **थ** **च** **व**

गुंन

३३

लाञ्छितं दण्डलं धूलि यथा मृकं चटं मिति प्रसिद्धं न दुष्मः ॥ कचटं निक कं न क पिरु निल हने हिमलघुः ॥
अथ स्वर्गमन्त्रं सा लोहितमन्त्रं सानवदं नित्यं नो मन्त्रं यो गुणः ॥ मानि धो मधुनः शीतो विष्टं ली पिरु कुरु ॥ वा
नरं प्रकाशकं न क पिरु कुरु द्विषा माग्नि जिह्व ॥ न क वायु गुणं न तिम वा नो मधुनः सनः ॥ रश्मि लः कदुकः पाक स्वल्प
दोष उदी नितः ॥ अथ पा न क गुणः ॥ पा न क वा न ला शीतो रश्मि कृदी नी गुणः ॥ विष्टं लिनी म दक्ष स न क पि
रु विषा यहाः ॥ अथ कालं क न विवा न नित्यं नो मन्त्रं दुष्मः ॥ कालं क स न र्च्यं वा न क कुरु रश्मि कुरु ॥ व
ल्यं दृश्यं पिष्टं ली च न क पिरु हने हिमं ॥ अथ पदं गुणः ॥ ना जी को न क पिरु ध्वा विष्टं लि वा न का यनः ॥
अथ कर्णं गुणः ॥ कर्णं वीरु न्यदा शी क मधुना शुक्र का विष्टी ॥ अथ लीनी गुणः ॥ लीना नू का गुणः कदी वा न
रश्मि हनी पदः ॥ अथ श्रोणी दीपनी नू का मन्त्रं नी विष मा धिनी ॥ अथ वृक्षं ह ली दी दी नित्यं प्रसिद्धः ॥ अथ

माला

३३

सुखावातघ्नीपिरुक्ष्माकरीमता॥ स्वदाषवक्ष गुल्मघ्नीष्मासकाशप्रमहन्॥ १॥ ॥ अथ नम्रवृक्षेनागधाटीपथाप्रकीर्ण
ताः॥ ॥ अथ अविनीनागुक्षः॥ ॥ चौरगलीदीपनीनूयालघुक्षकरुवीतनूत्॥ पिरुनात्ताग्रहस्थः कृष्णतीक्ष्णनाः
क्षिनी॥ ॥ अथ योकोगुक्षः॥ ॥ चूकाचूकतनात्वादीवातघ्नीकरुपिरुकुत्॥ नूयालघुः तनापाकवृक्षाकीनातिनीविनी॥
॥ ॥ अथ मूत्रद्वयगुक्षः॥ ॥ पाचनेलघुनूयासुषुप्तमूलकजैनवी॥ सहस्रिधं प्रिदीषघ्नमसिद्धकरुपिरुकुत्॥
अथ नम्रिवाकृतिदीर्घतिकपशाचंचूर्तिप्रसिद्धा॥ ॥ विंवृणीतासनानूयात्वादीदीपाग्रयापहा॥ भातुपूष्टिकरी
वल्यामर्धपिरुलिकासताः॥ ॥ अथ सि। नवागीगुक्षः॥ ॥ सितिवानः सनावृक्षः रक्ष्माघ्नीवातपिरुलः॥ स्वादुहि
मः स्वादुपाकस्तिकीनूकः कदूः पदूः॥ विवंधाधानकृद्गुस्मद्वल्यश्चरसायनी॥ ॥ अथ अरुणीकेवीगुक्षः॥ ॥ नाः
लीसनालघुः गीतापिरुनूककरुवीतला॥ वृक्षरक्ष्माथहनीनूकासधूनालवत्तासताः॥ ॥ अथ रगासागुक्षः॥ ॥ दीक्षपत्र

स्वादूकं गुदूकं पदूयिहूले ॥ रुदनं कामला ॥ अरुमहकमिहनेयदूः ॥ ॥ अथ कसौदी गुधः ॥ ॥ काशमर्ददलेनू
 चीदूयैकाशविषामुनू ॥ मधूनेकरुवातघ्नपाचनेपाधु ॥ अधने ॥ विरामघनः पिरुहनेसतिकैअहिकैलघूः ॥ ॥
 अथ मथी गुधः ॥ ॥ मथिकादीपनीकयावद्धविगूकमिशुकदू ॥ गुल्मशूलानिलहना ॥ अथ मलानाशिनीयनाः
 ॥ ॥ अथ सारुस्य गुधः ॥ ॥ सारुपूष्याकदलित्तिग्यातिकैसा ॥ अथ वातनू ॥ नूचावस्मिहितानेयावद्धविगूक
 मिशुकदू ॥ ॥ अथ चवन गुधः ॥ ॥ ददूप्रपयैमइलेस्वादूवातकरायहै ॥ कधूकाशकमिशुकै ॥ अथ सारुस्य
 नूतिकैलघूः ॥ ॥ अथ सई ५ गुधः ॥ ॥ सईदस्यदलेनीकूदीपनीयाचनेकदू ॥ अथ मलानाशिनीयनाः ॥ गुल्म
 शूल ॥ अथ दनेहनू ॥ ॥ अथ पुनर्नवा गुधः ॥ ॥ पयैपोधुनवेनयुंतिकैनूकैकरायहै ॥ ॥ अथ मलानाशिनीयनाः
 सईनदूकीगनाशने ॥ ॥ अथ वासक गुधः ॥ ॥ वासकस्यदलेनकपिरुदूयविनाशने ॥ ॥ अथ काशकनदूदि

महकृष्णकलापहं॥ वातकृष्णकृष्णकृतिकैस्वाङ्कुरविशेषतः॥ ॥ अथ दवनयनागुणः॥ ॥ दमनीहनिपि कृष्णक
नरुष्णककृष्णमातु॥ सैग्रहीसीनलनिकादाहनूदागलालघुः॥ ॥ अथ रगहीगुणः॥ ॥ रगहीकाकृष्णमहाप्रकृष्णक
हनीलघुः॥ ॥ अथ गुडूचीपत्रगुणः॥ ॥ गुडूचीपत्रसाग्रीसीसर्वजनहनीलघुः॥ कषायैककृतिकैस्वाङ्कुराकैवसाः
यनै॥ वल्यमूकैवसैग्रहीहिन्यादाययनूपा॥ दाहप्रमहवातासन्कासलाकृष्णपाधुताः॥ ॥ अथ रीगस्यगुणः॥ ॥
रीगसाकैवसैग्रहीनिकैलघुकलापहं॥ तीक्ष्णैरुपि रूलेमाहमदवाग्वक्रिवर्द्धनै॥ ॥ अथ हिलमाविकाहनईच
निचनामातकुणः॥ ॥ हिलमावातुकृष्णप्रीरुदिनीकरुपिरुनू॥ ॥ अथ जीवन्मूकगुणः॥ ॥ जीवन्मूककृष्ण
दायघुः सकानावक्रिवर्द्धनः॥ ॥ अथ चक्षुकगुणः॥ ॥ दूरीवनकसाकैस्वाङ्कुरैकैकरुवातकृष्ण॥ स्वाङ्कुरैरुजः
नकैरुपिरुनू॥ ॥ अथ वदकनागुणः॥ ॥ समीनसाकैरुदिस्याल्लघुनिकैप्रिदायनू॥ ॥ अथ व

गु० न
३८

अथ सत्रीलघु सत्रीगुणः॥ ॥ स्वाइति पृष्ठभाके स्याद्दुर्दृष्टिनिवातली॥ कुडिपृष्ठभाके तु कुरुपिरुहने मनी॥ ॥
अथ सत्रीसंगुणः॥ ॥ स्वादूषं विदाल्लपाके तीर्क मूदा विनी॥ सार्धपैव कुरुविस्मृयै भाके दोषत्रया परं॥ गुनस्यै कटुके
नूके सकानलवसं पनी॥ ॥ अथ नां रुरु नां गुणः॥ ॥ तीर्क स्याद्राजिकाभाके वदु मूयै विदोषकन॥ ॥ रभास्यै
गुननूके वावकूषीरुनु जित्यनी॥ नाजकवके तु ग्रहिरभास्यया परं॥ लघुभास्यै विरभाषेद्यग्रहस्यै विकानिधं॥ ॥
अथ पूषभाका नगस्य गुणः॥ ॥ अगस्तिकसूरी नीतं वातुर्थकनिवातं॥ नकीधनाशनी प्राके पीनसरसः
आपिरुनू॥ सनिकै कटुपाके च कषायै वातली मनी॥ ॥ अथ कदलीपूषगुणः॥ ॥ कदल्यः कसूरी त्रिगुणः
धूने तु वनी गुनः॥ वातपिरुहने नीतं नकपिरुहयप्रधुन॥ ॥ अथ सीवलीपूषगुणः॥ ॥ शाल्मली कसूरी स्वाइ
नसपाकदिमेलघुः॥ कषायवातली ग्रहिकरुपिरुहप्रनूत्यली॥ प्रदने पितुषिदुःसाध्यं नाशयत्येव सविनी॥ ॥ अथ

माला
३८

रुलभाकानि॥ ॥**अथ** कोह नू गुप्ताः॥ ॥ कृष्णं वृंहं वृष्णीं गुप्तिरुपवातनम्॥ वलीपिरुपहं भीर्नमधर्मैकरु
कानकै॥ पकीनातिहिमं स्वाइसकानैदीपनैलघुः॥ बलिस्तुदिकनैवनावागहत्सर्वदीपनम्॥ ॥**अथ** कोह उ गुप्ताः
॥ ॥ कर्कनाग्रहिणीभीतावनकपिरुहनागुम्॥ पकोपिसामिजननीसकानारथमवातनम्॥ नसस्तुत्पामि
दाषध्राकनद्वद्विक्रुलघुः॥ ॥**अथ** कलिदा गुप्ताः॥ ॥ कालिंदेग्रहिद्विक्रुमुकदत्तीतलैलघुः॥ पकीगुप्तासाः
सुसकानैपिरुलेकरुवातजिम्॥ ॥**अथ** खनवृजा गुप्ताः॥ ॥ खर्जुं मृगुलीकृष्णैकासुगुदिकनैगुम्॥ स्निग्धं स्वाइ
ननैभीतैवृष्णीपिरुनिलापहं॥ नमृगुजासुमधूनैसकानैवनसाहवम्॥ नकपिरुकननप्रमृगुहृदुकनैपनै॥ ॥
अथ कर्कटीरुत गुप्ताः॥ ॥ कर्कटीभीतलावृकाग्रहिणीमधूनागुम्॥ नृयापिरुहनासासापकोकावद्विक्रिपिरुकुम्॥ ॥
अथ लघुषीनावृहसीना गुप्ताः॥ ॥ चपुसैलघुनीलेवनवैरुदृकमदाहजिम्॥ स्वाइपिरुपहंनिकैनकहृदुजिम्॥ ॥

गुण
३९

अथ कना गुणः॥ ॥ कादलो मधुवैशी नैरुले विष्टे रिपिरुक्ति॥ त्रिगुं गुन न स्वादु कन कय समी न किन॥ ॥ अथ
लेवलो आहलो आगुणः॥ ॥ मिष्टुं वीरुले रुई वषी पिडा परं गुनः॥ करुं प्रवि कृत्वा केषा गुष्टि विवर्द्धने॥
॥ अथ विविंदा गुणः॥ ॥ विविंदा वात पिडु ध्रा वल्यः परथा वृधि प्रदः॥ ॥ १॥ विरध अहि नः किं चि दुःखे र्पूनः पथील
नः॥ ॥ अथ रुडा स्वत रुडा गुणः॥ ॥ वृता के स्वादु नी कू खै कट्टा क म पि रु ले॥ कन वा न वला स प्री दी य नै शु क ले ल
घूः॥ न दाली करु पि रु प्री प की पि रु क र्ने गुनः॥ वृता के पि रु ले किं चि दे ग न य नि पा वि नै॥ करु म दी निला म प्री म स्य र्थे लः
घू दी य नै॥ न द व हि गु न त्रि ग्धं स नै ले ल व स न्ति नै॥ अथ नै र्ध न वृता के कू कू नी उ स मी म नै॥ न स्मा दी न गुं किं चि द
भं सु य न मी हि मी॥ ॥ अथ क न ला क न ली गुणः॥ ॥ कान व ले हि मी रु दि ल घु गि क म वा न ले॥ कन पि रु क रु म प्री
पा धु म ह कू मि रु न न॥ न रु णा को न व सी स्या दि णा या दी य नी ल घूः॥ ॥ अथ नै द न गुणः॥ ॥ म हा को णा न की स्त्रि

माला
३९

आसनापिरुनिलायहा ॥ ॥ अथगानगुणः ॥ ॥ राजकोशातकीभीतामधुनाकरुवातला ॥ पिरुघ्नीदीपनी ॥
सकनकाभरुमिप्रभुन ॥ ॥ अथसंविद्ययुगः ॥ ॥ पूरुसिंविमुमधुनानसबाकहिमागुनः ॥ वल्लादाहकनीः
प्रोकाः ॥ अथलवानपिरुजित ॥ कालासिंवीसमीनघ्नीगुर्व्यसकरुवातजित ॥ सुकागिसादकरुद्वल्लादविदावद्धविरुगुनः
॥ ॥ अथकेकरु ॥ अथकेकरुगुणः ॥ ॥ कपिककरुलवृषीमधुनैहसंगुनः ॥ स्निग्धंभीतीनिलहनेद्वद्वद्वि
नाभने ॥ ॥ अथसहिजनारुलगुणः ॥ ॥ उकंसिगुरुलैस्वादकषायैकरुपिरुकरु ॥ अलककरुद्वय ॥ अथसगुलम
द्वदीपनेपने ॥ ॥ अथपठनीतिकपनीगुणः ॥ ॥ यथालेपाचनेद्वदीवृषीलध्वनिदीपने ॥ स्निग्धंभीतीनिलहनेद्वद्वद्वि
मुकनदाषप्रयकमीन ॥ यथालयप्रैपिरुध्वनालेनस्यकरुपह ॥ मूलैविनचनेप्रोकरुलैदाषप्रयापह ॥ तद्वत्पठ
ल्यासिकायासूलादिकसूदाहने ॥ ॥ अथकीद्वनीगुणः ॥ ॥ विंवीरुलैस्वादभीतीगुनपिरुमवातजित ॥ रुकरुने

लखने वाग विवंधान का नकी ॥ अथ कका जगुताः ॥ कर्कट कारु लै कृष्ट हला सा न विना भर्त ॥ काणध्याः
 सदान हने कट्टा कच दीपनी ॥ अथ यं हदल गुताः ॥ श्रीमत्सूत्र कस्तिकी वावनी करु पिरु नरु ॥ लघुदाह
 हनः प्राका वाग साधन रक्षमनः ॥ अथ विरिक्त गुन ली ॥ तिचन रुताः ॥ विरिक्त मधुने नदी गुन पिरु कः
 राय है ॥ अनुराग विविदिवा लै चानिल कोपनी ॥ करु पिरु हने सन्धि पक्ष मूक गुपिरु लै ॥ अथ कको नगी गु
 ताः ॥ उडिका पुष्टिदा दृष्ट्या नूचा वक्रि प्रदालघुः ॥ हनि पिरु कर्मा शिक्त मिगुलम विषा मयान् ॥ अथ ई
 वनिरुल लण क गुताः ॥ उडम्वन रुलै वालै कषायै स्वादु भीतलै ॥ विवन्धा धान कृष्ट निन कपि रूत स गुन क् ॥
 अथ अवला गुताः ॥ हृषीकशी रुलै प्राकै विरशा घाट कपिरु जिन् ॥ विदाषण मनी पथं हन प्रैवन सायनी ॥ अथः
 कर्पा स गुताः ॥ कर्पा सरुल मयूकै कषायै मधुने गुनः ॥ वागरक्ष हने नूचै विरशा घटा स्थि वर्जिनी ॥ अथ प्रल

गुरुलुगुः॥ ॥ प्रवृत्तवातजिह्वल्यं कषायं करुणाशं नै॥ आसवातहर्त्रेति ग्रंथं नृचमूहं च पावने॥ ॥ अथ गंग
नीरुलुगुः॥ ॥ कषका नीरुलैतिकं कटुं कंठीयं नैलघुः॥ नूकाहं आसकाशं प्रकृतानिलकरूपहै॥ ॥ अथ ना
लसाकानितप्रकदलीमध्यदंतगुः॥ ॥ कदलीमध्यदंतुशोतलोवकपिहृदुः॥ यानि दाघप्रदं नरुद्रागमन
आग्निवर्द्धनै॥ ॥ अथ मूलकक्षालगुः॥ ॥ एवमूलकक्षालं तु विष्टैरिह करुका नकै॥ वातपिहृहर्त्रे नृचैः
सर्वं नृकुक्षधिकै॥ ॥ अथ सर्वपनालगुः॥ ॥ नीरुहं सर्वपं नालीवातश्च वक्ष्यते॥ कक्षुहं मिहर्त्रे
दं द्रुहं चैव नृचिकानकै॥ ॥ अथ वषकनलगुः॥ ॥ वरुका नीनः॥ एवमधुः कषायो तु विष्टैः॥ वातपिहृ
कनी नृकः कटुको न स पाकयः॥ ॥ अथ हउसंघात्रिगुः॥ ॥ अस्ति शृंगखलिका नूकाश्च मूलमधुना हि सा॥ अ
स्ति सीधानक

